नागफनी के जंगल में

हरियश राय

यशस्वी कथाकार हरियश राय की कृति 'नागफनी के जंगल में' गुजरात की हृदयभेदी घटनाओं के संदर्भ में लिखी गई है। उन्होंने गुजरात की सांप्रदायिकताग्रस्त स्थितियों का निर्मम वस्तुपरक विश्लेषण किया है और मार्मिक चित्रण भी। निर्मम वैज्ञानिक दृष्टि और ममतालु मानवीय करुणा का यह संयोग इस उपन्यास की रचनाधर्मिता का आधार है। प्रोफेसर पोथीवाला जैसे चरित्र का निर्माण या खोज तटस्थ किन्तु मानवीय संवेदना से समृद्ध लेखनी ही कर सकती है। प्रो. पोथीवाला ऐसे मुस्लिम देशभक्त हैं जिन्होंने अपनी मातृभूमि भारत एवं गुजरात के लिए धन एवं यश की वर्षा करने वाली अमेरिकी नागरिकता छोड़ दी। लेकिन इस देशभक्ति के बदले उन्मादग्रस्त मूर्ख सांप्रदायिक लोगों ने उनका घर तक जला दिया। उपन्यास को पढ़कर मैं इस बात से विशेष संतुष्ट हुआ कि प्रो. पोथीवाला के रूप में लेखक ने एक विधेयात्मक चरित्र का निर्माण किया है— वे अपने ही देश में निर्वासित होते हुए भी चुप नहीं बैठते। असहाय होकर भी सक्रिय रहते हैं। सर्जनात्मक साहित्य में ऐसी निर्मिति ऐतिहासिक आवश्यकता की पूर्ति करती है जिसकी ओर समकालीन रचनाकारों का ध्यान कम जाता है।

— *विश्वनाथ त्रिपाठी*

प्रिय भाई अग्निशेखर को सादर

हरियश राय

नागफनी के जंगल में

नागफनी के जंगल में

हरियश राय

आधार प्रकाशन
पंचकूला (हरियाणा)

ISBN : 81-7675-108-1

मूल्य	:	150 रुपये
सर्वाधिकार	:	लेखक
प्रथम संस्करण	:	2004
प्रकाशक	:	आधार प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड एस.सी.एफ. 267, सेक्टर-16 पंचकूला-134 113 (हरियाणा)
आवरण	:	उमाशंकर शर्मा
लेज़र टाईपसेटिंग	:	आधार ग्राफ़िक्स, पंचकूला (हरियाणा)
मुद्रक	:	बी.के. आफसेट, नवीन शाहदरा, दिल्ली

NAAGPHANI KE JANGLE MAIN (Novel)
by Hariyash Rai Price : Rs 150.00

अजेय कुमार के लिए

मुझे तज़ुर्बा नहीं है लेकिन लगी पते की बात,
होगी जीत उजाले की ही लाख बुरा हो दौर।

— *सुल्तान अहमद*

1

निलेश का पत्र पाकर विपुल सन्न रह गया. अपने पत्र में उसने विपुल को गुजरात और बड़ौदा के बारे में बहुत दुख से लिखा था. उसने आहत होकर लिखा था कि इस हुल्लड़ में पूरा गुजरात जल गया है. गुजरात के विश्वविद्यालय, गुजरात के बाज़ार, गुजरात का व्यवसाय सब चौपट हो गया है. अपने पत्र में उसने यह भी लिखा था कि इस हुल्लड़ में गुजरात के सूफ़ी संतों की क़ब्रों को उखाड़ फेंका गया, मुसलमानों की बस्तियों को जला दिया गया, उनका सामूहिक क़त्लेआम किया गया, उनकी स्त्रियों को सरेआम अपमानित किया गया, पूरे गुजरात में चुन चुन कर उनके कारख़ानों को, उनकी दुकानों को लूटा गया, और तो और शहर के सम्मानित मुसलमानों को भी नहीं छोड़ा गया. हमारी यूनिवर्सिटी के प्रोफ़ेसर के.एम. पोथीवाला का घर बुरी तरह जला दिया गया था. वे किसी तरह पड़ोसियों की मदद से अपनी और अपनी बेटी की जान बचा सके. इन लोगों के हौसले इतने बुलंद हो गए हैं. गुजरात में यह शायद पहली बार इतने व्यापक पैमाने पर हिंसा हुई है और इस हिंसा से पूरे गुजरात की शान मिट्टी में मिल गई. गुजरात का गौरव, जिस पर गुजरातियों को बहुत फ़ख़्र है, पूरी तरह ख़त्म हो गया. हिंसा, लूटपाट, भय, दहशत और तनाव ने पूरे गुजरात को ग्रस लिया है. पहली बार यूनिवर्सिटी के किसी प्रोफ़ेसर को इस तरह अपमानित होकर अपना घर छोड़ना पड़ा. तुम तो जानते हो कि मैं उन्हें बहुत मानता हूं. मेरा उनसे पारिवारिक रिश्ता सा है.

पत्र पढ़कर विपुल को लगा कि शिराओं में ख़ून ने दौड़ना बंद कर दिया है. मस्तिष्क सुन्न सा हो गया है. निलेश की मनःस्थिति का अंदाज़ा इस पत्र से लगाया जा सकता था. हालांकि कई बार विपुल उससे कह चुका था कि गुजरात वैसा नहीं है जैसा तुम्हें दिखाई देता है. अंदर ही अंदर हिंसा और घृणा का लावा जल रहा है और वह कभी भी बाहर आ सकता है.

लेकिन तब निलेश को यक़ीन नहीं होता था. उसके लिए गुजरात एक बेहतर राज्य था. उत्तर भारत के किसी भी राज्य से तुलना कर वह गुजरात को बेहतर राज्य के रूप में देखता था. इसके लिए उसके पास अपने तर्क थे, अपने विश्वास थे.

पर आज विपुल को उसके पत्र से लग रहा था कि उसके विश्वास हिल से गए थे. पोथीवाला को वह भी अच्छी तरह जानता था. कॉलेज में उन्हें फ़िज़िक्स पढ़ाते थे. बहुत चाहते थे उन लोगों को वे. विपुल को, निलेश को, अविनाश को. कॉलेज के दिनों में विपुल, अविनाश और निलेश के साथ अक्सर उनके घर आया जाया करता था. उनसे घंटों बातें हुआ करती थीं. उनसे एक आत्मीयता थी उनकी. एक प्रोग्रेसिव मुसलमान के रूप में उनकी इमेज थी. वे न तो रोज़े रखते थे और न ही नमाज़ पढ़ते थे. न ही उनके घर की महिलाएं बुरका ओढ़ती थीं. जहां तक विपुल को याद आता था हमेशा वे धार्मिक कठमुल्लेपन के ख़िलाफ़ अख़बारों में लिखते थे.

कोई भी मौक़ा हो, वे निर्भीकता से अपनी बात कहने से नहीं चूकते थे. चाहे अयोध्या का मामला हो या शाहबानो को केस हो या मुसलमानों को विशेष रियायतें देने की बात हो या फिर सलमान रश्दी का प्रसंग हो, वे दृढ़ता से एक स्टैंड लेते थे. अपनी राय को खुलकर वे अख़बारों में, आम जलसों में, यूनिवर्सिटी की बैठकों में रखते थे. मुसलमानों को शिक्षित करने में ख़ासकर मुस्लिम लड़कियों की शिक्षा के बारे में वे हमेशा काम करते थे. जहां तक विपुल को पता था कि अपने शुरुआती दिनों में मुसलमानों की बस्तियों में जाकर वे मुसलमान लड़कों और लड़कियों को इकट्ठा करके होमवर्क कराते थे. उनके मां बाप को समझाते थे कि मुसलमानों की तरक्की लड़कियों की पढ़ाई लिखाई पर ही निर्भर है. वे बार बार कहते थे कि मुसलमानों को बड़े परिवार से बाहर आकर शिक्षा को अपनाना चाहिए. उन्होंने अपनी एक संस्था भी बनाई थी– विमर्श नाम की. उस संस्था के सहारे वे एक तरफ़ कठमुल्लेपन का विरोध कर रहे थे और दूसरी तरफ़ मुसलमानों के उत्थान और उनकी शिक्षा के लिए कुछ काम भी कर रहे थे.

आज उनके ऊपर हमले की ख़बर सुनकर विपुल बेचैन सा हो उठा. हालांकि पिछले दो दिनों से अख़बारों और टेलीविज़न पर इस तरह की ख़बरें आ रहीं थीं. एक से एक ख़ौफ़नाक और दिल दहला देने वाली लेकिन उसे अंदाज़ा नहीं था कि इन ख़ौफ़नाक और दिल दहला देने वाली ख़बरों में पोथीवाला की भी ख़बर होगी. वे भी एक ख़बर बन जाएंगे.

2

छह फीट से भी अधिक ऊंचा क़द. तांबे जैसा रंग, चौड़ा माथा. धवल होते केश. अनुभव और ज्ञान की भट्‌टी में तपी भावपूर्ण आंखें. नुकीली नाक. चेहरे पर आत्मीयता और खुद्दारी की परत. अतिशय ज्ञानवान और अत्यधिक विनम्र. बेहद स्नेही. बेहद भावुक. चट्‌टानी व्यक्तित्व, समुद्र की तरह आवेगों से भरी एक शख़्सियत, बातचीत में उर्दू के शब्दों का प्रयोग करते. बेहद सुंदर छोटा-सा घर. छोटी-सी बग़िया जिसमें शाम या अल्लसुबह बैठकर वे साइंस की पत्रिकाएं पढ़ते, छात्रों से साथ घंटों बातचीत करते. दुनिया जहान के बारे में, देश में बढ़ती फ़िरक़ापरस्ती के बारे में. देश की संस्कृति के बारे में. सांस्कृतिक हमलों के बारे में. इस बग़िया में बैठकर वे अपने छात्रों को बताते कि कैसे दुनिया में फ़ासीवाद सिर उठा रहा है, कैसे इस फ़ासीवाद का विरोध करने के लिए प्रगतिशील ताक़तों को सक्रिय होना होगा. फ़ासीवाद को दूर करने के लिए कैसे लोगों को लामबंद करना होगा. कैसे घर घर में शिक्षा की लौ लगानी होगी. कैसे मुसलमानों को शिक्षित करना होगा. अपनी बैठकों में अपने छात्रों को सांप्रदायिक शक्तियों के ख़तरों के बारे में आगाह करते. उन्हें बताते कि ये सांप्रदायिक शक्तियां पूरे देश में और ख़ासकर गुजरात में किस तरह लोगों में घृणा का बीज बो रही हैं. किस तरह शिक्षा संस्थानों को अपने कब्जे में ले रही हैं, किस तरह इतिहास को बदल रही हैं, किस तरह लोगों को अपने साथ रखने में सक्षम हो रही हैं. साथ ही अपनी बातचीत में इनके ख़िलाफ़ प्रतिरोध की कोई भी आवाज़ न होने पर भी खिन्नता व्यक्त करते थे. चारों तरफ़ इनके ख़िलाफ़ फैले मौन और सन्नाटे का ही ज़िक्र करते और अक्सर कहा करते थे कि इस मौन की क़ीमत पूरे देश को चुकानी पड़ेगी.

पोथीवाला विपुल, निलेश और अविनाश के लिए आकर्षण का केंद्र रहे इसलिए नहीं कि वे इन तीनों को बहुत चाहते थे बल्कि इसलिए भी कि उनके पढ़ाने का

तरीक़ा अत्यंत स्नेह से भरा था. आत्मीय वे [illegible] थे. ठहाके लगाकर इन लोगों के साथ हंसते थे जैसे कोई अपने हमजोली के साथ हंसता हो. उनका आत्मीय स्वभाव हमेशा इन तीनों को उनकी ओर आकर्षित करता रहा.

उनके जीने का ढंग शुरू से ही अलग क़िस्म का था. यूनिवर्सिटी में उन्होंने मुसलिम कठमुल्लेपन से लड़ने के लिए एक संस्था बनाई थी 'विमर्श' नाम की. इस संस्था में वे कुछ विद्यार्थियों को बुलाते थे और उनसे इस देश में सांप्रदायिकता के बारे में बातचीत करते. सांप्रदायिकता के ख़तरों के बारे में आगाह करते थे. उनमें एक वैज्ञानिक सोच पैदा करते. आए दिन इस संस्था की ओर से वे कोई न कोई सेमिनार करते. देश के जाने माने लोगों को वे इस सेमिनार में बुलाते. धर्म, सांप्रदायिकता, शिक्षा जैसे विषयों पर वे भाषण रखते. वे नए नए यूनिवर्सिटी के अध्यापकों और छात्रों को, शहर के नौजवान पत्रकारों को, कुछ करने का हौंसला रखने वाले स्वयंसेवी संगठनों को अपनी इस संस्था से जोड़ते. अपनी इस संस्था के माध्यम से वे प्रासंगिक मुद्दों पर अपना विरोध दर्ज करते. विद्यार्थियों को और अपने साथियों को हमेशा वैज्ञानिकता का पाठ पढ़ाते. अख़बारों में फ़िरकापरस्त ताक़तों के ख़िलाफ़ लगातार लेख लिखते. हर मुद्दे पर अपनी राय बेबाक ढंग से कहते अख़बार में संपादक के नाम पत्र लिखकर, लेख लिखकर.

उनके इन कामों से शहर के लोग उन्हें जानने लगे थे. यूनिवर्सिटी के बाहर भी उनकी एक पहचान बन चुकी थी. अपनी यूनिवर्सिटी में सांप्रदायकिता के ख़िलाफ़ लड़ने वाले एक अध्यापक के रूप में उनकी इमेज बनी थी. यूनिवर्सिटी के दूसरे अध्यापक भी उनकी बातों और उनके विचारों से सहमत थे. वे भी बढ़ती सांप्रदायिकता के ख़िलाफ़ चिंता व्यक्त करते. स्टाफ़ रूम में उन पर बहसें करते थे. लेकिन कभी अपनी राय को सार्वजनिक नहीं करते. जब कभी भी पोथीवाला उनसे अपनी राय को 'विमर्श' में तमाम लोगों के सामने रखने के लिए कहते तो वे लोग घबरा जाते थे. कभी अपनी राय को किसी मंच से ज़ाहिर नहीं करते थे. इसमें उन्हें ख़तरा लगता. अपनी राय को सार्वजनिक करने से एक तो वे यूनिवर्सिटी में और इस शहर में एक्सपोज हो सकते थे. इसलिए वे लोग चुप रहते.

बाद में बहुत सारे लोग उनके साथ जुड़ने लगे तो उन्होंने अपनी संस्था विमर्श को 'बड़ौदा शांति अभियान' का नाम दे दिया और इस संस्था के सहारे पोथीवाला सांप्रदायिक संगठनों के ख़िलाफ़ लोहा ले रहे थे. अपने चंद साथियों के साथ. अपने कुछ छात्रों के साथ. अपनी सोच के कुछ पत्रकारों के साथ. अपने कुछ अध्यापकों के साथ. अपनी संस्था के बैनर के तले अपने इन साथियों के साथ धरना देते, जुलूस निकालते और हर मौक़े पर सांप्रदायिक शक्तियों का विरोध करते. कई बार मुसलमानों के हक़ के लिए जुलूस निकाल चुके थे. कई बार वे गिरफ़्तार भी

हो चुके थे और कई बार उन्हें अपनी हरकतों से बाज़ आने की धमकियां भी मिल चुकी थीं. लेकिन न तो उन्होंने कभी इन धमकियों की परवाह की और न ही कभी यूनिवर्सिटी से मिलने वाली सुविधाओं की चिंता की. मुसलमान देश की मुख्यधारा में शामिल हों. वे सरकार के रहमोकरम पर नहीं, अपने बलबूते पर आगे आएं, यही उनका मिशन था. यही उनका सपना था.

अपने 'बड़ौदा शांति अभियान' में उन्होंने महिलाओं की संस्थाओं, ट्रेड यूनियनों, दलितों और अल्पसंख्यकों के समूहों को शामिल किया और सांप्रदायिक ताक़तों का मुक़ाबला करने के लिए अपने आप को पूरी तरह तैयार कर लिया. अपने इस संगठन के माध्यम से वे मुसलमानों को शिक्षित करने की ज़बरदस्त वकालत करते. उनकी कॉलोनियों और बस्तियों में जाकर उनके विकास और उनकी शिक्षा को लेकर छोटी छोटी सभाएं करते. इन बस्तियों के लोग उनके साथ आते. उनकी बात ग़ौर से सुनते. उनके इन कामों के कारण ही शहर का हर मुसलमान उन्हें आदर और सम्मान से याद करता. हालांकि इस आदर और सम्मान की उन्हें भारी क़ीमत चुकानी पड़ी थी. पहले भी दो बार उनका घर लूटा जा चुका था.

पर इस बार का हमला बहुत भयानक था.

जैसा कि निलेश ने अपने पत्र में लिखा था.

उन्होंने उन्नीस सौ बहत्तर में नासा छोड़ा था. यह वो जमाना था जब अमेरिका में पढ़े लिखे भारतीयों की ज़रूरत थी. जब अमेरिका में भारतीय इंजीनियरों की ज़रूरत थी. जब भारतीयों की प्रतिभा का लोहा पूरा अमेरिकी समाज मानता था. पी.एच.डी. करने के लिए गए थे अमेरिका. पर वहां रह नहीं सके. वापस आ गए थे अपने देश.

वे अमेरिका से यहां आए थे. वे कब अमेरिका गए. कब वापस आए, क्यों वापस आए. इसके बारे में किसी को कुछ पता नहीं था.

"पर आपने अमेरिका क्यों छोड़ा." एक दिन जब वे फ़ुर्सत में थे और अच्छे मूड में थे तो विपुल ने बहुत हिम्मत करने उनसे पूछा था.

इस सवाल से वे चौंक गए थे. उन्हें उम्मीद नहीं थी कि विपुल उनसे ऐसा सवाल भी कर सकता था. उनका यह अतीत भी जान सकता था.

यह सवाल कई बार विपुल, निलेश और अविनाश के मन में उभरा था. पर कोई पूछने की हिम्मत नहीं करता था. बहुत व्यक्तिगत सवाल था यह. वे लोग तमाम तरह की अटकलें लगाते थे. कोई कहता कि हो सकता है कि अमेरिका उन्हें रास न आया हो. कोई कहता हो सकता है वहां इन्हें परेशान किया जाता हो. कोई कहता कि हो सकता है कि नासा वालों ने ही इन्हें निकाल दिया हो. इसी तरह

की कुछ कुछ [illegible] भी किया करते थे

पर सच क्या था, यह किसी को पता नहीं था.

उस दिन विपुल का यह सवाल सुनकर बहुत स्नेह से उन्होंने उन तीनों की तरफ़ देखा था और हलके से मुस्करा दिए थे.

वे लोग भी उनकी तरफ़ देख कर मुस्करा दिए थे. कोई कुछ बोला नहीं था. पर सबके मन में एक उत्सुकता सी थी.

"क्यों जानना चाहते हो तुम लोग यह." उन्होंने आत्मीयता से पूछा था.

"बस यूं ही." विपुल ने भोलेपन से जवाब दिया था और अपनी उत्कंठा को दबा लिया था.

विपुल का जवाब सुनकर वे चुप हो गए थे.

कमरे में थोड़ी देर तक मौन छाया रहा. वे चुपचाप अपने कुर्ते के बटन को हिलाते रहे. खिड़की के बाहर अपनी बग़िया में अपने लगाए पौधों को देखने लगे. गोया अतीत में से कुछ ढूंढ़ कर लाने की तैयारी कर रहे हों. फिर कुछ याद करते हुए विपुल की ओर देखकर उन्होंने धीरे से कहा, "सन्न उन्नीस सौ बहत्तर की बात है. मैं शिकागो में रहता था. एक दिन शिकागो के किसी चर्च वालों ने मुझे अपने यहां बुलाया था. कोई सेमिनार था शायद ईसा मसीह पर. मैंने भी अपनी बात रखी थी. बहुत सारे लोग थे. अमेकिरन, भारतीय, पाकिस्तानी और कई देशों से आए हुए थे वे लोग. जब मेरा भाषण ख़त्म हो गया तो चर्च की एक नन ने मुझसे एक सवाल पूछा. उस सवाल ने मेरी ज़िंदगी बदल दी." कहकर वे चुप हो गए थे और बाहर खिड़की की तरफ़ देखने लगे.

विपुल, निलेश और अविनाश भी एक दूसरे की ओर देखने लगे थे. कुछ लमहों बाद निलेश ने पूछा था, "क्या सवाल था वह."

उन लोगों की उत्सुकता बढ़ गई थी.

"उसने पूछा था डोंट यू थिंक यू शुड गो बैक टु इंडिया. योर कंट्री नीड्स यू और यह सवाल सार्वजनिक रूप से पूछा गया."

"फिर.... क्या जवाब दिया आपने." अविनाश ने पूछा था.

उन्होंने इन तीनों की उत्सुकता को पहचान लिया था. कहने लगे, "मैं भीतर से हिल गया था इस सवाल से."

"क्यों..... ऐसा क्या था इस सवाल में." विपुल ने कहा था.

"बहुत कुछ था इस सवाल में. इस सवाल ने मेरे सारे मूल्यों और मान्यताओं को हिला दिया था. मैंने कभी पहले इस रूप में नहीं सोचा था."

कहकर वे चुप हो गए थे. फिर कहने लगे थे, "काफ़ी दिनों तक इस सवाल ने मुझे परेशान किया था. बार बार यह सवाल मेरे ज़ेहन में छा जाता था. मुझे हांट

करता था. मैं अपने देश वापस जाऊं या कि नहीं जाऊं और जाऊं तो वहां जाकर आख़िर क्या करूंगा. सोते जागते उठते बैठते हर वक़्त यह सवाल मेरा पीछा करता और मुझे परेशान करता. यह सच था कि हमारे देश को मुस्लिम अध्यापकों और वैज्ञानिक सोच रखने वाले और कुछ करने का हौंसला रखने वाले अध्यापकों की ज़्यादा ज़रूरत है. मैं यही सोचता कि यदि मैं वापस चला गया तो लोग मुझे स्वीकार करेंगे या नहीं. मैं करूंगा क्या वहां हिंदुस्तान में रहकर. मैं दिन रात परेशान रहता इस सवाल के कारण. और आख़िर एक दिन मैंने फ़ैसला कर लिंया था.''

''क्या.... क्या फ़ैसला किया था आपने.'' विपुल ने पूछा

''कि मुझे वापस हिंदुस्तान जाना है. अपने देश के लिए. अपने देश के लोगों के लिए. अपने देश के मुसलमानों के लिए. वहां मेरी ज़रूरत है.'' उन्होंने मुस्कराते हुए बताया था.

विपुल को हैरानी हुई उनकी यह दास्तान सुनकर. लोग विदेश में जाकर नौकरी करने के लिए क्या क्या नहीं करते. उनके जीवन का एक ही सपना होता है कि उन्हें किसी तरह विदेश में और ख़ासकर अमेरिका में कोई एक नौकरी मिल जाए. वह नौकरी कैसी भी हो इससे उन्हें फ़र्क़ नहीं पड़ता. बस नौकरी विदेश में होनी चाहिए और पोथीवाला अपनी जमी जमाई नौकरी को केवल एक नन के कहने से छोड़ने के लिए तैयार हो गए.

एक सहज सा सवाल उसके मन में आया था और उसने पूछ भी लिया था कि ''एक नन के कहने से आपने इतना बड़ा फ़ैसला कर लिया था अमेरिका छोड़ने का.''

''हां, केवल एक नन के कहने से. उस नन ने मुझे भीतर तक हिला दिया था. पता नहीं क्यों मुझे लगा कि नन का सवाल एकदम ठीक है. उसने एकदम ठीक कहा था कि मेरे देश को मेरी ज़रूरत है. नन के उस सवाल ने मेरी ज़िंदगी बदल दी. मैं वापस हिंदुस्तान आ गया.'' पोथीवाला ने दृढ़ता से जवाब दिया.

''और आपकी पत्नी... वह भी आपके साथ आई.'' निलेश ने जानना चाहा.

''हां वह भी मेरे साथ आ गई.''

''उन्होंने कोई ऐतराज़ नहीं किया आपके इस फ़ैसले का. जीवन का बहुत बड़ा फ़ैसला था यह. स्वीकार किया उन्होंने आपके इस फ़ैसले को.'' विपुल ने पूछा.

उनके ये सवाल सुनक़र पोथीवाला ने एक लंबी सांस ली गोया अपने से ही

कोई सवाल पूछ रहे हों. गोया अपने अंतर्मन की गहराइयों में उतर कर अपने आप को सही साबित करवा रहे हों. गोया अपने फ़ैसले पर अपनी पत्नी, अपने परिवार और समाज की स्वीकृति की मोहर लगवा रहे हों.

किसी अतीत में खोते हुए उन्होंने धीमे स्वर में कहा, "नहीं... मेरी पत्नी ने नहीं स्वीकार किया मेरे इस फ़ैसले को. वह तो काफ़ी परेशान हो गई थी मेरे इस फ़ैसले से. उसे उम्मीद नहीं थी कि इस मुक़ाम पर आकर मैं अपनी ज़िंदगी का इतना बड़ा फ़ैसला ले लूंगा और वापस हिंदुस्तान जाने के बारे में सोचूंगा और वह भी केवल एक नन के कहने से, जिस नन को मैं जानता तक नहीं. जिस नन से मेरा कभी वास्ता नहीं पड़ा." उन्होंने बताया था.

"क्या कहना था उनका." विपुल ने पूछा था.

"उसका यही कहना था कि हम यहां वापस जाने के लिए नहीं आए हैं. कुछ करने के लिए आए हैं. वापस चले जाएंगे तो हम लोगों के कैरियर का क्या होगा. बच्चों के भविष्य का क्या होगा. उनकी पढ़ाई लिखाई का क्या होगा. हम लोग हिंदुस्तान जाकर क्या करेंगे. वहां कदम कदम पर अपमान है, उपेक्षा है, प्रताड़ना है. जिस समाज को हम छोड़ आए थे, वह वापस उस समाज में जाने को तैयार नहीं थी. उसमें बहुत रोष था. ग़ुस्सा था मेरे इस फ़ैसले को लेकर." कहते कहते उनके चेहरे पर विषाद सा छा गया था.

"फिर....... " विपुल ने जानना चाहा.

"फिर क्या..... मैंने उसे बहुत समझाया था कि हिंदुस्तान अपना देश है. वहां मेरी ज़रूरत है. वहां न्यूकलर फ़िज़िक्स पढ़ाने वाले अध्यापकों की ज़रूरत है. हम लोग वहां रहकर अपने समाज के लिए कुछ कर सकते हैं. मुसलमानों की तरक्की के लिए कुछ कर सकते हैं. पर उसे मेरे तर्क स्वीकार्य नहीं थे." उन्होंने बताया था.

"क्या कहना था उनका." अविनाश ने पूछा था.

"उसका कुछ कहना नहीं था. बस एक ग़ुस्सा था उसके मन में. वह बार बार मुझसे यही सवाल करती रही कि किसने कहा आपको कि वहां आपकी ज़रूरत है. किसने कहा कि वहां के मुसलमानों को आपकी ज़रूरत है. केवल एक नन के कहने से आप मानने लगे कि आपकी ज़रूरत वहां है. क्या लोग आपका वहां इंतज़ार कर रहे हैं. या आपके लिए फूलों की माला लिए खड़े हैं. या पलक पांवड़े बिछाए बैठे हैं आपके लिए. उसके मन में बहुत ग़ुस्सा था.

पर मेरा यही तर्क था कि हमारे देश को विज्ञान के अध्यापकों की ज़रूरत है. जो ज्ञान मैंने यहां रहकर हासिल किया उसका फ़ायदा हमारे देश को मिलना चाहिए. मैंने उसे समझाने की कोशिश की थी पर वह नहीं मानी बल्कि उसने एक

बड़ा सवाल मेरे सामने रख दिया था.'' कहते कहते वे रुक से गए.

''कौन सा सवाल.'' अविनाश ने जानना चाहा.

''कि बदले में वह देश मुझे क्या देगा. मुझे क्या मिलेगा वहां जाकर.''

''फिर. क्या जवाब दिया आपने उन्हें'' निलेश ने पूछा था.

''उसके इस सवाल का कोई जवाब मेरे पास नहीं था. पर मैंने भी फ़ैसला कर लिया था वापस हिंदुस्तान आने का. मैंने उसे समझाने की बहुत कोशिश की. उसके सामने अनेक तर्क दिए लेकिन उसने मेरे तर्कों को स्वीकार नहीं किया. पर मुझे मुझे बार बार लगता रहा कि यहां मेरी ज़रूरत है और अंततः मैं यहां आ गया.'' उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा.

कमरे में थोड़ी देर तक मौन छाया रहा.

''यहां आकर उन्होंने स्वीकार किया आपके इस फ़ैसले को.'' विपुल ने फिर पूछा.

''नहीं...... यहां आकर भी उसनें मेरे इस फ़ैसले को नहीं स्वीकार किया. उसे इसका बहुत दुख था. वह मेरे फ़ैसले से बहुत नाराज़ थी. पर मेरे साथ उसने तकलीफ़ें बहुत सहीं. मेरा विरोध भी करती रही लेकिन कभी अलग होने की बात नहीं की'' उन्होंने बताया था.

''यह बहुत बड़ी बात थी.'' अविनाश ने कहा था

''हां बहुत बड़ी बात..... उसने यही कहा वैसे मैं आपके साथ रहूंगी. सुख दुख में आपका साथ दूंगी लेकिन आपका यह फ़ैसला ठीक नहीं है. उसने कुछ दिनों तक मुझसे बोलना बंद कर दिया. एकदम चुप सी हो गई....'' वे बताते रहे अपनी कहानी.

''यहां आने पर क्या बाक़ी लोगों ने आपको स्वीकार कर लिया. आपके इस फ़ैसले को.'' विपुल ने पूछा था.

''नहीं.... किसी ने भी स्वीकार नहीं किया मेरे इस फ़ैसले को. सब लोगों ने मुझे अलग सा कर दिया.'' उन्होंने बताया था.

''क्या कहा सब लोगों ने.''

''सब लोगों ने मेरा ख़ूब विरोध किया. मैं जब यहां वापस आया तो मेरे ख़ानदान के सभी लोग मेरे ख़िलाफ़ हो गए. मेरे वालिद ने तो अपना सिर पीट लिया. कहने लगे हमारे परिवार में एक ही लड़का पढ़ाई में आगे आया था. अमेरिका में रहकर हमारे लिए बहुत कुछ कर सकता था पर यहां चला आया. हमारे सारे सपने मिट्टी में मिल गए. पत्नी पहले से ही नाराज़ थी. पिता और नाराज़ हो गए.''

''आपने कैसे समझाया उन्हें.'' विपुल ने पूछा था.

"मैंने उन्हें समझाने की कोशिश की पर वे नहीं समझे. मेरी बात उनकी समझ

में नहीं आ रही थी. भला नन के कहने से भी कोई अपनी अमेरिका में जमी जमाई नौकरी छोड़ता है. कोई इस तरह अपने देश वापस आता है भटकने के लिए. कहने लगे भला आदर्शवाद के सहारे ज़िंदगी काटी जा सकती है.

"मैंने उन्हें बताया था कि केवल आदर्शवाद ही नहीं है. इस देश को मेरी ज़रूरत है. इस देश को पढ़े लिखे मुसलमानों की ज़रूरत है. यहां रहकर मुसलमानों के लिए कुछ किया जा सकता है. उनकी शिक्षा के लिए, उनके विकास के लिए. मेरी बातें सुनकर वे बहुत नाराज़ हो गए थे. कहने लगे थे कि पहले लोग क्या कम हैं जो अब मुसलमानों के लिए तुम करोगे.

"नहीं पहले लोग कम नहीं हैं लेकिन अभी भी और लोगों की ज़रूरत है. मैंने उन्हें समझाने की कोशिश की लेकिन उन्हें भी मेरी बात समझ में नहीं आई. वे बहुत नाराज से थे मुझ पर गोया यहां वापस आकर मैंने कोई भयानक गुनाह कर दिया हो."

"फिर...." अविनाश ने पूछा.

"धीरे धीरे उनका ग़ुस्सा भी ठंडा हो गया. पर शुरू शुरू में मेरा हर काम उन्हें नागवार गुज़रता था. बात बात पर मेरी उनसे अनबन होती रही थी. धीरे धीरे उन्होंने इस हक़ीक़त को स्वीकार कर लिया था. मेरे वापस हिंदुस्तान आने पर उन्हें अपने रिश्तेदारों के सामने मुंह की खानी पड़ी. हमारे रिश्तेदार मेरे इस फ़ैसले को लेकर उन्हें काफ़ी अपमानित भी करते रहते थे. ज्यादातर रिश्तेदारों ने हमारे साथ मेलमिलाप भी बंद कर दिया. सिर्फ़ मेरी अम्मां ने मेरा साथ दिया था. उन्होंने यही कहा था जो ठीक लगे वही करो. मेरे काम में वे मेरी काफ़ी सहायता भी करती थीं."

"यहां आने पर आपके मन में बिज़नेस करने का ख़्याल नहीं आया. आपके पिता की दुकान थी." विपुल की जिज्ञासा बढ़ती जा रही थी.

"नहीं बिज़नेस करने का ख़्याल तो मेरे मन में नहीं आया. हालांकि मेरे पिता की बहुत बड़ी दुकान थी. कुछ मूल्यों और सपनों को लेकर, एक मिशन लेकर मैं यू.एस.ए. से वापस आया था."

"कौन सा मिशन." विपुल ने पूछा था.

"यहां जब मैं आया तो मुझे लगा कि मुझे मुसलमानों के लिए कुछ करना चाहिए. उनकी शिक्षा के बारे में. उनके रहन सहन के बारे में. उनकी हालातों को सुधारने के बारे में. उनकी सोच के दायरे को बढ़ाने के बारे में. उन्हें अपने संकीर्ण समाज से बाहर निकालने के बारे में. उनके माली हालातों को सुधारने के बारे में. मुस्लिम लड़के लड़कियां शिक्षा से बेहद दूर थे. उन्होंने अपने कुछ सपने बताए

थे.''

"कैसे किया आपने अपना काम." अविनाश ने जानना चाहा था

"शुरू में मैंने यहां आकर यूनिवर्सिटी के कुछ छात्रों को लेकर एक संस्था बनाई विमर्श नाम की. बहुत सारे लोग मेरे साथ आए. उस संस्था के माध्यम से हम लोगों ने बहुत काम किया. शहर के पढ़े लिखे मुसलमानों को इकट्ठा किया. उन्हें समझाने की कोशिश की कि मुसलमानों की शिक्षा से मुसलमानों का भला हो सकता था. हमने अपनी कोशिशों से सरकार पर दबाव डालकर मुस्लिम लड़कियों के अलग स्कूल यहां खुलवाए. हमारे लोग मुसलमानों के घर घर जाकर अपनी लड़कियों को इन स्कूलों में भेजने के लिए कहते. दो साल में यह स्कूल ठीक ठाक चलने लगा. मुसलमानों को धीरे धीरे समझ में आ रहा था.''

"और आपकी पत्नी... उन्होंने आपका साथ दिया." विपुल ने पूछा.

"हां इस मामले में उसने लगातार मेरा साथ दिया. वह एक स्कूल में पढ़ाती थी. मौक़ा मिलते ही वह स्कूली बच्चों को धर्म के ख़तरों के ख़िलाफ़ आगाह करती थी. मेरे हर काम में वह मदद करती थी. जुलूस और धरने में हमेशा मेरे साथ रहती थी. मेरा हौसला बढ़ाती थी. हालांकि मेरे वापस हिंदुस्तान आने के फ़ैसले को उसने नहीं माना लेकिन बाक़ी हर फ़ैसले के साथ वह खड़ी रही. वे यही कहती रही कि जो करो वह ठीक है. इससे मेरी हिम्मत रही. उसके मन में मेरे प्रति विरोध था लेकिन कभी मुझे छोड़ने की बात उसके ज़ेहन में नहीं आई. उसने हमेशा मेरा साथ दिया. यह बहुत बड़ी बात थी. वैचारिक स्तर पर उसने मेरा विरोध किया लेकिन भावनात्मक स्तर पर वह मेरे साथ ही रही. कभी अपने विरोध को उसने सार्वजनिक रूप से सामने रहीं रखा. कभी अपने किसी रिश्तेदार से विरोध के बारे में नहीं बताया. कभी बच्चों से अपनी असहमति का ज़िक्र नहीं किया. उसे हमेशा यही लगता रहा कि मैं मुसलमानों के विकास के लिए कुछ कर रहा हूं और शायद इसलिए उसने हमेशा मेरा साथ दिया." कहकर वे चुप हो गए थे.

"आपके घर पर होने वाले बार बार हमलों से वे आहत तो बहुत हो गई होंगी." अविनाश ने जानना चाहा.

"हां बार बार के हमलों से वह बहुत परेशान थी. जब हमारे घर में दूसरी बार हमला हुआ, जब मैं दलितों के लिए काम कर रहा था तो उस हमले से वह भीतर तक हिल गई. बहुत नुकसान हुआ था हमारा उस हमले में. उसने घर की एक एक चीज़ को बहुत मुश्किल से सहेजा था. पूरे घर को संवारा था. उस हमले से हमारा पूरा घर तहस नहस हो गया था. उस बरबादी से वह भीतर तक हिल गई थी. एक तो मेरा अमेरिका छोड़ने की बात हमेशा उसके मन में छाई रहती और फिर दूसरी बार घर की बरबादी से वह भीतर तक हिल गई थी.

"कभी तो उन्होंने [illegible] नहीं होगी." निलेश ने पूछा.

"नहीं कभी मेरे ख़िलाफ़ तो नहीं गई." उन्होंने स्मृति पर बहुत ज़ोर देते हुए कहा, "केवल एक बार उसने मेरा विरोध किया."

"कब?....." विपुल ने पूछा.

"एक दिन वह बहुत ग़ुस्से में थी और उस ग़ुस्से में उसने कह दिया कि मैंने आपके साथ शादी करके गलती की. उस दिन पहली बार यह वाक्य कहा था. उसके दिल में बहुत बड़ी आग रही होगी जिसके रहते उसने यह वाक्य कहा होगा. कहकर वे चुप हो गए थे. उस समय कमरे में दो मिनट तक मौन छाया रहा.

"तब आपको कैसा लगा था." कुछ समय बाद विपुल ने पूछा था.

"उस समय तो मुझे बहुत दुख हुआ था. पर बाद में कभी उसने ऐसा नहीं कहा. शायद घर की तबाही की वजह से वह बहुत परेशान हो गई थी. उसने मेरे लिए अपनी पर्सनेल्टी को ख़त्म कर दिया. एक पढ़ी लिखी महिला थी. अच्छे ख़ानदान की थी. अमूमन ऐसा होता नहीं है कि पढ़ी लिखी महिलाएं अपने पति की ख़ातिर अपने आप को सपरैस कर दें. लेकिन उसने ऐसा किया था यह बहुत बड़ी बात थी." उन्होंने बताया था.

"वे शायद आपके फ़ैसले से बहुत दुखी रही होंगी. भीतर ही भीतर आपके इस फ़ैसले से क्षुब्ध रही होंगी." विपुल ने कहा.

"हां, हो सकता है तुम्हारी बात सही हो. उसने तीस सालों तक मेरा विरोध किया. हमेशा उसे यह बात सालती रही कि मैंने उस समय अमेरिका छोड़कर ग़लत किया. मेरे इस फ़ैसले का वह कभी भूल नहीं सकी. बहुत स्ट्रांग फीलिंग्स रहीं उसके मन में. बच्चों के भविष्य को लेकर वह हमेशा चिंतित रहा करती थी." उन्होंने अतीत में झांकते हुए बताया था.

"पर केवल एक नन के कहने से ही आपने इतना बड़ा फ़ैसला किया या इसके पीछे कुछ और भी था." विपुल ने पूछा था.

"नहीं कुछ और तो नहीं था. नन की बात तो थी. साथ ही मैं उन दिनों में गांधी जी से प्रभावित था. एक आदर्शवाद का जमाना था वह. गांधी ही थे जो मानवीयता, प्रेम, अहिंसा, दया, मानव जाति की एकता और सबका मंगल चाहते थे. गांधी जी की ही प्रेरणा से दुनिया में कई लोग स्वाधीनता, मानवीयता और मानव अधिकारों के लिए लड़े. गांधी जी ने ही घृणा और हिंसा के ख़िलाफ़ एक लंबी लड़ाई लड़ी. मैं उनके आदर्शवाद से बहुत प्रभावित था. पर उस नन के सवाल ने ही मुझे अपने देश में आने के लिए प्रेरित किया. मैंने अपना ग्रीन कार्ड फाड़ डाला ताकि वापस इस देश में आने का कोई लालच ही न बचे. ग्रीन कार्ड रहेगा तो मेरे मन में लालच रहेगा. मैंने इस लालच को ही ख़त्म कर दिया. जिसे

अंग्रेज़ी में कहते हैं डिस्ट्राय योर ब्रीड." कहते कहते वे खिड़की से बाहर की ओर देखने लगे थे.

"यहां आने पर कैसे लगा आपको" विपुल ने जानना चाहा था.

"यहां आने पर ज़िंदगी इतनी आसान न लगी जितनी वहां रहकर मैंने सोचा था. यहां कदम कदम पर कठिनाइयों के पहाड़ थे. यहां किसी ने मुझे पहचाना नहीं. पहचानने की बात तो दूर रही लोगों ने मेरा मज़ाक खूब उड़ाया और मुझे ख़ब्ती, पागल, दुनियादारी से अनजान, घर फूंकने वाला, ख़ानदान की इज़्ज़त पर बट्टा लगाने वाला, बाप के अरमानों का ख़ून करने वाला और अपनी व अपनी बीवी की ज़िंदगी को ग़र्क करने वाला और न जाने क्या क्या कहा. लेकिन मैंने न तो कभी इन जुमलों की परवाह की और न कभी हालातों से समझौता किया जिसके कारण मुझे बेइंतहा परेशानियों का सामना करना पड़ा." उन्होंने कहना जारी रखा था

"जब मैं यहां आया तो मेरे सामने रहने की समस्या किसी विशाल अजगर की तरह मुंहबाये खड़ी हो गई. अमेरिका छोड़ते समय मुझे गुमान नहीं था कि मुझे अपने ही देश में बल्कि अपने ही शहर में रहने की दिक़्क़त हो सकती है. बहुत कोशिश की मैंने लेकिन किसी ने मुझे अच्छी जगह रहने के लिए किराए पर घर नहीं दिया. यह उन दिनों की बात है जब इस शहर में तनाव तो नहीं था और न ही इस शहर की कोई पहचान सांप्रदायिकता को लेकर बनी थी लेकिन फिर भी लोग किसी भी मियां भाई को अपना घर किराए पर देने के लिए तैयार नहीं थे. बहुत भटका था उस समय. बहुत ख़ाक छानी लेकिन मुझे घर नहीं मिला. पस्त होकर मैंने उस समय उन्नीस सौ तिहत्तर में शहर से बीस किलोमीटर दूर आजवा गांव में सैय्यदों की कॉलोनी में एक छोटा सा घर किराए पर ले लिया. पूरा गांव दाढ़ी वालों और ग़ोल ग़ोल टोपियां पहनने वालों से भरा हुआ था. आजवा गांव उन दिनों शहर से बहुत दूर था, चारों तरफ़ खेत ही खेत थे. आने जाने का कोई साधन नहीं था. थोड़ी सी आबादी. गांव में केवल एक ही सड़क थी जो उसे बड़ौदा से जोड़ती थी. गांव में एक-दो घर ही पक्के थे. बाक़ी अधिकांश कच्चे घर ही थे. बिजली का नामोनिशान नहीं था. आसपास खेत थे और रात को उन खेतों से गीदड़ों और कुत्तों की आवाज़ें सुनाई देती थीं. गांव में मस्जिद थी जो सबके मिलने का ज़रिया थी. और मस्जिद से ही पता चलता था कि दीन दुनिया में क्या हो रहा है और क्यों हो रहा है.

गांव के मुसलमान बेहद ग़रीब. गांव के सारे घर फूस के थे. कच्चे रास्ते और कच्चे घर. रास्तों में जगह जगह कीचड़ भरा रहता. उन रास्तों में मुर्ग़ियां और बकरियां इधर-उधर भटकती रहतीं. गांव के ज़्यादातर लोग खेतों में मज़दूरी करते.

कुछ लोग मांडवी में आकर दर्ज़ी का काम करते. लड़कियां ज़्यादातर अगरबत्ती बनाने के काम लगी रहतीं और लड़के शहर के किसी गैरज में काम करते या किसी मिल में कपड़ा बुनने का काम करते. गांव में न क़ोई सड़क थी न बिजली थी और न ही कोई स्कूल था. ज़्यादातर घरों में कांसे के दो चार बरतन रहते थे. उन दिनों किरोसीन भी आसानी से नहीं मिलता था. लकड़ी के चूल्हों पर बड़े-बड़े देगों पर खाना बनता. चूल्हे के धुएं से घर की दीवारें काली रहतीं. घरों में लोग बाण की चारपाइयों में चादर बिछाकर सोते. इस तरह की चारपाइयां भी केवल कुछ ही घरों में थीं. ज़्यादातर लोग अपने घरों में ज़मीन पर ही सोते. गांव में कोई डॉक्टर नहीं था. फ़क़ीरों की दी तावीजें और मालाएं पहनकर छोटी मोटी बीमारियों को दूर करने की कोशिश करते. छोटी मोटी बीमारियों का तो इलाज ही नहीं कराते. अपने आप ठीक हो गई तो ठीक, नहीं तो वही बीमारी नासूर बन जाती. और उस बीमारी से परेशान रहते लोग. रोग जब बहुत ज़्यादा बढ़ जाता तो गांव से दस किलोमीटर दूर मांडवी जाकर डॉक्टर से दवाई लेकर आते. गांव में एक मस्जिद थी जिसमें लोग बुझे चेहरे लिए किसी रस्म की ख़ातिर रोज़ शाम को जाते.''

''बहुत कठिन दिन रहे होंगे आपके.'' विपुल ने कहा था.

''हां बहुत कठिन दिन थे. उन दिनों उस गांव में रहकर भी रोज़ शाम को जब मैं यूनिवर्सिटी से वापस आता, गांव के बच्चों को इकट्ठा करके उन्हें पढ़ाता. उन्हें कहानियां सुनाता न्यूटन की, गैलिलियो की, आकाश और पृथ्वी की, आदमियों के विकास की. बंदर से आदमी बनने की. मेरी कहानियों को बच्चे बूढ़े शौक़ से सुनते. उनकी कहानियां सुनकर गांव के मौलवी मुझसे ज़रूर कहते, साहब, आप कैसी कहानियां बच्चों को सुनाते हैं. आपकी इन कहानियों में न खुदा है, न जन्नत है, न दोज़ख़ है. न क़ुरान है.

पर मैं उनसे कहता कि यही कहानियां, सच्ची कहानियां हैं. अल्ला, दोज़ख़ सब उस जन्म की बातें हैं. इन बच्चों को इस जन्म में रहना है. इन्हें इसी जन्म की कहानियां सीखनी हैं.

वे मेरी कहानियों पर यक़ीन नहीं करते पर मेरी बात का विरोध भी नहीं करते. गांव के कुछ लोगों को लगने लगा था कि आदमी यह सच्चा है. बच्चों को पूरी जी जान से पढ़ाता है. मैं लोगों को बार बार यही कहता कि अपनी लड़कियों को पढ़ने ज़रूर भेजो, वे पढ़ गईं तो तुम्हारा भी जीवन बेहतर हो सकेगा. नहीं तो वही देर तक सोना. वही निकाह, वही बुरके, वही मेंहदी. इसके लिए मैं जुम्मे की नमाज़ में भी जाकर यही दलीलें देता. लोग मेरी बातें बड़े ध्यान से सुनते और उन पर अमल भी करने की कोशिश करते.

गांव के मस्जिद से जुड़े लोग मस्जिद में आकर मुझे भी नमाज़ पढ़ने और रोज़ा रखने के लिए कहते. पर मैं न हां करता और न ही ना. चुपचाप उनकी बातें सुनता. लेकिन जब मस्जिद के मौलवी का मस्जिद में आने का तकादा लगातार बढ़ता रहा तो मेरी पत्नी डर सी गई थी. राह चलते कोई भी मौलवी उसे मिल जाता तो वह घबरा जाती. उसे यही लगता कि वे उसे नमाज़ या रोज़े के बारे में कहेंगे. लेकिन रास्ते में उससे कोई कुछ नहीं कहता.

एक दिन मेरी पत्नी ने कहा क्या हम लोग कहीं और जाकर नहीं रह सकते. यहां और रहना अब मुश्किल हो रहा है.

पर मैंने उसे समझाया था कि इस तरह की छोटी छोटी बातों से डरने लगेंगे तो मुश्किल हो जाएगा. आगे तो बहुत लंबी लड़ाई है.

पर आप इनसे कैसे लड़ेंगे. ये लोग संख्या में बहुत हैं और आप लोग गिने चुने. उसने सवाल किया था.''

कहकर वे चुप हो गए थे.

''तो फिर आपने क्या जवाब दिया था उस वक्त.'' विपुल ने पूछा.

''उस वक्त भी मैंने यही कहा था कि कहीं न कहीं और किसी न किसी को तो इसकी शुरुआत करनी ही होगी. अमेरिका से मैं केवल नौकरी करने ही नहीं आया. मुसलमानों के लिए कुछ करना चाहता हूं और मुझे लगता है कि यदि मैं इनकी शिक्षा के लिए कुछ कर सका तो समझूंगा कि मैंने थोड़ा बहुत कर दिया.''

''पर लोग आपकी बातों पर, आपकी कहानियों पर यक़ीन कर लेते थे.'' अविनाश ने पूछा था.

''कुछ लोग करते थे. कुछ लोग नहीं. वे मुझे यही कहते थे कि लड़कियों को स्कूल तो भेज दें पर स्कूल कहां है. और पढ़ लिख कर भी ये क्या करेंगी. निकाह तो होना ही है. कोई नौकरी तो करनी नहीं है.''

''पर मैं यही कहता पढ़ने लिखने से एक समझ आएगी. दुनिया को देखने और समझने की हिम्मत आएगी. उनमें एक विश्वास जगेगा जिससे अपने परिवार की देखभाल अच्छी तरह कर सकेंगी.''

''पर स्कूल कहां है. कहां उन्हें भेजें. उस समय आजवा गांव में तो दूर, पूरे शहर में मुस्लिम लड़कियों के लिए कोई स्कूल नहीं था. लड़कियों के लिए तो क्या लड़कों के लिए भी कोई स्कूल नहीं था. यही एक वजह थी जिसके कारण मुस्लिम लड़कियां पढ़ लिख कर आगे नहीं आ सकीं.''

''पर मदरसे तो थे.'' निलेश ने कहा.

''मदरसे थे जो मस्जिद में ही चलाए जाते थे. जहां क़ुरान की आयतें थीं, रोज़ा और नमाज़ थे. बच्चों को वही सिखाया जाता. मैंने जब इन मदरसों का विरोध

किया, इन मदरसों में जीवन जगत का ज्ञान देने की बात कही तो मौलवियों को बहुत ख़राब लगा. धीरे धीरे मैं उस गांव से कटता गया. लोग मुझे चाहते तो थे पर मेरे पास नहीं आते थे.

फिर भी साल भर तक मैं वहां रहा. बाद में मुझे यूनिवर्सिटी का घर मिल गया. यूनिवर्सिटी का घर मिलते ही मैंने आजवा गांव छोड़ दिया और यूनिवर्सिटी के नए घर में आ गया."

"और आपके पिता.... उन्होंने कैसे लिया इन सारी घटनाओं को. उन्होंने कोई आपकी मदद नहीं की."

"नहीं मदद करना तो दूर, वे भी मुझे कोसते रहते. अक्सर मुझ पर ताने ही कसते रहते कि क्या बुरा था अमेरिका की नौकरी में. यहां आकर गांव में अपनी और अपनी बीवी की ज़िंदगी ख़राब कर रहा हूं. भला एक नन के कहने से भी कोई अमेरिका की नौकरी छोड़ता है. वे बार बार मुझे सुनाते कि यदि मुझे अपने ख़ानदान की थोड़ी सी भी शर्म होती तो ऐसा न करता. उनके हिसाब से तो मुझे अपने ख़ानदान के बाक़ी लोगों को भी अमेरिका बुला लेना चाहिए था जिससे कि उनकी ज़िंदगी भी बन जाती लेकिन मैं तो अपनी ही ज़िंदगी बिगाड़ बैठा था दूसरों की क्या बनाता." उन्होंने हंसते हुए बताया था.

"वहां से आते ही आपको नौकरी मिल गई थी." विपुल ने पूछा था.

"नहीं, आते ही तो नौकरी नहीं मिली. थोड़ा मुझे रुकना पड़ा. कुछ दिनों बाद मुझे यूनिवर्सिटी में साइंटैफिक ऑफ़िसर की नौकरी मिली थी."

उन्होंने विस्तार से अपनी कहानी के बारे में बताया था.

विपुल को याद है एक बार उन्होंने एक घटना का ज़िक्र किया था उन्नीस सौ तेहत्तर की घटना का ज़िक्र जिसमें उनकी मुठभेड़ सैय्यद के नेता से हो गई थी. उन्होंने विपुल को बताया था कि एक बार मैं लड़कों की पिकनिक लेकर शहर से दूर आजवा बाग़ में गया था. लड़कों को पिकनिक पर ले जाने का मेरा मक़सद यही था कि लड़के आपस में एक दूसरे से मिलें, एक दूसरे से बातचीत करें, एक दूसरे को जानें-समझें. क़िशोरों में सांप्रदायिक सोच नहीं होती. मैंने देखा कि बाग़ में सैय्यद साहब नमाज़ पढ़ रहे हैं. मेरी इच्छा उनसे बातचीत करने की हुई. मैं उनका इंतज़ार करता रहा कि इनकी नमाज़ पूरी हो तो मैं इनसे बात करूं. वे नमाज़ पूरी कर चुके तो मैंने उन्हें सलाम किया. मेरे सलाम का जवाब उन्होंने सलाम से दिया और पूछा- कौन हो तुम.

मैंने कहा कि मैं यूनिवर्सिटी में पढ़ाता हूं.

क्या चाहते हो मुझसे. उन्होंने पूछा.

मैंने कहा मैं चाहता कुछ नहीं हूं. आपसे बात करना चाहता हूं.

क्या बात करना चाहते हो उन्होंने संजीदगी से पूछा था.

कुछ ख़ास नहीं. आपको नमाज़ पढ़ते देखा तो सोचा कि आपसे बातचीत की जाए.

मेरी बात का जब उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया तो मैंने पूछा, क्या आपको नहीं लगता कि मुसलमानों के पिछड़ेपन का कारण उनमें अशिक्षा है, उनका बढ़ता परिवार है.

मेरी बात सुनकर उन्होंने तिरछी नज़रों से मेरी ओर देखा और कहा, आप यूनिवर्सिटी वाले हैं न मुसलमानों को पढ़ाने के लिए. आप पढ़ाते क्यों नहीं.

यूनिवर्सिटी की बात तो जाने दीजिए उनमें प्रायमरी शिक्षा भी नहीं है. यूनिवर्सिटी तक तो मुस्लिम लड़के-लड़कियां पहुंचते ही नहीं.

तो मैं क्या करूं, खीझते हुए उन्होंने कहा था.

आप सरकार पर दबाव डाल सकते हैं कि जगह जगह मुस्लिम लड़के लड़कियों के स्कूल खोले.

यह काम मेरा नहीं, उन्होंने थोड़ा ग़ुस्से में कहा.

आप मुस्लिम समाज के प्रभावशाली नेता हैं. आपकी बात सरकार सुन सकती है. आप बहुत कुछ कर सकते हैं मुसलमानों की तरक्की के लिए.

पर यह मेरा काम नहीं है. उनका ग़ुस्सा बरकरार था.

आपका यह फ़र्ज़ बनता है कि आप मुसलमानों की तरक्की के लिए कुछ करें. मैंने थोड़ा आवेश में कहा.

हम दोनों में बातचीत हो ही रही थी कि दो युवक मेरे पास आए. उन दोनों ने शेरवानियां पहन रखी थीं. तीस साल के आसपास की उम्र रही होगी उनकी. दोनों के चेहरे पर काली दाढ़ियां थीं और दाढ़ियों में ख़िज़ाब था. दोनों युवक सैय्यद साहब के साथ ही थे शायद. हमें बातचीत करते दूर से वे देख रहे थे. उनमें से एक ने आवाज़ ऊंची करके मुझसे पूछा, कौन हैं आप.

उसे इस तरह बोलता देख मैंने भी उसी स्वर में पूछा, आप कौन हैं.

मैं... मेरे इस सवाल से वह युवक घबरा सा गया था. कहने लगा कि मैं इन सैय्यद साहब के साथ हूं. आप कौन हैं.

मैं यूनिवर्सिटी में पढ़ाता हूं. पोथीवाला मेरा नाम है. मैंने उन्हें बताया था.

आप वोहरा हैं... मुस्लिम वोहरा हैं. उसके दूसरे साथी ने पूछा.

हां मैं मुस्लिम वोहरा हूं आपको इससे क्या. मैंने कहा.

आपने हिम्मत कैसे की इनसे बातचीत करने की. उसके एक साथी ने ग़ुस्से में कहा.

आपको पता है कि हिंदुस्तान का कोई भी मुस्लिम वोहरा सैय्यद साहब से

बिना हमारी इजाजत के बात नहीं कर सकता. दूसरे ने भी बेहद ग़ुस्से से कहा.

सैय्यद साहब हमारी तकरार सुनते रहे. कुछ बोल नहीं रहे थे.

क्यों. बात क्यों नहीं कर सकता. इस्लाम में तो पैग़ंबर से भी कोई भी बात कर सकता है. यह क्या पैग़ंबर से भी बड़े हैं.

मेरी बात सुनकर उन्हें और ज़्यादा ग़ुस्सा आ गया.

एक ने कहा आप ज़बान संभाल कर बात करिए नहीं तो... उसने धमकी के अंदाज में कहा.

क्या करेंगे आप. मैंने भी ग़ुस्से से कहा.

आपको पता नहीं कि आप किससे बात कर रहे हैं और क्या कर रहे हैं

बहुत देखे आप जैसे, मैंने ग़ुस्से में कहा और जाने लगा.

मुझे वहां से हटते देख एक ने मेरी कमीज़ का कालर पकड़ लिया और कहने लगा कि आप यहां से माफ़ी मांगे बिना नहीं जा सकते.

आपको सैय्यद साहब से माफ़ी मांगनी होगी, दूसरे ने कहा.

माफ़ी... काहे की माफ़ी... मैंने पूछा.

मेरा ग़ुस्सा बढ़ता जा रहा था.

बिना हमसे पूछे आपने इनसे बात करने का अपराध किया है.

यह कोई अपराध नहीं है.

अपराध है. और माफ़ी तो आपके अब्बा को भी मांगनी पड़ेगी आप क्या चीज़ हैं.

मुझे बर्दाश्त नहीं हुआ. मैं अमेरिका से आया था एक मिशन लेकर. एक जज़्बा था मेरे अंदर.

शट-अप. आपको बोलने की तमीज़ नहीं है. मैंने भी ग़ुस्से में उनसे कहा.

मेरे 'शटअप' कहते ही उनका ग़ुस्सा सातवें आसमान पर चढ़ गया.

उन्हें उम्मीद नहीं थी कि मैं उन जैसे बड़े धार्मिक नेता के लोगों को 'शटअप' कह दूंगा. यह उनका भयानक अपमान था. उनसे बात करने की कोई हिम्मत नहीं करता था और मैंने उन्हें 'शटअप' कह दिया. वे आग बबूला हो गए. कहने लगे, हम देख लेंगे आपको.

आपसे जो बन पड़े आप कर लेना. कहकर मैं वहां से चला गया.

वे लोग मेरी तरफ़ देखते रह गए."

"फिर... फिर क्या हुआ" विपुल ने जानना चाहा था.

"उसी दिन शाम को हमारे विभाग के एक कर्मचारी ने मुझे उनका संदेशा दिया कि उन्होंने मुझे कल सुबह ग्यारह बजे मस्जिद में बुलाया है."

"गए आप." विपुल ने पूछा.

"नहीं, मैं नहीं गया. उसी दिन फिर उन्होंने मेरे पिता के माध्यम से मैसेज भिजवाया कि मैं उनसे मिल लूं. मैंने कहा, मुझे उनसे नहीं मिलना. उन्हें यदि मुझसे कुछ काम है तो वो मेरे पास मिलने आएं.

पिता ने समझाया जाने में कोई हर्ज नहीं है. वे मुस्लिम नेता हैं.

जो आदमी मुसलमानों की भलाई के लिए नहीं सोचता वह काहे का नेता. मैंने पिता की बात का प्रतिवाद किया था.

पर उन्होंने मेरे प्रतिवाद को नजरअंदाज करते हुए कहा था, उनके पास न जाना तुम्हारे लिए और ज्यादा मुश्किलें खड़ी कर देगा.

उन्हें जो करना हो करें पर मैंने उनके पास नहीं जाना. मैंने दोटूक शब्दों में अपने पिता को यह जवाब दिया था.

"आप जब उनके पास नहीं गए तो क्या किया उन्होंने." विपुल ने पूछा था.

"कुछ नहीं किया. बस एक दिन मस्जिद से कोई आदमी आया था. उसने मुझे बताया था कि सैय्यद साहब और सबने मिलकर मुझे नातबार कर दिया.

"नातबार...." विपुल ने हैरानी से पूछा था.

"हां नातबार. मतलब अपने समाज से बाहर निकालना. आपसे किसी तरह का कोई रिश्ता न रखना," उन्होंने नातबार का मतलब समझाया था. "मुझे कोई हैरानी नहीं हुई उससे यह सुनकर. मैंने उस आदमी से कहा इससे ज्यादा आप और कुछ नहीं कर सकते."

"बिना आपको बुलाए बिना आपसे बातचीत किए. वे किसी को नातबार कर सकते हैं." विपुल ने पूछा था.

"हां कर सकते हैं. सब कुछ उन्हीं के हाथ में होता है. नातवार करना कोई मुश्किल नहीं है. मस्जिद में पांच -छः मुल्ले-मौलवी इकट्ठे होते हैं. जिसको नातबार करना हो उसके जुर्म को बयान करते हैं और सबकी सलाह से उसे नातबार कर देते हैं."

उन्होंने नातबार करने की प्रक्रिया के बारे में बताया था.

"नातबार करने के बाद उन्होंने कुछ नहीं किया." विपुल ने पूछा.

"किया. उनका अहं मुझे नातबार करने में शांत नहीं हुआ तो अगले दिन उनका एक आदमी मेरे पास आया और कहने लगा मैं उनके सैय्यद साहब से माफी मांगू और उनके सामने प्रार्थना करूं तो मेरे अपराध को माफ़ कर देंगे.

मैंने कोई अपराध नहीं किया तो काहे की माफ़ी और काहे की प्रार्थना. मैंने उससे पूछा था.

यही कि आजवा गार्डन में आपने बिना किसी इजाजत के उनसे बातचीत की

और उनके साथियों के साथ बदसलूकी की. उस आदमी ने मुझे मेरे अपराध के बारे में बताया.

मैंने कुछ ऐसा नहीं किया बल्कि बदसलूकी उन लोगों ने मेरे साथ की. मैंने उससे कहा था.

पर उस आदमी ने जोर देकर कहा कि मुझे उनसे माफ़ी मांगनी होगी.

मैंने कोई गलत काम नहीं किया मैं क्यों माफ़ी मांगूं. मैंने भी जोर देकर कहा.

इस पर उस आदमी ने कहा कि यदि मैं उनसे माफ़ी नहीं मांगूंगा तो नातबार ही रहूंगा. कोई मेरे घर नहीं आएगा. मेरे घर के किसी शादी-ब्याह में कोई शामिल नहीं होगा.

"तब आपने क्या कहा." विपुल ने पूछा.

"मैंने कहा था दुनिया बहुत बड़ी है. मुझे उनकी परवाह नहीं है.

उसने कहा मर जाओगे तो कोई तुम्हारी मिट्टी को उठाने नहीं आएगा.

मैंने उसे यही जवाब दिया था कि अगर मैंने चार अच्छे काम किए होंगे तो लोग मेरा जनाजा ले जाएंगे. और यदि मुझे लगेगा कि लोग मेरा जनाजा नहीं ले जाएंगे तो मैं अपना शरीर मैडिकल कॉलेज को दे जाऊंगा."

"तब..." विपुल ने एक सवाल उनके सामने खड़ा कर दिया.

"तब कुछ नहीं. वह आदमी अपना सा मुंह लेकर लौट गया. इस घटना ने मेरे जीवन में बदलाव ला दिया. मेरी सोच के दायरे को विस्तृत किया."

"पर इन सैय्यदों का इतना दबदबा है आज भी." अविनाश ने पूछा था.

"हां, इन सैय्यदों का बहुत दबदबा है अपने समाज पर. इन धार्मिक नेताओं की वोहरा समाज में पकड़ बहुत ज्यादा है."

"किस तरह की पकड़" विपुल ने पूछा था.

"वे अपनी पकड़ से वोहरा समाज को संचालित करते हैं. यदि कोई इनके हिसाब से नहीं चलता तो ये लोग उसका जीना मुश्किल कर देते हैं. समाज से उसको बाहर कर देते हैं. उसकी शादी नहीं होने देते और यदि शादी हो गई तो बीवी से मियां को तलाक देने के लिए दबाव डालते हैं. कोई इनसे मिलने की कोशिश करे तो ये लोग मिलने की इजाजत नहीं देंगे और यदि इजाजत मिल भी गई तो उनसे बात करने से पहले अपनी हैसियत के मुताबिक इन्हें रुपये देने पड़ते हैं और लोगों की हैसियत ये लोग खुद ही तय करते हैं. और बाकायदा कोई आदमी जब मर जाता है तो अल्लाह मियां के नाम चिट्ठी लिखते हैं."

"अल्ला मियां के नाम चिट्ठी." विपुल ने हैरानी से पूछा.

"क्या लिखते हैं उस चिट्ठी में." निलेश ने जानना चाहा था.

"यही कि मरने वाला शख्स बहुत ही शरीफ और नेक इंसान था. कभी किसी

का दिल नहीं दुखाता था. आपसे डरता था. आपके सारे कायदे कानून को मानता था. पांचों वक्त की नमाज़ पढ़ता था. हमेशा रोज़े करता था. अपने परिवार की देखभाल करता था. इसे अपनी पनाह में रखना."

"फिर क्या करते हैं इस चिट्ठी का."

"मरने वाले के सीने पर रखते हैं ऐसी चिट्ठी को और फिर उसे दफन कर देते हैं." उन्होंने बताया था. "इस तरह वे अपने समाज को अपने काबू में रखते हैं."

अपनी ये कहानी बताते समय एक ग़ुस्सा था उनके मन में. "ये खलीफ़ा अपने खिलाफ़ किसी को नहीं जाने देते. कोई जाने की कोशिश भी करता है तो उसके जीवन में हजारों-हजार मुसीबतें खड़ी कर देते हैं. लड़के-लड़कियों की शादी नहीं होने देते. बच्चे के जन्म के अवसर पर पूरे परिवार को अपने कब्जे में कर लेते हैं. कोई मर जाए तो उसकी लाश को दफनाने नहीं देते. इनकी इजाजत के बिना परिवार का कोई भी काम नहीं हो सकता. इन्होंने मुझे भी सीमाओं में बांधने की कोशिश की पर मैं नहीं बंध सका. मैंने वोहरा समाज की सारी सीमाओं को तोड़ा था."

"बाद में ये वोहरा लोग आए आपके पास." विपुल ने पूछा था.

"हां आए थे." उन्होंने एक लंबी सांस लेते हुए कहा था.

"कब." अविनाश ने जानना चाहा था.

"जब लोग मुझे जानने लगे. मेरी इज्जत करने लगे. मेरा नाम हो गया तो यही वोहरा लोग मेरे पास आए. कहने लगे हम आपको वापस अपने समाज में लेने को तैयार हैं."

"तो आपने क्या कहा." विपुल ने पूछा था.

"पर मैंने मना कर दिया."

उन्होंने उस समय एक अंग्रेजी कविता की लाइनें सुनाईं–

दे ड्रियू अ सर्किल
दैन शट मी आउट
आई ड्रियू अ सर्किल
एंड शट दैम इन

कहकर वे हंसने लगे थे.

"अब कैसा लगता है." उस समय विपुल ने पूछा था.

"अब तो अच्छा लगता है. अब तो बहुत कुछ हो गया."

एक बार उन्होंने बताया था कि सी.एन. पटेल कहा करते थे कि इस देश की

दो बड़ी अजगर जैसी भयानक और विशाल समस्याएं हैं.

"कौन सी दो समस्याएं." विपुल ने जानना चाहा था.

"एक करप्शन."

"और दूसरी..."

"दूसरी कम्यूनिलिज़्म. करप्शन इन्वाल्वस मोरेलेटी एंड मनी बट कम्यूनिलिज़्म इन्वाल्वस करप्शन ऑफ माइंडस. कम्यूनिलिज़्म इज मोर डेंजरस दैन करप्शन. करप्शन कैन बी कंट्रोल्ड बट कम्यूनिलिज़्म कैननॉट बी कंट्रोल्ड. इट रिक्वायरस मच लांगर प्रोसेस. और इसीलिए आज के हुक्मरान सांप्रदायिकता को मिटाने की बात नहीं करते बल्कि करप्शन मुक्त भारत की बात करते हैं. ये लोग जानबूझ कर सांप्रदायिकता को फैलाते हैं." उन्होंने विपुल को बताया था.

विपुल जब जब उनके पास जाता था. उनकी यह कहानी, उनके संघर्ष, उनकें धार्मिक कठमुल्लेपन के खिलाफ़ उनकी लड़ाई हमेशा उसके मन में कौंधती रहती. उनका यह अतीत हमेशा विपुल की स्मृति में रहता और उनके इसी अतीत ने विपुल को उनकी ओर आकर्षित किया था.

3

रात के भयावह अंधेरे को पार करते हुए गाड़ी लगभग ख़ाली भागती जा रही थी. विपुल ने जाने कितनी बार इसी गाड़ी में सफ़र किया था लेकिन ऐसा सन्नाटा कभी नहीं देखा था. गाड़ी के डिब्बे ठसाठस भरे रहते थे. तिल रखने को जगह नहीं होती थी. इस बार पूरी गाड़ी में वीरानगी थी. वीरान डिब्बे में वह पहली बार सफ़र कर रहा था. दो चार लोग थे जो किसी मजबूरी में यात्रा कर रहे थे पर वे लोग डरे और सहमे हुए थे. इसी ट्रैक पर दस दिन पहले हुआ हादसा उनकी चेतना पर हावी था. उन लोगों ने डिब्बे की खिड़कियां बंद कर ली हैं. खिड़कियां बंद करने से बाहर का डर भी अंदर आ गया था. दस दिन पहले ही इसी रास्ते से जा रही साबरमती एक्सप्रेस के एक डिब्बे में गोधरा स्टेशन पर आग लगा दी गई थी. अयोध्या से वापस आ रहे यात्रियों को ज़िंदा आग के हवाले कर दिया गया था. यात्रा कर रहे लोगों के मन में गोधरा का हादसा लाल सुर्ख़ अक्षरों में दर्ज था. ऐसा शायद आज़ाद भारत में पहली बार हुआ था.

गाड़ी गुजरात की ओर तेज़ी से भाग रही थी. विपुल के ज़ेहन में कई तस्वीरें उभर रही थीं. निलेश. यूनिवर्सिटी में पढ़ाने वाला अविनाश. उसे बनाने वाले डॉ. के.एम. पोथीवाला. बेहद एक्टिव और जुझारू रंजना कांटावाला, पार्टी के लिए लिखने वाला रफीक अहमद, गर्वीला और जोशीला सौरभ, कॉलेज में पढ़ाने वाला नर्मदा प्रसाद, अपने क्रैरियर की चिंता में लगा छोटा भाई मनीष, सिविल परीक्षाओं में सफलता के सपने देखता धर्मपाल. शेयर बाज़ार से पैसा कमाने की आकांक्षा लिए राजेंद्र पटेल. भीष्म पितामह की तरह अकेले रह गए पिता. किसी राजमाता की तरह शांत मां जिनके अपने परिंदे अपने अपने कैरियर को संवारने लंबी उड़ान पर निकल गए हों और उनका अंतहीन इंतज़ार करती उनकी बड़ी आंखें. इन सबसे मिलकर बना था वह. सबका थोड़ा थोड़ा अंश था उसमें. एक अजीब सी रागात्मकता थी इन सबके प्रति. इनसे दूर भी और इनके पास भी, शहर का

विश्वविद्यालय, विश्वविद्यालय की भव्य इमारतें. महाराजा सयाजीराव की दूरदर्शिता का प्रतीक विश्वविद्यालय के गुंबद जिनका सपना था उनकी रियासत के सभी युवक और युवतियां खूब पढ़ें. साइंस, कला, साहित्य, कॉमर्स, संगीत. उनकी इस दूरदर्शिता का परिचय देते विश्वविद्यालय के विभिन्न विभाग. हॉस्टल, लैब और लाइब्रेरी, लाइब्रेरी का रिसर्च फलोर, शहर की सड़कें और पुराने शहर की तंग गलियां, गलियों में उसका स्कूल. शहर की सड़कों और बागों के प्रति एक अजीब सा मोह. ये सब उसके वजूद पर हावी थे. समय के साथ साथ सब कुछ गड्डमड्ड सा हो गया.

स्कूल के बंधन से मुक्त होकर निलेश के उद्‌गार... सारी सारी रात दीवारों पर लिखते नारे... धर्म हमारे जैसे पिछड़े समाज के लिए गंभीर ख़तरा है... धर्म में ही सांप्रदायिकता के तत्व शामिल हैं... धर्म शोषण का महत्वपूर्ण हथियार है... क्रांति के बिना कुछ नहीं होगा. शोषण की बुनियाद पर टिकी यह सामंती और पूंजीवादी व्यवस्था सब कुछ ख़त्म कर देगी...

उससे की गई बहसें कि क्या हमें धर्म के आगे झुकना होगा. क्या हमारे समाने बेहतर समाज का कोई विकल्प नहीं है. और उसके जोशीले जवाब कि धर्म अपने प्रति संपूर्ण समर्पण की मांग करते हैं. बुद्ध धर्म और संघ की शरण में आने के लिए कहते हैं... कृष्ण अपने भक्तों को अपनी शरण में लाने की गुहार करते हैं... यहूदियों के ईश्वर तो दूसरे कबीलों के प्रति घृणा का भाव रखते हैं और मालूम है तुम्हें यदि तुम दूसरे धर्म की शरण में गए तो उनका ईश्वर नाराज़ होकर खुद तुम्हें दूसरे कबीले के हाथों ग़ुलाम के रूप में बेच देगा... ईसा मसीह भी अपने अनुयायियों को अपने पीछे चलने की मांग करते हैं क्योंकि उनके द्वारा दिखाया गया रास्ता ही मुक्ति का रास्ता था... इस्लाम में तो काफिरों के लिए कोई जगह नहीं... धर्म का यह रुख़ ही सांप्रदायिकता को जन्म देता है.

"तो क्या सारे धर्मों का निषेध किया जाए." उसके जोशीले जवाबों के सामने विपुल का सवाल होता.

"नहीं निषेध नहीं... धर्म के प्रति सकारात्मक एप्रोच का होना बहुत ज़रूरी है" उसके स्वर में हमेशा ग़ुस्सा रहता.

"कौन करेगा यह सब."

"हम करेंगे." उसके स्वर में हमेशा एक बड़बोलापन सा रहता. आत्ममुग्धता हमेशा उस पर हावी रहती थी. उसको यही लगता था कि उसका जन्म ही किसी बड़े काम के लिए हुआ है. नौकरी कैरियर जैसी चीज़ों में वह नहीं उलझता.

"तो हमारी पढ़ाई.... हमारा कैरियर..."

"भगतसिंह ने क्या अपने कैरियर के बारे में सोचा था.... या बिरसा मुंडा ने

अपने कैरियर के बारे में सोचा था. क्या सुभाषचंद्र बोस ने अपनी पढ़ाई की चिंता की थी. समाज को बदलना है तो बलिदान तो करना ही होगा.''

रंजना कांटावाला के जुझारू बयान से उन सब लोगों को सांप सूंघ जाता था. रंजना कांटावाला विद्यार्थी संघ की लीडर थी जिसके हौंसले बुलंद थे. वह समाज में कुछ करना चाहती थी. भगतसिंह उसके आदर्श थे.

कॉमरेड इस बुर्ज्वाजी समाज से हम बेहतर भविष्य की कल्पना नहीं कर सकते. यह निज़ाम अब सड़ चुका है इसे बदलना ही होगा. दुष्यंत की ग़ज़लें उसकी जुबान पर हमेशा रहतीं कि अब तो इस तालाब का पानी बदल दो यारो, अब ये कमल के फूल कुम्हलाने लगे हैं.

पर तालाब का पानी कौन बदलेगा. विपुल कभी कभी उससे पूछता तो वह नाराज़ हो जाती. कहती तुम्हारे जैसे लोग यदि इस देश में बढ़ गए तो पूंजीवाद ही मज़बूत होगा.

वे सारी बातें उसकी स्मृति में एकदम ताज़ा हो गईं. अब सारे लोग कहां हैं. विपुल याद करने की कोशिश करता है तो परिदृश्य एकदम बदला हुआ नज़र आता है...

''भाई साहब गोधरा सुबह कितने बजे आएगा.'' यात्रा कर रहे एक लड़के ने पूछा.

विपुल ने ग़ौर से देखा उसे. लंबा सा क़द. गोरा चेहरा. सर पर साफ़ा बांधे. पच्चीस छब्बीस साल का युवक था. उसका एक साथी भी था. गोरा सा. उसने भी साफ़ा बांधा हुआ था. पंजाबियों सा.

''कहां जाना है तुम्हें?'' विपुल ने पूछा.

''राजकोट.'' उसने सरलता से बताया.

''वहां क्या करते हो?'' उसने जानना चाहा.

''करता कुछ नहीं हूं.'' उसने भोलेपन से कहा.

''वहां पढ़ते हो?''

''नहीं.''

''तो फिर. राजकोट किसलिए जा रहे हो?''

''पैसे वसूलने हैं जी.''

''पैसे.... किससे वसूलने हैं?'' विपुल ने पूछा.

''दुकानदारों से.''

''कहां से आ रहे हो?''

''जालंधर से आ रहा हूं जी.''

''तो राजकोट में कारोबार करते हो?''

"नहीं जी कारोबार तो हमारा पंजाब में है."

"किस चीज़ का कारोबार?"

"सायकिलों का कारोबार है."

"पंजाब में कहां?"

"जालंधर में." उसने बताया, "वहां हमारा बिजनिस है सायकिलों का. राजकोट में माल भेजा था. ये आग गुजरात को जला देगी. इसमें लोगों के घर ही नहीं जलेंगे पूरा धंधा जल जाएगा." उसने बेहद चिंतित होकर कहा.

"क्यों राजकोट में तो कोई दिक़्क़त नहीं. वहां के बाज़ार तो खुले हैं."

"पर सारा काम तो अहमदाबाद और सूरत में होता है. वहीं से कुछ नहीं हो रहा है तो धंधा कैसे चलेगा?" उनके स्वर में परेशानी थी.

"कब तक चलेगा ऐसा?" विपुल ने उनसे जानना चाहा.

"क्या मालूम कब तक चलेगा पर जितनी जल्दी बंद हो उतना अच्छा. हमारा तो धंधा ही बैठ रहा है. कारीगरों की पेमेंट करनी है. बाज़ार से पैसा नहीं आ रहा." उनके स्वर में चिंता थी.

गाड़ी में सफ़र कर रहे लोग जानना चाह रहे थे दरअसल गोधरा में हुआ क्या था. पहल किसकी ओर से की गई थी. अब हमारी गाड़ी को तो कोई ख़तरा नहीं. इसी प्रकार की बातें करते लोग झपकियां लेने लगे थे. अपने अपने सामान को सभी ने चेनों से बांध दिया था. पता नहीं किससे उन्हें ख़तरा था. शायद अपने साथ यात्रा कर रहे लोगों के साथ कि कहीं रात में किसी स्टेशन पर वह अपने सामान के साथ साथ उनका सामान भी न ले जाएं. पंजाब से आए दोनों लड़के चद्दर ओढ़कर सो गए थे. गुजराती भाई के खर्राटों की आवाज़ पूरे डिब्बे में गूंजने लगी थी. रात गहराने लगी थी और मुसाफ़िर किसी आशंका में सफर कर रहे थे. कभी गाड़ी धीरे हो जाती तो पंजाब से आ रहे दोनों में से एक लड़का जाग जाता. उसकी आवाज़ सुनाई देती कि कौन सा स्टेशन आया है. पर उसे कोई उत्तर नहीं मिलता. रात में डिब्बे के अंदर का सन्नाटा और भी गहरा हो जाता.

4

बड़ौदा रेलवे स्टेशन एकदम सुनसान था. भीड़भाड़ वाले इस स्टेशन पर वीरानगी थी. ट्रेन से मुश्किल से आठ-दस यात्री ही उतरे थे. चढ़ने वाला शायद ही कोई था. गाड़ी लगभग ख़ाली थी. सामान्य हालात में मुंबई जाने वाले यात्री इस गाड़ी का बेसब्री से इंतज़ार करते हैं. लोगों की बेतहाशा भीड़ होती है. लेकिन आज किसी को कहीं नहीं जाना था. सबके दिलों में कुछ दिन पहले जो कुछ हुआ उसे लेकर दहशत थी. प्लेटफ़ार्म पर जगह जगह पुलिस थी. कहीं कोई लारी वाला नहीं था. कहीं कोई चाय वाला नहीं था और तो और हमेशा खुला रहने वाला अख़बारों और मैगज़ीन बेचने वाला ए.एच. व्हीलर का स्टॉल भी बंद था. पूरा स्टेशन ख़ामोश था. हमेशा धूम मचाते कुली भी कहीं नहीं दिखाई दे रहे थे. एकाध रेलवे के सफ़ाई वाले ज़रूर दिखाई दे रहे थे. रेलवे की ओर से की जाने वाली घोषणाएं भी नहीं हो रही थीं. सब कुछ शांत, मौन, स्तब्ध और डरावना. मौन के आलम में डूबा हुआ है पूरा स्टेशन. एक भी आवाज़ नहीं. एक भी धड़कन नहीं.

विपुल इस मौन को चुपचाप देखने लगा था. यही मौन रेलवे स्टेशन के बाहर पसरा हुआ है.

वह काफ़ी देर तक खड़ा रहा.

यही नज़ारा स्टेशन से बाहर की तरफ़ था. न कोई बस, न ऑटोरिक्शा, और न ही कोई आदमी. जहां तक नज़र जाती थी वीरानगी ही वीरानगी थी गोया शहर को कोई सांप सूंघ गया है या फिर कोई भयानक हिंसक प्राणी इस शहर में आ गया है जिसके डर से पूरे शहर के लोग कहीं दुबक गए हैं.

इस शहर की मिलीजुली आबादी थी जिसमें हिंदू भी थे. मुसलमान भी थे. मराठी भी थे और बड़ौदा में आकर बसे उत्तर भारतीय भी थे. मराठियों की संख्या

ज़्यादा थी जो सयाजीराव गायकवाड के जमाने से बड़ौदा में रह रहे थे. और उनकी पीढ़ियां आज भी महल के प्रति वफ़ादार थीं. आज भी वे गायकवाड के वंशजों को 'श्रीमंत महाराजा' कहकर उनका सम्मान करती थीं. शहर की जिन गलियों में सयाजीराव के गौरव की चर्चा होती थी आज उन गलियों में शक, नफ़रत और डर था.

सयाजीराव की उदारता और सबको साथ लेकर चलने की भावना के बावजूद यह शहर दंगों की चपेट में अक्सर आता रहा.

शायद उन्नीस सौ पांच में पहला दंगा हुआ था इस शहर में. यह बंग-भंग के आंदोलन का समय था. जब बंगाल के मुसलमान वंदे मातरम का विरोध कर रहे थे तब नवाब सलीमुल्ला खां के आदमियों ने गांवों में जाकर वंदे मातरम गाने वालों को गालियां दी थीं. शायद वहीं से पहला दंगा हुआ था. फिर उन्नीसं सौ सत्ताईस का दंगा भी यहां के लोगों को याद है जब शिवाजी महाराज के जन्मोत्सव पर शिवाजी की मूर्ति के जुलूस पर अमदाबादी पोल के सामने पथराव हुआ था. माणेकराव ने किसी तरह मूर्ति को तो उस पथराव से बचा लिया था लेकिन खुद घायल हो गए थे और कुछ लोग यह भी कहते थे कि मुसलमानों ने ही पहले जुलूस पर पत्थर फेंका था. कुछ बड़े बुजुर्ग यह भी कहते थे कि अंग्रेजों ने ही हिंदू मुसलमानों की एकता को भंग करने के लिए शिवाजी महाराज के जुलूस पर पथराव किया था. यह भी कहा जाता था कि इन दंगों से पहले हिंदू और मुसलमान मिलजुल कर इस शहर में रहते थे लेकिन इन दंगों के बाद दोनों के आपसी संबंधों में थोड़ी कटुता आई थी.

दंगों का इतिहास!

लोग तब भी हैरान थे कि गायकवाड के राज में ऐसा कैसे हो सकता था. लेकिन जब से ऐसा हुआ था तब से दंगों का तांता इस शहर में और इस प्रांत में लगा हुआ है. चाहे नवनिर्माण का आंदोलन हो, चुनाव का माहौल हो, हिंदुस्तान पाकिस्तान का क्रिकेट मैच हो, चाहे ताज़िये निकलने हों, राम रथयात्रा हो– दंगों का अंदेशा हमेशा इस शहर में बना रहता है.

विपुल ने फ़ोन पर निलेश को बड़ौदा पहुंचने की ख़बर दी थी. उसकी आवाज़ सुनकर वह खुश हो गया. कहने लगा कि "अच्छा किया तुम आ गए. तुम हो कहां अभी."

"अभी अभी गाड़ी से उतरा हूं सबसे पहला काम तुम्हें फ़ोन कर रहा हूं. स्टेशन पर हूं." उसने बताया था.

"तो मैं तुम्हें लेने आता हूं." उसने फ़ौरन कहा था.

"लेने आने की ज़रूरत नहीं है. मैं खुद ही आ जाऊंगा. यह शहर मेरा अपना है. इस शहर की रग रग से वाक़िफ़ हूं."

"पर आज अकेले आना रिस्की है. कोई भी ऑटोरिक्शा तुम्हें नहीं मिलेगा. और मिलेगा भी तो रास्ते में ख़तरा है. शहर का माहौल बहुत ख़राब है. यहां शमा तक पहुंचने के लिए निज़ामपुरा और फ़तेहगंज से होकर आना पड़ेगा. वहां कर्फ़्यू है और सेना का जमावड़ा है. कोई तुम्हें नहीं आने देगा." उसने ज़ोर देकर कहा.

"तो बाईपास से आ जाऊंगा." विपुल ने रास्ता सुझाया था.

"पर आओगे कैसे बाईपास से होकर आने के लिए कोई रिक्शा नहीं मिलेगा."

"तो फिर."

"तुम वहीं रुको. आधे घंटे में मैं गाड़ी लेकर पहुंचता हूं. टिकट अपने साथ रखना रास्ते में पुलिस वाले पूछ सकते हैं." उसने विपुल को हिदायत देते हुए कहा था.

विपुल को अंदाज़ा नहीं था कि यह शहर उसे इस तरह बांध देगा. अपने ही शहर में इस तरह वह असहाय हो जाएगा. कहीं जाने के लिए उसे किसी सुरक्षा की ज़रूरत होगी.

उसे फ़ोन के बूथ पर असमंजस की हालत में खड़ा देख एक पुलिस वाले ने उससे पूछा, "कहां जाना है." पुलिस वाले को इस तरह पूछते देख वह हैरान रह गया. लेकिन तुरंत उसे सारा माजरा भी समझ में आ गया. शहर की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए रेलवे स्टेशन पर पुलिस की व्यवस्था की गई थी. जब भी किसी बड़े शहर में किसी तरह की गड़बड़ी की आशंका होती है तो सबसे पहले रेलवे स्टेशन पर निगाह रखी जाती है और हर आने जाने वाले से इस तरह की पूछताछ की जाती है. उसने पुलिस वाले को ध्यान से देखा.

मोटा थुलथुल पेट वाला सिपाही था. चेहरे पर लापरवाही और रौब का भाव था. बेल्ट ढीली. कमीज़ के बटन खुले हुए. हाथ में एक डंडा. अक्सर पुलिस वालों को देखकर उसके मन में ख़्याल आता है ये थुलथुल पेट वाले ढीले ढाले पुलिस वाले किस तरह काम करते होंगे. सौ मीटर भी इन्हें दौड़ाया जाए तो यक़ीनन ये नहीं दौड़ सकेंगे. इनसे ज़्यादा स्मार्ट तो एक छुटभैया चोर दिखाई देता है.

पुलिस वाले को अपनी तरफ़ घूरते देख उसने जवाब दिया, "शमा में."

उस पुलिस वाले ने ग़ौर से विपुल की तरफ़ देखा गोया उसे किसी अपराधी की तलाश हो और वह विपुल ही हो.

"कहां से आए हैं आप." उसने फिर पूछा. उसके स्वर में थोड़ी अक्खड़ता थी.

"दिल्ली से." विपुल ने भी उसे उसी अक्खड़ता से जवाब दिया.

"क्यों आए हैं. क्या काम है. यहां किसके पास आए हैं. यहां कहां जाएंगे."

उसने सवालों की झड़ी लगा दी थी.

विपुल हैरान रह गया उसके इन सवालों से. उसे गुस्सा सा आया. लेकिन अपने गुस्से को शांत करते हुए कहा, "ज़रूरी काम है यहां इसलिए आया हूं."

"क्या ज़रूरी काम है." उसके स्वर में अक्खड़ता बरक़रार थी.

"है कुछ ज़रूरी काम." विपुल ने कुछ गुस्से से कहा.

"वह काम कुछ दिन बाद नहीं हो सकता था. पता है आपको शहर की हालात ठीक नहीं है. किसके यहां जाना है आपको." उसके स्वर में धमकी थी.

उसने निलेश का नाम और पता बताया.

उस पुलिस वाले ने ज़ेब से अपनी डायरी निकालकर निलेश का नाम और पता नोट किया गोया वह कोई अपराधी हो.

"कैसे जाओगे वहां. कोई ऑटोरिक्शा तो तुम्हें मिलेगा नहीं." उसने उसे डराने के अंदाज में कहा.

उसके स्वर में थोड़ी नरमी सी आ गई थी..

"वह खुद आ रहा है लेने." विपुल ने बताया.

"अच्छा ठीक है." कहकर वह दूसरी तरफ चला गया.

विपुल ने आसपास नजर दौड़ाई. प्लेटफार्म पर एक दो पुलिस वाले और थे जो यात्रियों से इसी किस्म की पूछताछ कर रहे थे.

बाहर उसकी नजरों के सामने बड़ौदा शहर था. इस समय इस शहर में डर और सन्नाटा पसरा हुआ था.

दस साल तक इस शहर में रहा था वह. इस शहर के मिजाज से अच्छी तरह वाकिफ था. गुजरात का सम्पन्न शहर है यह. खुली हवा. खुला मौसम. खुले लोग. सब कुछ खुला. फर्राटे से कायनेटिक चलाती महिलाएं. पैसा कमाने की अदभुत हवस और व्यवसाय की ललक इस शहर में खूब है. हर आदमी शेयर बाजार में मग्न है. सुबह उठते ही अख़बार खोलकर बैठ जाता है और सोचने लगता है कि आजे सू लेवाणु छेः. आजे सू वेचावाणु छेः (आज किस कंपनी के शेयर खरीदने हैं और किस कंपनी के शेयर बेचने हैं) इसी उधेड़बुन में लगा रहता है यह शहर. शेयरों को खरीदना और बेचना यहां के लोगों का प्रिय शगल है. विपुल इस शहर में नवरात्रि के दिनों को याद करता है तो हैरान रह जाता है. पूरे शहर के लड़के

लड़कियां अपना झब्बा और घणियां चोली में गरबा नृत्य करने खुले मैदानों में पहुंच जाते हैं. सुरक्षा का कोई खतरा नहीं. चोरी चाकरी का कोई डर नहीं. लड़कियां रात के दो दो बजे तक लड़कों के साथ खुलेआम घूमती हैं. मां बाप का कोई अंकुश नहीं. कोई डर नहीं. उत्तर भारत जैसा कोई आतंक नहीं. कोई असुरक्षा नहीं. गरबा रमवा की मानसिकता है यहां. देर रात तक लड़के लड़कियों को घर से बाहर रहने की अनुमति यह शहर दे चुका है. इसी गरबा पर धर्मपाल शर्मा मोहित हो गया और पूरे उत्तर भारत की तुलना में गुजरात की श्रेष्ठता का राग अलापता रहता था. धंधे में नुकसान नहीं होना चाहिए. यही मूल मंत्र है इस शहर का. म्हारे सू और मने सू की मानसिकता से ग्रस्त है यह शहर. वह दस साल तक इस शहर में रहा लेकिन एक भी गुजराती दोस्त उसका आत्मीय नहीं बन सका. जो बने भी वे दूसरे शहरों से आए अपनी नौकरियों के कारण इस शहर में बसे लोग थे. यह इस शहर की खूबी है. यहां के लोग आपके साथ बैठेंगे, आपसे दोस्ती करेंगे, आपके साथ घूमेंगे लेकिन आपको अपने मन की गहराइयों तक नहीं ले जाएंगे. केवल परिचय तक ही आपको सीमित रखेंगे. परिचय को संबंधों में परिवर्तित नहीं होने देंगे.. अपने में ही मग्न जलकुंभी की तरह. झगड़े झंझट से कोसों दूर. इनकी इस मानसिकता से परेशान होकर निलेश कहा करता था, "हमेशा झगड़े, झंझटों से दूर रहोगे तभी तो महमूद गजनवी ने कई बार सोमनाथ के मंदिर को लूटा. ये यहां के लोग ही थे जिन्होंने उसे इस मुल्क में आने दिया. यही है इनकी शांतिप्रियता."

"तो क्या शांति चाहना गलत है." धर्मपाल का सवाल होता था.

"गलत नहीं है लेकिन खून में कुछ तो गर्माहट होनी चाहिए. यह क्या कि सेनाएं चली आ रही हैं और आप म्हारे सू कहकर मुंह में मसाला दबाए घरों में दुबके हैं."

जब वह गुस्से में होता तो इसी तरह की बातें करता.

"तुम गिना लो आर्मी में कितने लोग गुजरात से हैं. गुजरात से कितने लोग यू.पी.एस.सी. में जाते हैं, कितने लोग आई.आई.टी. या आई.आई.एम. में जाते हैं. ये लोग सुबह सुबह एक कैंची जेब में रखेंगे और पहुंच जाएंगे बाजारों में दूसरों की जेब काटने. यह धंधा करते हैं ये लोग."

"तो क्या धंधा करना बुरा है." धर्मपाल का सवाल होता.

"धंधा करना बुरा नहीं है. बुरी है यहां की मानसिकता. बिना मेहनत किए कमाने की मानसिकता." निलेश के स्वर में यहां के प्रति एक गुस्सा रहता.

"तो क्या गुजरात यूं ही सम्पन्न हो गया. पटेलों की उद्यमशीलता को तुम कैसे नकार सकते हो."

"मैं नकार नहीं रहा हूं, मैं उस मानसिकता की बात कर रहा हूं जो यहां के लिए घातक है और गुजरात के सम्पन्न होने के बहुत सारे कारण हैं जो तुम जानते हो." विपुल धर्मपाल को समझाने की कोशिश करता.

विपुल की बातों और तर्कों में वजन जरूर था. गुजरात के सम्पन्न होने के कई कारण थे. एक तो यह प्रांत किसी भी बाहरी हमले का शिकार नहीं जैसा कि पंजाब में हुआ. बार बार उजड़ना और बार बार बसना वहां के लोगों की नियति है. अन्य प्रांतों में उतार चढ़ाव आए, पर यहां स्थिरता रही. यहां की राजनीति ने भी इसे सम्पन्न करने में काफी योगदान दिया. उत्तर भारत की तरह नहीं. इसमें कोई शक नहीं कि पटेलों की इसमें अहं भूमिका है. कॉपरेटिव आंदोलन भी यहां काफी सफल रहा.

"और तुम्हें मालूम है यह सारी सम्पन्नता गुजरात के केवल 400 किलोमीटर के इलाके में ही है जिसे गोल्डन कॉरिडोर कहा जाता है. शेष सारा गुजरात तो सूखा है. सौराष्ट्र में तो पीने का पानी नहीं. इस सम्पन्न गुजरात में आधी आबादी को दिन में एक बार खाना मुश्किल से नसीब होता है. एशिया का मानचैस्टर कहे जाने वाले शहर अहमदाबाद में कपड़ा मिलें तेज़ी से बंद हो रही हैं. लाखों लोग बेकार भटक रहे हैं. शहर की गली-गली में मजदूरों के बाजार हैं. गुजरात की सम्पन्नता कुछ ही लोगों तक सीमित है." विपुल के तर्क होते जिनके सामने धर्मपाल का कोई जवाब नहीं होता.

आज इसी सम्पन्न शहर में आतंक पसरा हुआ था. स्टेशन से खड़े होकर जहां तक नजर जाती थी वहां सम्पन्न शहर की सुनसान सड़कें ही दिखाई देती हैं. सुनसान और वीरान. पूरे शहर के लोग आतंकित और दहशतज़दा हैं. इस आतंक और दहशत से लोग बाहर आने से कतराने लगे थे.

5

कार में बैठते ही विपुल ने निलेश पूछा था, "कैसे हैं सर."

"वैसे तो ठीक हैं. बहुत आहत हो चुके हैं भीतर से. उन्हें उम्मीद नहीं थी कि उनके साथ भी ऐसा हो सकता है."

"कैसे हुआ यह सब." विपुल ने जानना चाहा.

"वो तो पता नहीं लेकिन शाम के समय भगवा रंग के स्कॉर्फ लपेटे कुछ आवारा किस्म के लड़के मोटर सायकलों पर सवार होकर उनके घर आए थे और देखते ही देखते उनके घर पर पत्थर फेंकने लगे. कुछ लड़कों ने तो उनके घर के अंदर घुसने की कोशिश भी की लेकिन घर के दरवाजे बंद थे." कहकर वह चुप हो गया.

"फिर?"

"पहले तो उन लोगों ने बाहर खड़ी उनकी गाड़ी को पेट्रोल डालकर उसमें आग लगा दी."

"ओह... फिर?"

"सर ने अपने आप को अपने घर के किसी कमरे में बंद कर दिया था. बाहर उनकी कार जल रही थी और आवारा लड़के जय श्रीराम के नारे लगा रहे थे. उनका शोर सुनकर उनके पड़ोसी भरत पटेल और एक दो लोग बाहर आ गए."

"भरत पटेल..." विपुल ने हैरानी से कहा.

"हां भरत पटेल. भरत पटेल, तुम शायद जानते होगे, सर के बाजू वाले घर में ही रहते हैं. उनके साथ उनका लड़का भी था. सौराष्ट्र के रहने वाले. लंबा चौड़ा कद. घने बाल. बड़ी बड़ी मूंछें. उन्होंने लड़को को डांटते हुए कहा, "क्या बात है क्यों हल्ला मचा रहा हो."

"पोथीवाला को बाहर निकालो." उन लड़कों के स्वर में बेहद उत्तेजना थी.

"क्यों... क्यों निकालें बाहर. मालूम नहीं तुमको वो कौन हैं." भरत पटेल ने

बहुत ही गुस्से में कहा था.

"कोई भी हो पर मियां भाई है." उन लड़कों के सर पर खून सवार था. वे लड़के लगभग चिल्ला रहे थे.

"मियां भाई है तो क्या हुआ." भरत पटेल ने भी लगभग चिल्लाते हुए कहा था.

"पता नहीं तुम्हें इन मियां लोगों ने गोधरा में हिंदुओं को जिंदा जला दिया. हम इनको नहीं छोड़ेंगे." उन लड़कों में से एक ने तलवारनुमा किसी चीज को हवा में लहराते हुए कहा था.

"खबरदार यदि इनके बारे में कुछ भी ऐसा सोचा. तुमको इस सोसायटी से बाहर नहीं जाने देंगे." भरत भाई ने उन्हें धमकी दी.

भरत भाई को इस तरह बात करते देख आसपास के कुछ और लोग भी अपने अपने घरों से बाहर निकल आए. इतने सारे लोगों को देखकर उन लड़कों को लगा कि मामला गंभीर हो सकता है तो अपनी अपनी मोटर सायकिलों से वापस चले गए लेकिन जाते जाते यह धमकी ज़रूर दे गए कि अब मियां भाई बच नहीं सकते.

निलेश विस्तार से विपुल को बता रहा था.

"फिर आए वे." विपुल ने पूछा.

"नहीं उस समय तो नहीं आए. पर उनके ऊपर मंडराते ख़तरों को देखते हुए पड़ोसियों ने उन्हें अपने घर में आने के लिए कहा और सर चले भी गए."

"तब फिर कैसे हुआ ये सब."

"रात को हुआ यह सब." निलेश ने बताना शुरू किया, "रात के क़रीब दस बजे एक बहुत बड़ा जत्था सर के घर पर आया. उनके हाथों में किरोसीन के कनस्तर और लोहे की छड़ें थीं. पहले घर के बाहर खड़े होकर उन्होंने मुसलमानों के ख़िलाफ़ नारे लगाए. उस समय उन्हें रोकने वाला कोई नहीं था. शायद वे पूरी तैयारी से आए थे कि यदि इस समय उन्हें किसी ने रोका तो वे उन्हें भी नहीं छोड़ते. भीड़ ने पहले खिड़कियों के सहारे पूरे घर में पेट्रोल डाल दिया और फिर आग से जलती हुई मशाल जैसी कोई चीज़ उनके घर में फेंक दी गई. पूरा घर देखते देखते ही धू धू करके जलने लगा. बाग़ में फूलों के पौधों और पेड़ों पर पेट्रोल डालकर उन्हें भी जला दिया गया."

निलेश की बातें सुनकर विपुल के मन में एक गहरा अवसाद सा छा गया.

"तब पोथीवाला कहां थे." विपुल ने पूछा.

"तब तक भरत पटेल ने उन्हें कहीं पहुंचा दिया था."

"और उनकी बेटी." विपुल ने उनकी बेटी के बारे में पूछा.

"वह भी उन्हीं के साथ था."

"और सर का बेटा."

"वह उस समय कहीं बाहर गया हुआ था. सुबह जब उसने हुल्लड़ की ख़बर सुनी तब से घर नहीं लौटा बस केवल सर को बता दिया था कि वह कहां है."

निलेश से ये दास्तान सुनकर विपुल स्तब्ध रह गया. क्या हमने सारा ज्ञान, विज्ञान, शिक्षा इसलिए हासिल की है कि कुछ सिरफिरे लोग शहर के जाने माने लोगों को सरेआम इस तरह डराते रहें, उन्हें धमकाते रहें. हम अपने ही शहर की प्रतिभाओं का सम्मान नहीं कर सकते, उनकी जानमाल की हिफ़ाज़त नहीं कर सकते तो सभ्यता और संस्कृति की हिफ़ाज़त कैसे करेंगे, कैसे उन पर गर्व कर सकेंगे. उसके मन में कई सारे सवाल आए.

"अब कहां हैं सर." उसने पूछा

"हैं कहीं. अपने किसी दोस्त के घर."

"किसके घर." विपुल उनके सभी दोस्तों को जानता था.

"मुकंद भट्ट के यहां."

"कौन मुकंद भट्ट." विपुल ने पूछा.

"उनके विमर्श नाम की संस्था के सेक्रेटरी हैं."

"कहां रहते हैं."

"मुझे नहीं पता. अविनाश को पता है. वह ही उनको वहां ले गया था. पर कल अविनाश बता रहा था कि वे वहां से भी कहीं और जाना चाहते हैं."

"क्यों. वहां भी डर है क्या."

"उनके लिए तो सब जगह डर है."

"पर कहां जाएंगे."

"यह तो मालूम नहीं पर अभी भी माहौल ठीक नहीं है. अनजान जगह पर रहना ही उनके लिए ठीक है." निलेश ने बताया.

"तुम मिले थे उनसे."

"हां, मिला था."

"कब."

"जिस दिन यह हादसा हुआ, उसी दिन शाम को गया था. बेहद गुमसुम थे गोया किसी ने शरीर का सारा ख़ून ही बाहर निकाल लिया हो. बस कुछ बोले नहीं. हम लोग काफ़ी देर उनके साथ रहे लेकिन वे मौन ही रहे."

"अब कहां हैं." विपुल ने पोथीवाला के पते के बारे में जानना चाहा.

"अविनाश से बात हो तो पता चले." निलेश ने बताया.

"और अविनाश कहां है."

"वह भी उनके साथ है. आज सुबह उसने आने के लिए कहा था. जब तक हम घर पहुंचेंगे, तब तक शायद वह आ चुका होगा."

"उनका घर बचा कि पूरी तरह जल गया."

"सरकार ने उनके घर के सामने दो पुलिस वाले बिठा दिए हैं."

"जो होना था हो गया अब पुलिस बिठाने से क्या फ़ायदा. बेटी कहां है. वह भी उन्हीं के साथ है." विपुल ने पूछा.

"हां वह भी उन्हीं के साथ है और तुम्हें पता है कि उसकी शादी किसी पटेल के लड़के से हो रही है."

"अच्छा....." विपुल ने हैरानी व्यक्त की.

"सर ने केवल वैचारिक स्तर पर ही हिंदू मुस्लिम एकता की बात नहीं की बल्कि व्यावहारिक रूप से भी की." उसने दृढ़ता से कहा.

"पर हिंदू से शादी. उनका समाज इसे स्वीकार कर लेगा."

"न भी करे तो क्या फ़र्क़ पड़ेगा. वैसे भी उनके समाज वालों ने तो उन्हें अपने से अलग किया ही हुआ है."

"हां वो तो है." विपुल ने कहा.

और दूसरी बात यह भी है कि अफरोज़ ने अपनी मां के कहने पर कई वोहरा लड़कों को देखा था.

"तो क्या कोई पसंद नहीं आया."

"पसंद आना तो दूर, ज़्यादातर लड़के दक़ियानूस और कूढ़मग़ज़ ही निकले. विचारों में वही कठमुल्लापन. कोई लड़का इसे पसंद नहीं आया."

"यह लड़का....."

"इस लड़के को वह कॉलेज के दिनों से ही जानती थी. दोनों एक दूसरे को समझते हैं. एक दूसरे की भावनाओं का आदर करते हैं." निलेश ने उस लड़के के बारे में बताया.

"उस लड़के के परिवार वालों ने मुस्लिम लड़की को स्वीकार कर लिया." विपुल ने पूछा था.

"हां कर लिया है. यही तो सुखद है और सबसे अच्छी बात तो यह है कि इस माहौल में पटेल परिवार ने पोथीवाला का साथ नहीं छोड़ा. बहुत बड़ी बात है यह." उसके स्वर में ख़ुशी थी.

"पर सर को नातबार करने वालों ने कोई ऐतराज़ नहीं किया." विपुल ने पूछा.

"किया होगा लेकिन पता नहीं. तुम्हें तो पता कि सर किसी वोहरा समाज की मान्यताओं को नहीं मानते. न तो कोई मुसलमान उनके यहां आता है और न ही वे किसी के यहां जाते हैं. उन्हें कभी जमातखाने में भी नहीं बुलाया जाता. ऐसी

हालत में यदि किसी को एतराज़ हो भी तो हो. उनके एतराज़ से इनका क्या लेना देना. और फिर आजकल नातबार का कोई मतलब नहीं है. दुनिया बहुत बड़ी है. यह नातबार तो धार्मिक नेताओं ने अपना वर्चस्व क़ायम करने् के लिए बेमतलब का हौवा खड़ा किया हुआ है. आजकल समाज इतना आगे बढ़ चुका है कि इन ढकोसलों का कोई मतलब नहीं रह जाता." निलेश ने बताया.

वह धीरे धीरे गाड़ी चला रहा था. सुबह दस बजे का वक्त था. शहर की सड़कें वीरान और सुनसान थीं. उन सड़कों पर पुलिस की जीप बार बार दिखाई दे रही थी. सड़क पर इक्का-दुक्का वाहन ही थे. कहीं कोई हलचल नहीं थी. कहीं कोई भागदौड़ नहीं थी. सब कुछ शांत और वीरान. मरघट की सी शांति सड़कों पर पसरी हुई थी. कहीं कहीं फ़ायर ब्रिगेड की गाड़ी इस शांति को भंग करती दिखाई दे रही थी.

"लगता है फिर कहीं आग लग गई." विपुल ने फ़ायर ब्रिगेड की गाड़ी को देखते हुए कहा.

"पिछले दो दिनों से इस शंहर में आग ही आग है." अविनाश बता रहा था "कि रोज़ लगभग दो सौ टेलीफ़ोन फायर ब्रिगेड वालों के पास पहुंचते हैं. वे लोग भी कहां तक पहुंचें. पूरे शहर में चारों तरफ़ तो आग है. कहीं कहीं तो फ़ायर ब्रिगेड वालों को जाने भी नहीं दिया गया. आवारा लड़कों की भीड़ ने उन्हें गलियों के मुहाने पर ही रोक दिया और उन्हें धमकी दी कि यदि आग बुझाई तो उनकी गाड़ी में भी आग लगा देंगे."

"फिर?"

"फिर क्या. वे बेचारे वापस लौट गए."

विपुल ने खिड़की से बाहर देखा. सड़क पर खड़ी लारियां जला दी गई थीं. पान की दुकानें, चाय की दुकानें, छोटे छोटे खोखे सब जला दिए गए थे.

"यह देखो मॉडर्न कैमिस्ट की दुकान. पूरी तरह जल गई." उसने बाईं तरफ़ इशारा करते हुए कहा.

विपुल ने उस तरफ़ देखा. देखकर हैरान रह गया वह. पूरी दुकान जल कर राख हो गई थी. लोहे का मज़बूत शटर आग में जलकर मोम की तरह सिकुड़ सा गया था. दीवारें एकदम काली हो गई थीं. दुकान का बड़ा सा बोर्ड अधजला टूटकर नीचे गिर गया था. फ़र्श पर अधजली दवाइयां पड़ी हुई थीं. जब वह बड़ौदा में था तो इसी दुकान से न जाने कितनी बार उसने दवाइयां ली थीं.

निलेश ने एक क्षण के लिए गाड़ी उस दुकान के पास रोक दी.

विपुल गाड़ी से उतरकर दुकान की तरफ़ गया. दुकान के अंदर दो तीन लोग

थे जो जले हुए सामान को बाहर निकाल रहे थे.

विपुल को देखकर. दुकान के एक बुजुर्ग ने उसे पहचान सा लिया था.

"हमने क्या बिगाड़ा था इनका." दुकान के उस बुजुर्ग ने जले हुए सामान को बाहर निकालते हुए कहा था.

उसकी आवाज़ कांप रही थी. दुकान की ढेर सारी दवाइयां फ़र्श पर बिखरी पड़ी थीं. वे दवाइयां कइयों का इलाज कर सकती थीं. कइयों को ठीक कर सकती थीं.

"कौन लोग थे." विपुल ने उस बुजुर्ग से पूछा.

"सामने के मोहल्ले के चोर और उचक्के लोग थे."

"कब हुआ यह सब."

रात के दो बजे के बाद ही यह हुआ. दो बजे तक तो हम लोग दुकान में ही थे." वह अपनी दास्तान बताने लगा था.

विपुल को उनसे बातें करते देख निलेश ने उसे चलने का इशारा किया और फुसफुसाते हुए कहा कि यहां खड़े रहना ठीक नहीं है.

वह चुपचाप आकर कार में बैठ गया.

"आज बंद का ऐलान है." निलेश ने बताया.

"बंद... कैसा बंद."

"आज बंद का ऐलान किया है."

"तभी सारी सड़कें सुनसान हैं."

"सुनसान ही नहीं, इन सड़कों में एक डर भी है."

सारी दुकानें बंद थीं. स्कूल कॉलेज सब बंद थे. कारोबार बंद. दफ़्तर बंद. बसे बंद. बाज़ार बंद. सब ठप्प. शहर की सड़कें ही नहीं पूरी सोसायटी सुनसान थी. पता नहीं यहां रहने वाले लोग कहां चले गए थे.

"पूरे गुजरात को सेना के हवाले कर दिया गया है." निलेश ने आर्मी के एक ट्रक को देखते हुए कहा.

"लेकिन तबाही तो बहुत हुई है."

"सेना के बुलाने में इतनी देर जो की इन लोगों ने."

"सेना के आने से कुछ फ़र्क़ पड़ा."

"कुछ तो हुआ है पर कोई ख़ास नहीं. पूरी स्थितियों का जायज़ा तो बाद में पता चलेगा. गुजरात में कई शहर ऐसे हैं जहां पहली बार कर्फ़्यू लगाया गया. इस बार पूरे प्रांत में ज़हर फैल गया."

"इस आग ने न जाने कितने लोगों को ज़िंदा जला दिया. न जाने कितनों के घर उजाड़ दिए. न जाने कितने तबाह हो गए. यह आग हमारे समय की सबसे

भयानक आग है. इस आग से तबाही पूरे शहर में हुई." विपुल ने कहा.

"हां, इस बार तबाही पूरे शहर में हुई. पूरा शहर तीन भागों में बंट चुका है. एक भाग में वे लोग हैं जो पॉश इलाक़े में रहते हैं और शहर में हो रही घटनाओं को उत्सुकता से देख रहे हैं. दूसरा भाग पुराने शहर का है जहां जले हुए घर और जली हुई दुकानें हैं. जहां डर और दहशत ज़्यादा है. जहां की गलियों के मुहानों पर झुंड बनाकर लोग खड़े हुए मिल जाएंगे और देखी हुई घटनाएं आपको बता रहे होंगे और तीसरे भाग में शहर का मध्यवर्ग है जो अपनी खिड़कियों और अपने घरों की छतों से शहर के अंदर उठते हुए धुएं को देखता है." उसने बताया.

निलेश की बातें सुनकर घर पर पहुंचते पहुंचते मन में एक अजीब विषाद सा छा गया. ऐसा लग रहा था कि कोई डरावने जानवरों के आतंक से पूरा शहर त्रस्त हो गया था. बेहद क्षोभ था उसके मन में.

घर पहुंच कर निलेश ने कहा, "नहा धो लो. चौबीस घंटे के सफ़र में थक गए होगे. अविनाश अभी तक आया नहीं है. शायद कुछ देर बाद आए."

6

नहाने के बाद भी विपुल के मन पर छाया अवसाद ख़त्म नहीं हुआ था. बार बार पोथीवाला का चेहरा ही उसके ज़ेहन में उभरता. रह रह कर अपने दोस्तों की याद आती जिनके साथ वह अक्सर उनके घर जाता था. कहां है वह सब.

निलेश की पत्नी ने टेबल पर नाश्ता लगा दिया था. गर्म चाय, टोस्ट और चेवड़ा.

विपुल को देखते हुए उसने कहा, "बहुत दिनों बाद आए."

"हां, इस बार बहुत दिनों बाद आना हुआ. क्या करूं प्राइवेट कंपनी की नौकरी जो है. कोई कॉलेज की नौकरी तो है नहीं कि पूरा साल छुट्टी ही छुट्टी."

विपुल निलेश को अक्सर छेड़ता था कि तुम लोग कॉलेज में पढ़ाते हो या मटरगश्ती करते हो. जब चाहो कॉलेज जाओ जब चाहो न जाओ. चाहो दो दो क्लासों को मिलाकर एक ही पीरियड ले लो.

पर निलेश भी अक्सर कहा करता था, "तुम्हें क्या पता कि कितना काम करना पड़ता है. पढ़ाने से पहले कितना पढ़ना पड़ता है. तुम्हारी तरह तो है नहीं कि रोज़ सुबह दफ़्तर गए, कुछ काग़ज़ काले किए और आ गए वापस अपने घर. जिम्मेदारी का तो कोई एहसास ही नहीं."

"अब हमें न सिखाओ ज़िम्मेदारी." विपुल बात को टाल देता था.

"क्या बताऊं प्राइवेट कंपनी में छुट्टी लेना भी एक टेढ़ी खीर है." उसने निलेश की पत्नी को बताया.

"हां वो तो है." उसने विपुल की बात का समर्थन किया.

"कहां हैं अहमद खां, सौरभ सिन्हा और जितेंद्र दवे और बाक़ी हमारे संगी साथी. हमारे आंदोलन के हीरावल दस्ते." नाश्ता करने के बाद उसने अपने दोस्तों के

बारे में जानना चाहा था.

निलेश विपुल की बात सुनकर मुस्करा दिया. गोया कह रहा हो कि क्या तुम जानते नहीं हो जो मुझसे पूछ रहे हो.

"सब अपने अपने में मगन हैं. अपने बीवी-बच्चों के साथ मज़े से जीवन काट रहे हैं." उसने थोड़ी लापरवाही से कहा.

"वह आग है उनमें अभी तक.या ख़त्म हो गई."

उसकी बात सुनकर निलेश मुस्करा दिया. कहने लगा कि "पूछ तो तुम ऐसे रहे हो जैसे कुछ जानते ही न हो."

विपुल वाक़ई इन लोगों के बारे में बहुत कुछ नहीं जानता था. सब कॉलेज के साथी थे उसके. कॉलेज से निकलने के कुछ समय बाद तक तो इन लोगों से उसका संबंध रहा. सबकी शादियों में आना जाना रहा लेकिन बाद में ये संबंध कब धूमिल से हो गए, पता ही न चला. सब अपने बेहतर जीवन की तलाश में यह शहर छोड़कर चले गए. कुछ तो इसी शहर में थे लेकिन कभी उनसे न तो मिलना हो पाता था और ही कभी टेलीफ़ोन या चिट्ठी वग़ैरह. वह भी दिल्ली में अपने परिवार और नौकरी में इतना मसरूफ़ रहता कि इनकी तरफ़ ध्यान ही न दे पाता. बस पुरानी स्मृतियां ज़रूर थीं उसके मने में. आज जब वह इस शहर में आया है तो पुरानी स्मृतियां उसके मन में एकाएक ताज़ा हो गईं.

"सबने अपने अपने रास्ते तलाश कर लिए हैं. इसी व्यवस्था से बेहतरी की उम्मीद लगाए. अब तो इसी व्यवस्था को मज़बूत करने में लगे हैं सब." निलेश ने उसे बताया.

"क्या करें और कोई विकल्प जो नहीं था." विपुल ने कहा.

"नहीं विकल्प तो हो सकता था लेकिन वही बात कि तुझसे भी दिल फ़रेब थे ग़म रोज़गार के." निलेश ने कहा.

"रोज़गार तक तो ख़ैर बात समझ में आती है लेकिन उसके बाद वह माद्दा तो बचा रहना चाहिए." विपुल ने कहा.

"कुछ नहीं बचा. सब ख़त्म हो गया. नर्मदा प्रसाद बड़ौदा से पचास किलोमीटर दूर गांव के किसी कॉलेज में लेक्चरर हो गया है. इतिहास पढ़ाता है."

"गांव के कॉलेज में."

"हां गांव के कॉलेज में.

"और सुरेश श्रीवास्तव."

"वह किसी मल्टीनेशनल में एग्ज्यूक्टिव हो गया है. आजकल हवाईजहाज पर उड़ता है. खूब मोटा हो गया है. मिलोगे तो पहचान भी नहीं सकोगे."

"कहां है वह."

"इसी शहर में रहता है."

"तुम मिलते हो उससे."

"कभी कभार ही किसी मौक़े पर मिल जाए तो मिल जाए. वैसे मुलाक़ातें नहीं होतीं."

"और रफीक अहमद." विपुल ने उसके बारे में पूछा.

"धंधा करता है यहां बड़ौदा में इलेक्ट्रॉनिक गुड्स की बहुत बड़ी दुकान है उसकी. पूरी तरह बदल गया है. पांचों वक्त की नमाज़ पढ़ता है. रोज़े रखता है. गोल ग़ोल टोपियां पहनता है और वह सब करता है जिसे न करने के लिए कॉलेज में लोगों को प्रेरित करता था."

"और रंजना कांटावाला."

"उसने अपने डॉक्टर पिता के कहने से शहर की पॉश कॉलोनी में एक नर्सिंग होम खोल लिया है. खूब पैसे कमा रही है. उसका पति भी डॉक्टर है. आज बड़ी से बड़ी सामाजिक घटना पर उसकी कोई प्रतिक्रिया नहीं होती."

"और धर्मपाल."

"कौन धर्मपाल. सिविल परीक्षाओं की तैयारी करने वाला धर्मपाल...."

"हां, वही धर्मपाल."

"शेयरों का धंधा करता है. शेयर ख़रीदता और बेचता है. यह जीवन इतना आसान नहीं है जितना हम लोग कॉलेज में सोचा करते थे. सबने अपने अपने रास्ते तलाश कर लिए हैं. और करते भी क्या सिर्फ़ कॉलेज के खवाबों के सहारे तो ज़िंदगी नहीं काटी जा सकती थी. बस तुम, मैं और अविनाश हैं जो पता नहीं किस मोहपाश में अभी भी उसी विचार से लिपटे हैं. अविनाश हम लोगों से आगे है. अभी भी उसमें ओज है. अभी भी उसमें एक ग़ुस्सा है. इस निज़ाम के ख़िलाफ़ है और अपने ग़ुस्से का इज़हार भी करता है अपने लेखों में, अपनी कविताओं में. अपने छात्रों को अभी भी इस सिस्टम के ख़िलाफ़ तैयार करने की कोशिश करता है. अभी भी उन्हें मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन की जीवनियां पढ़ने को देता है. अपने लेखों, कविताओं और ग़ज़लों में सच्ची बात कहता है. बच्चों को अभी भी पूंजीवाद, साम्राज्यवाद और बाज़ारवाद के बारे में समझाने की कोशिश करता है. बाकी तो सब लोग बिखर गए." निलेश के स्वर में कुछ बेचैनी सी थी.

"ज़मीन से जुड़ा संघर्ष चलाया जाता तो कुछ आसार बन सकते थे." विपुल ने कहा

"हां, हमें नैतिक स्तर पर लड़ाई लड़नी चाहिए थी. आर्थिक स्तर पर लड़ाई लड़ने की ज़रूरत थी. सांस्कृतिक स्तर पर लोगों को समझाने की ज़रूरत थी. लोगों को अपने साथ रखने की ज़रूरत थी. वह नहीं हुआ और सब बिखर गया."

उसके स्वर में गहरी उदासी थी.

"उन दिनों सोचा नहीं था कि हम लोगों के आंदोलन का हश्र इस तरह होगा. डाउन डाउन इम्पीरियलिज़्म के नारे उछालते उछालते हम लोगों का मूवमेंट ही डाउन हो गया." विपुल ने कहा था.

भीतर ही भीतर हम सबको एक गहरा अफ़सोस भी था.

"आज पता है पार्टी के होल टाइमरों की क्या हालत है. हम लोग तो छात्र थे. न कुछ समझते थे न जानते थे, बस एक जनून था."

"ज़रूरत उस जनून को बनाए रखने की थी."

"यह नहीं हो सका और और सब लोग बिखर गए."

"कौन आया है अंदर." दूसरे कमरे से एक आवाज़ आई. यह निलेश की मां थीं.

निलेश ने बताया कि विपुल आया है.

तब तक वह हमारे कमरे आ चुकी थीं.

विपुल ने उन्हें नमस्ते की.

मां विपुल को देख खुश हो गईं, "अरे बेटा तुम कब आए. सब ठीक तो है. अनीता तो ठीक है. अकेले आए हो या उसे भी साथ लाए हो. बेटा कैसा है तुम्हारा. अब तो बहुत बड़ा हो गया होगा." उन्होंने सवालों की झड़ी लगा दी थी.

पिछले दस सालों से विपुल निलेश के घर आ रहा था. उन्होंने हमेशा विपुल को निलेश जैसा ही समझा. विपुल की पढ़ाई, उसके स्वास्थ्य का वे हमेशा ख़्याल रखतीं. जब भी कभी वह निलेश के यहां आता और उन्हें पता चलता कि उसे खांसी या जुकाम है तो कोई न कोई देसी दवाई उसे ज़रूर देतीं. कहतीं इससे आराम जल्दी आ जाएगा. तन ठीक रहेगा तो पढ़ाई में भी मन लगेगा. निलेश के पिता की मृत्यु होने के बाद वे एकदम अकेली हो गई थीं. पूजा पाठ और मंदिर तक ही उन्होंने अपने जीवन को सीमित कर दिया था. हमेशा निलेश की चिंता ही उन पर सवार रहती. हालांकि चिंता की कोई बात नहीं थी लेकिन फिर भी वे किसी आशंका से हमेशा ग्रस्त रहती थीं. निलेश की पत्नी भी उनका काफ़ी ख़्याल रखती थी लेकिन पता नहीं क्यों उनका मन इस शहर से उचट गया था. वे बार बार इस वृद्धावस्था में अपने गांव जौनपुर जाना चाहती थीं. अपने पिता के घर, हालांकि उनके अपने पिता को मरे बीस साल से ज़्यादा वक़्त हो गया था, अपने भाइयों के घर, अपने मामाओं के घर, अपनी बहनों के घर. निलेश उन्हें बार बार समझाता कि अम्मां इस उम्र में वहां जाना ठीक नहीं है. अब पहले जैसा माहौल नहीं रहा. दादा के जाने के बाद उस घर में तुम्हारी पहली जैसी क़द्र नहीं होगी. लेकिन उन्हें

यही लगता था कि वो घर तो उनका अपना है. उनके पिता हों या न हों. घर तो उनका अपना है. निलेश के पिता के न रहने पर उन्हें अपना गांव रह रह कर याद आता था.

"नहीं अकेला ही आया हूं. इसने बुलाया था तो आ गया." विपुल ने उनके सवालों से बचते हुए कहा.

"कैसी है दिल्ली तुम्हारी." निलेश की मां ने पूछा.

उनके मन में दिल्ली के प्रति एक आकर्षण था. एक बार गई थीं दिल्ली. निलेश के साथ जौनपुर जाते समय दिल्ली देखने. दिल्ली बहुत रास आई थी उन्हें. सदियों को इतिहास अपने में समेटे दिल्ली का राजघाट, विजयघाट, कुतुब मीनार, लाल क़िला, शीशगंज गुरुद्वारा, जैन मंदिर, बिरला मंदिर. आधुनिकता के प्रतीक बड़े बड़े फ्लाई ओवर, दिल्ली की तेज रफ़्तार, भागते हुए लोग, भागती हुई गाड़ियां, साफ़ सुथरा शहर, लंबी चौड़ी सड़कें, बड़े बड़े बाग़, लोगों के रहने का अंदाज, लोगों में खाने का अद्‌भुत शौक. बड़े बड़े बाज़ार, हर चीज़ हर जगह पर उपलब्ध. वे मोहित हो गई थीं इस दिल्ली पर. निलेश को भी कहती थीं कि इसी शहर में नौकरी मिल जाए तो अच्छा है. कितना खूबसूरत शहर है यह.

"दिल्ली तो वैसी है जैसी थी."

"पर क्या हो रहा तुम्हारी दिल्ली में," निलेश ने पूछा.

"होना क्या है."

"होता तो सब कुछ तुम्हारी दिल्ली से ही है. बागडोर तो तुम्हारी दिल्ली के हाथ में ही रहती है."

इतने में कमरे में अविनाश ने प्रवेश किया. विपुल को देखकर हैरान रह गया. खुश भी बहुत हुआ. गले मिलते बोला, "अरे तुम.... कब आए."

"बस अभी अभी आ ही रहा हूं."

"कुछ खास काम या केवल सर से ही मिलने आये हो." उसने विपुल से पूछा.

"नहीं कोई खास काम नहीं है. बस तुम्हीं लोगों से मिलने आया हूं."

"अच्छा किया तुम आ गए. सर के साथ बहुत बुरा हुआ."

"कैसे हुआ था यह सब." विपुल ने बात का रुख बदल दिया.

"किसी अफवाह की तरह खबर आई थी कि सर की गाड़ी को जला दिया गया." अविनाश ने बताया.

वह कुछ परेशान सा लग रहा था.

"तुम लोगों ने कुछ नहीं किया. तुम्हारा घर तो एकदम पास ही है."

"जब तक हम लोग पहुंचते तब तक बहुत देर हो चुकी थी और हालात ऐसे थे कि कोई भी कुछ नहीं कर सकता था. कम से कम चार पांच हज़ार लोग रहे

होंगे." अविनाश ने बहुत निराश होकर कहा.

"आखिर गोधरा में हुआ क्या था. तुम तो विमर्श में बहुत सक्रिय हो और एक लंबे अर्से से इन ताकतों के खिलाफ़ लड़ भी रहे हो. तुम्हीं कुछ ठीक से बता सकोगे. अख़बारों में तो न जाने क्या क्या छपा है." विपुल ने जानना चाहा था.

"होना क्या है. कार सेवक अयोध्या से लौट रहे थे. हर स्टेशन पर शरारत कर रहे थे. हर स्टेशन पर खोमचे वालों को परेशान कर रहे थे. पूरी गाड़ी में उपद्रव कर रहे थे."

"फिर."

"पूरी गाड़ी में यात्रियों से जय श्रीराम के नारे लगवा रहे थे और उन्हें हिंदू धर्म का पाठ पढ़ा रहे थे. और यह केवल उसी दिन नहीं हुआ था बल्कि पिछले कई दिनों से हो रहा था. यही उपद्रव, यही यात्रियों से छेड़छाड़, उन्हें परेशान करना. ऐसे में लोग कब तक सहनशील रहें, कब तक चुप रहें. घृणा का लगातार माहौल बनाया गया और यह घृणा एक लंबे अर्से तक फैलायी गई. आज पूरे प्रांत में मुसलमानों के खिलाफ़ यह घृणा है और बहुत गहरी है. मुसलमानों के खिलाफ़ प्रचार और घृणा का माहौल इतना ज्यादा है कि मुसलमान डरे हुए हैं. वे सहमे हुए हैं और उनके इसी डर का परिणाम है गोधरा कांड." उसने विस्तार से बताया था.

"पर देखते ही देखते डिब्बे में आग लगा देना. लोगों को जिंदा जला देना. लोगों ने भागने की कोशिश तो की होगी."

"कुछ समझ में नहीं आता. कोशिश तो की थी डिब्बे से बाहर भागने की. लेकिन डिब्बे की खिड़कियों के दरवाजों पर पेट्रोल डाल दिया गया था. खिड़कियों को बंद कर दिया गया था."

"यह तो बहुत ही निर्मम है."

"गाड़ी पांच मिनट बाद सिग्नल के बाहर रोकी गई. लगभग पांच सौ लोगों की भीड़ पेट्रोल और मिट्टी के तेल के कनस्तर लिए रेलवे लाइन के दोनों ओर खड़ी थी गोया किसी बड़े युद्ध की तैयारी के लिए खड़े हुए हों. पहले उन्होंने डिब्बे के अंदर पत्थर फेंके. पत्थरों से बचने के लिए लोगों ने डिब्बे की खिड़कियां बंद कर दीं. उस हिंसक भीड़ ने डिब्बे को बाहर से बंद कर दिया और पेट्रोल छिड़क कर उसमें आग लगा दी. और उस आग का असर तुम्हारे सामने है." उसने पूरी कहानी बताई थी.

"लोगों ने बचने का कोई रास्ता तो निकाला होगा."

"रास्ता कैसे निकालते."

"किसी ने डिब्बे के अंदर जाकर कोई कैमिकल डाला होगा जिसकी वजह से डिब्बे में आग फौरन लग गई और कोई बच नहीं सका. भागने के कोई रास्ते उनके

सामने नहीं बचे और पता है तुम्हें यह कैमिकल इजराइल से लाया गया." उसने ऐसे कहा गोया किसी रहस्य से पर्दा उठा रहा हो.

"पर यहां आया कैसे. आसानी से तो मिलता नहीं और इसराइल से लाना आसान तो नहीं है." विपुल के मन में सवाल आया.

"कहा तो यही जाता है कि कच्छ के भूकंप के दौरान टूटी हूई इमारतों को गिराने के लिए इस कैमिकल को काम में लिया गया था. वहीं से यह कैमिकल आया था और फिर इतने सीधे भी नहीं हैं ये लोग. यही तो मौका मिला था उन्हें." अविनाश ने बताया .

"यह भी कहा जाता है कि हर अपराध का रास्ता गोधरा से होकर निकलता है." विपुल ने पूछा.

"ऐसा तो नहीं है. अपराध क्या हिंदू नहीं करते. इस तरह देखना ही गलत है. सिग्नल फालिया एक ऐसी जगह है जहां लुम्पन एलीमैंट रहते हैं. उन लोगों ने गैर कानूनी रूप से घर बनाए हुए हैं. बिल की चोरी इसी इलाके में होती है. इसी इलाके में सारे गलत काम होते हैं. रेलवे के सामान की चोरी इसी इलाके में होती है. बस इतना ही है. और इस तरह के इलाके तो देश के हर शहर में कहीं न कहीं मिल ही जाएंगे."

"पर इससे एक बात तो साफ है यदि आज हम दूसरे धर्म की भावनाओं का सम्मान नहीं करेंगे, उनकी कद्र नहीं करेंगे, उन्हें लगातार यह एहसास कराते रहेंगे कि यह देश तुम्हारा नहीं है. तुम्हारे लिए यहां जगह नहीं है. तुम्हारे लिए तो अलग देश बना दिया गया है तो ऐसी ही भयानक स्थितियां पैदा होंगी. ऐसे ही नरसंहार होंगे. ऐसे ही हिंसक संदर्भ सामने आएंगे." विपुल ने कहा.

"वो तो है." उसने विपुल की बात का समर्थन किया.

"पर एक बात समझ में नहीं आई कि अचानक इतने सारे लोग कैसे इकट्ठे हो गए. वह भी मिट्टी के तेल और पेट्रोल के साथ."

"कोई इसे पाकिस्तान की साजिश कहता है तो कोई कुछ... दरअसल गोधरा के मुसलमान घांची मुसलमान हैं और ये जाट किस्म के लोग हैं. ये स्वभाव से थोड़े उग्र और उद्दण्ड होते हैं. गोधरा के सारे मुसलमान भी इनसे परेशान रहते हैं."

"लेकिन तमाम उद्दण्डता के बावजूद ये लोग इतना बड़ा हादसा कर सकते हैं." विपुल ने शंका से कहा.

"अंदाजा उनको भी नहीं था कि बात इतनी बढ़ जाएगी. वैसी ही बात हुई कि खेल खेल में एक आदमी मर गया. मारने वाले ने कहा मैंने तो केवल डराने के लिए ही घूंसा मारा था मुझे क्या मालूम था कि यह मर ही जाएगा. बस कुछ ऐसी ही बात हुई. अंदाजा उनको भी नहीं था कि उनकी एक हरकत से पूरे प्रांत में आग

लग जाएगी. और एक बात. यह तो एक बहाना था. गोधरा के घांची मुसलमान यदि यह हरकत नहीं करते तो कुछ न कुछ और होता."

"ऐसा कैसे?"

"पूरे प्रांत में हिंसा और घृणा का माहौल था. पूरे प्रांत में उन्माद फैलाया जा रहा था. लगातार. यह पूरी सोची समझी साजिश के तहत हो रहा था. दिल्ली में लोग जब इसी नीयत से बैठे हों तो कोई नहीं रोक सकता." अविनाश ने बताया था

"आज तुम देखो मुसलमानों के खिलाफ़ जहरीले प्रचार के कारण कैसा माहौल बन गया है. रास्ते में चौराहों पर, प्लेटफॉर्म पर, पार्क में, रेल के डिब्बों में, दफ्तरों में, दुकानों में, बाजारों में एक भी आदमी मुसलमानों की तारीफ करता नहीं दिखाई देता. उन्हें हिकारत से देखता है. उनकी बेकारी, बदहाली, गरीबी पर बात करता नहीं दिखाई देता .उनकी गंदी बस्तियों के बारे में बात नहीं करता. वहां कुछ जरूरी सुविधाएं दी जाएं, इस पर बात नहीं करता. उनकी अशिक्षा पर बात नहीं करता. उनके इलाके में ढंग के स्कूल हों इस पर कोई बात नहीं करता. उन्हें सब पाकिस्तानपरस्त, चार चार शादियां करने वाले, बच्चे पैदा कर अपनी आबादी बढ़ाने वाले कहकर ही उनकी तरफ घृणा से देखते हैं. देश के विकास में उनके योगदान की कोई तारीफ नहीं करता. मुसलमानों के प्रति तिरस्कार और घृणा लोगों के रोम रोम में बसी है." उसके स्वर में हिकारत थी.

"पर लंबे समय से ऐसा माहौल तो बनाया गया था."

"गोधरा में दंगों का इतिहास लंबा है. हिंदू और मुसलमानों की आबादी बराबर है. मुसलमानों में ज्यादातर घांची समुदाय के हैं, जो गरीब और पिछड़े हैं. इन घांची मुसलमानों को हिंदू हमेशा शक की निगाह से देखते हैं. इन पर यकीन नहीं करते. इन्हें चोर समझते हैं. इन सबके पाकिस्तान से संबंध हैं. ये लोग सैंतालीस में पाकिस्तान से ही आए हुए हैं. गोधरा में इन लोगों ने छोटा सा पाकिस्तान बना रखा है. आए-दिन ये लोग कराची में जाते हैं. पाकिस्तान के मौलवी इनकी मस्जिदों में हैं. खबर तो यह भी है कि अहमदाबाद के अंडरवर्ल्ड माफिया का भी हाथ है." उसने विस्तार से बताया.

"पोथीवाला इस समय कहां हैं." विपुल ने पूछा.

"इस समय कहां है यह तो ठीक ठीक पता नहीं." अविनाश ने कहा.

"पर तुम तो उनके साथ थे." निलेश ने कहा.

"हां कल तक मैं उनके साथ था. उन्हें फतेहगंज में छोड़कर आया था. पर वहां से आज वे कहीं और जाने वाले थे."

"कहां?" विपुल ने पूछा.

"यह तो पता नहीं," उसने बताया.

"तो उनसे मिलने का कोई जरिया नही." विपुल ने कहा.

"नहीं. जरिया तो है. तुम लोग उनसे मिलना चाहते हो तो फतेहगंज में नोबल कैमिस्ट की एक दुकान है. वहां जाकर कहना कि उनकी बहन डॉ. फातिमा अहमद, जो नुरानी अस्पताल में हैं, ने ही तुम लोगों को वहां भेजा है. वहां से तुम लोगों को उनका पता चल जाएगा." उसने बताया.

"तुम नहीं चलोगे." निलेश ने पूछा.

"नहीं, मैं नहीं चल सकता. मुझे कॉलेज जाना है."

"आज तुम्हारा कॉलेज खुला होगा." निलेश ने जानना चाहा.

"हां खुला है. खोलने वाले भी हमीं लोग हैं. मैंने कुछ छात्रों को वहां बुलाया है. देखें हम लोग क्या कर सकते हैं इस माहौल में. तुम लोग जाओ." उसने बताया.

7

नूरानी अस्पताल के सामने एक छोटी सी गली थी. गली के नुक्कड़ पर नोबल कैमिस्ट की दुकान थी. बड़ी सी दवाओं की दुकान. सड़क से कुछ ऊंची. दुकान के अंदर जो लोग थे उनके पहनावे और चेहरों को देखकर लगता था कि यह दुकान किसी मुसलमान की है. विशेष अंदाज से कटी हुई दाढ़ी. लंबी शेरवानी पहने उम्रदार व्यक्ति. दुकान में काम करने वाले लड़कों के सिर पर गोल गोल टोपियां.

दुकान को देखते हुए निलेश ने कहा, "यही दुकान है जिसका पता अविनाश ने बताया था. शायद पोथीवाला के रिश्तेदार हैं ये लोग. यहीं से उनका पता चलेगा."

"पर अपने रिश्तेदारों के पास वे क्यों आएंगे." विपुल ने पूछा.

"यह तो पता नहीं पर यही पता अविनाश ने बताया था." उसने कहा.

वे लोग सीढ़ियां चढ़कर दुकान के ऊपर गए. दुकान में काम करने वाले दो तीन लड़के बड़ी उत्सुकता से उन लोगों को देखने लगे थे. दुकानदार एक अधेड़ आदमी था. लंबा चेहरा. छोटी आंखें. दाढ़ी में मेंहदी लगी हुई. आंखों में चमक. सिर सफाचट. लंबा कुर्ता और पायजामा पहने. उन्हें दुकान के अंदर आते देख वह अपने स्टूल से उठ खड़ा हुआ. उसने गौर से उन दोनों की तरफ देखा. फिर बोला, "कहिए."

"वो पोथीवाला.... बता सकेंगे कहां मिलेंगे वो." निलेश ने धीरे से पूछा.

दुकानदार चौंक गया निलेश से यह नाम सुनकर.

"कौन पोथीवाला."....उसने शक की निगाह से उन लोगों की तरफ देखते हुए पूछा.

"वो यूनिवर्सिटी में पढ़ाते हैं, न्यूकलर साइंस के प्रोफेसर." निलेश ने बताया.

"मैं किसी पोथीवाला को नहीं जानता." उसने उपेक्षा से कहा गोया उनसे अपना पीछा छुड़ाना चाहता हो.

"देखिए आप हमें गलत समझ रहे हैं. हम वो नहीं हैं जो आप समझ रहे हैं." निलेश के स्वर में याचना थी.

"कौन हैं आप." उसके स्वर में उद्दण्डता आ गई थी गोया वे कोई कातिल हों और पोथीवाला का पता पूछ रहे हों.

"देखिए हम उनके स्टूडेंट्स हैं. उन्होंने हमें पढ़ाया है." निलेश ने कहा.

"कहां से आए हैं आप." उसका तनाव कुछ कम हुआ था.

"मैं यहीं रहता हूं. शमा में. कॉलेज में पढ़ाता हूं. यह दिल्ली से आए हैं उनका हालचाल जानने. उनसे मिलने. उनके साथ जो कुछ हुआ उसका हमें बहुत दुख है. उनकी खबर सुनकर ही ये आए हैं दिल्ली से." निलेश ने विपुल की तरफ इशारा करते हुए कहा.

निलेश की बातों का उस पर असर हुआ. उसके चेहरे पर आया हुआ तनाव कुछ कम हो गया.

"क्या करते हैं आप." उसने विपुल की तरफ देखते हुए कहा.

उसके स्वर में कोमलता आ गई थी.

"मैं..." विपुल ने हैरानी से पूछा.

"हां आप..." उसने विपुल से आंखें मिलाते हुए कहा.

"इंजीनियर हूं. टाटा कैमिकल्स में काम करता हूं. दिल्ली में." विपुल ने अपना परिचय दिया.

"क्यों मिलना चाहते हैं उनसे. पहले कब मिले थे उनसे. आपको यहां का पता किसने दिया. कब से जानते हैं. आपके साथ और कौन कौन है. यहां कैसे आए. आपके पास अपनी गाड़ी है या ऑटोरिक्शा से आए हैं."

उसने सवालों का जखीरा उनके सामने रख दिया.

निलेश ने उनके सारे सवालों का जवाब देते हुए कहा, "हम उन्हें बेहद अच्छी तरह जानते हैं बल्कि हम उनके परिवार के सदस्य जैसे हैं. जबसे उन्होंने शमा का अपना घर छोड़ा है तब से हमारा दोस्त अविनाश उनके साथ था. वे उन्हीं की गाड़ी में पहले मैमन कॉलोनी गए थे. जब वहां हालात खराब हो गए तो हमारा दोस्त अपनी गाड़ी में कल शाम को ही आपकी दुकान पर छोड़ गया था. उस समय आपके और रिश्तेदार भी मौजूद थे. हमें यह भी पता है कि नूरानी अस्पताल में उनकी बहन डाक्टर हैं डॉ. फातिमा अहमद और उन्होंने ही यहां का पता हमें दिया है.

उसे अंदाजा नहीं था कि उसके सवालों के जवाब में उसे इतनी सारी जानकारी मिल जाएगी. निलेश की बातें सुनकर उसे यकीन हो गया कि वे लोग वाकई जैनुइन लोग हैं और पोथीवाला के शुभचिंतक हैं तो उसका स्वर बदल गया.

स्वर में मिठास आ गई. कहने लगी "माफ कीजिएगा. मैंने आप लोगों को पहचाना नहीं. आजकल माहौल ही ऐसा है इसलिए पूछना पड़ा. आप ऐसा करिए दुकान की सीढ़ियां उतरकर बाएं हाथ को चले जाइए." उसने बाईं तरफ इशारा करते हुए कहा, "आठ दस दुकानों के बाद अल्फा जैरोक्स की एक दुकान मिलेगी. उसी के साथ वाली गली में चले जाइए. गली के अंदर आपको मॉडर्न क्लास का एक बोर्ड दिखाई देगा. उसके जीने के ऊपर चले जाइए. ऊपर जाकर आपको दो फ्लैट दिखाई देंगे. एक हरे दरवाजे का और एक सफेद दरवाजे का. आप हरे दरवाजे में कॉलबैल बजाइए. एक बुजुर्ग से सज्जन दिखाई देंगे. वे मेरे वालिद हैं. आप उनसे कहिए कि बाकर भाई ने भेजा है. वे आपको पोथीवाला तक ले जाएंगे. सामने की गली में एक घर है. पोथीवाला आजकल वहीं रहते हैं."

दुकान की सीढ़ियां उतरते निलेश को ग़ुस्सा आ गया. कहने लगा, "हद हो गई यार, सर का पता लेने में इतनी मशक्कत करनी पड़ी."

"क्या करें आजकल माहौल ही ऐसा है. हर आदमी एक दूसरे को शक की निगाह से देख रहा है. उसने भी यही सोचा होगा कि हम भी उन्हीं लोगों में से हैं जिन्होंने पोथीवाला के घर में आग लगाई थी और उनका पता खोजते खोजते यहां तक आ गए हैं. देख नहीं रहे थे तुम दुकान के लड़के कैसे हम लोगों की बातें ध्यान से सुनते हुए हमें घूर रहे थे." विपुल ने कहा.

निलेश ने हरे रंग के दरवाजे पर कॉलबैल बजाई. एक भद्र महिला प्रकट हुई. सशंकित नज़रों से उसने उन लोगों की तरफ देखा. उन्हें दरवाजे पर देखकर वह डर सी गई.

"कहिए क्या काम है." उसने डरते डरते पूछा.

"पोथीवाला यहीं रहते हैं." निलेश ने पूछा.

"यहां नहीं रहते." उसने झुंझलाते हुए कहा और दरवाजा बंद करने की कोशिश की.

निलेश ने दरवाजे को बंद होने से रोक लिया और कहा, "देखिए नोबल कैमिस्ट के बाकर भाई ने हमें यहां भेजा है. उन्होंने ही बताया है कि पोथीवाला यहीं रहते हैं."

बाकर भाई का नाम सुनकर वह थोड़ी संयत हुई. कहने लगी वे यहां रहते थे. अब नहीं रहते."

कहकर उसने फिर से दरवाजा बंद करने की कोशिश की.

निलेश ने अपने हाथ के जोर से दरवाजे को बंद होने से रोक दिया और अपनी आवाज में मिठास लाते हुए कहा, "देखिए हम उनके स्टूडेंट्स हैं. उनसे मिलना जरूरी है. ये दिल्ली से आए हैं उनसे मिलने." निलेश ने विपुल की तरफ इशारा करते हुए कहा.

पर इससे महिला की झुंझलाहट कम नहीं हुई. कहने लगी, "वे यहां रहते थे. आज सबेरे ही चले गए यहां से."

उसके स्वर में अभी भी अक्खड़ता थी.

"कहां... कहां चले गए हैं," निलेश ने अपने स्वर को कोमल बनाए रखते हुए पूछा.

"आप 635135 पर फोन करके पता कर लीजिए." कहकर उसने दरवाजा बंद दिया.

"हद हो गई यार. कोई उनका कोई पता बताने को तैयार नहीं." ग़ुस्से से सीढ़ियां उतरते हुए निलेश ने कहा.

"लोग इतने डरे हुए हैं कि उन्हें खुद पता नहीं कि किस पर यकीन किया जाए और किस पर नहीं. आखिर कुछ सुराग तो पता चला." विपुल ने कहा.

सड़क के दोनों ओर मकान थे. सड़क कई जगह से टूटी हुई थी. बीच बीच में कहीं गड्ढे थे. उसी सड़क के ऊपर वाले किसी घर में पोथीवाला रह रहे थे. दरवाजा बीस-पच्चीस साल के एक युवक ने खोला था. साजिद नाम था उसका. सर का छोटा बेटा था वह.

"अरे अंकल आप." उसने निलेश को पहचान लिया था.

"सर हैं". निलेश ने कमरे के अंदर कदम रखते हुए कहा.

"हां हैं. अंदर वाले कमरे में हैं. आप लोगों को याद कर रहे थे. शायद अविनाश अंकल ने उन्हें बताया था कि आज आप आने वाले हैं."

छोटा सा घर था. दरवाजों और खिड़कियों पर हरे जरीदार पर्दे लगे हुए थे. दरवाजों के पीछे से झांकता एक कमरा था. बड़े कमरे में एक सोफा. दो कुर्सियां. सूखे फूलों का गुलदस्ता रखा हुआ था. कमरे की दीवार पर मक्का मदीना की बड़ी सी तस्वीर थी और उसके समाने कुरान की कुछ आयतें लिखी हुई थीं. दीवार पर संतरे रंग की पेंटिंग थी. फर्श सीमेंट का था.

विपुल उनसे लगभग दो साल बाद मिल रहा था. इन दो सालों में न जाने

कितना कुछ हो गया. न जाने कितना कुछ बदल गया. इन दो सालों में उनके पढ़ाए हुए न जाने कितने छात्र इंजीनियरिंग की डिग्रियां लेकर देश और विदेश में अच्छी जगह नौकरी कर रहे होंगे. इन दो सालों में न जाने कितनों को उन्होंने फिजिक्स की बारीकियां समझाई होंगी. जब तक उनमें उत्साह था वे अपने मिशन पर लगे रहे. मुस्लिम बच्चों में शिक्षा का प्रचार करने में. मुस्लिम परिवारों को छोटे परिवार की महत्ता समझाने में. फासिस्ट शक्तियों से टक्कर लेने में. विपुल को लग रहा था कि शायद अब वे थककर बैठ गए होंगे.

वे दोनों अंदर वाले कमरे में गए. विपुल के मन में पोथीवाला को देखने की उत्कट इच्छा थी. एक अरसा हो गया था उन्हें देखे हुए. उसके मन में उत्कंठा हुई इस हादसे के बाद कैसे लगेंगे वे. क्या अभी भी वैसा ही खिलखिलाता हुआ चेहरा होगा. क्या अभी भी वैसी ही मुस्कान होगी. क्या अभी भी वैसा ही हौंसला होगा या पस्त हो गए होंगे. चेहरा अब कैसा हो गया होगा. क्या अभी भी वैसी ही आत्मीयता से मिलेंगे. क्या आज भी उसे देखकर हमेशा की तरह... कैसे लगेंगे वे इस समय. उसका मन अजीब अजीब तरह की कल्पना करने लगा. जब तक मन कोई और कल्पना करता तब तक वे लोग कमरे के अंदर पहुंच चुके थे.

पोथीवाला एक आरामकुर्सी पर अधलेटे से थे. छह फुट से भी अधिक ऊंचा कद, सांवला रंग. चौड़ा माथा. चेहरे पर गहरा विषाद. जो कुछ हादसा उनके साथ हुआ उसकी गहरी छाया उनके चेहरे पर थी. लंबा कुर्ता और पायजामा पहने. बहुत सुंदर और भावपूर्ण आंखें जिनमें बुद्धि की चमक अभी भी विद्यमान थी. पूरे व्यक्तित्व में सहज आत्मीयता. वे कुर्सी पर अधलेटे थे. अपने आप में एक पूरा इतिहास समाए हुए. नजरें उनकी दीवार पर थीं पर मन उनका कहीं और भटक रहा था. उन्हें एहसास हो रहा था कि उनके आदर्श, उनके मूल्य, उनके संस्कार, उनके विश्वास पूरी तरह पराजित हो चुके हैं. जिन संस्कारों और मूल्यों को उन्होंने अपनी सहज बातचीत में पल्लवित और पोषित किया था, उनके आगे एक प्रश्नचिन्ह लग गया था. वे अपने आप को हताश और पराजित महसूस कर रहे थे. उनकी आंखें आरामकुर्सी से बाहर दूर कहीं आकाश को देख रही थीं लेकिन वे कहीं नहीं देख रहे थे. मन उनका कहीं और भटक रहा था. किसी दूसरी दुनिया में. अतीत की स्मृतियों में. अपनी पत्नी अमीना के पास. या अमेरिका में अपने बेटे के पास. या अपने 'विमर्श' के साथियों के पास. या अपने विचारों और मूल्यों और अपनी आस्थाओं के पास, जो अब खंड खंड हो चुकी थीं.

उन दोनों को देखते ही वे वापस इसी दुनिया में लौट आए थे.

विपुल को देखते ही उनके चेहरे पर थोड़ी रौनक सी आ गई. वे कुर्सी से उठ गए उसे गले लगाते हुए कहा. "अरे... तुम... कब आए."

"बस आज ही आया हूं." विपुल ने उनका कंधा पकड़कर वापस आरामकुर्सी पर उन्हें बिठा दिया.

बैठते ही उन्होंने लंबी सांस ली. बोले, "आओ बैठो."

विपुल ने पास रखे स्टूल को उनके पास खिसकाया और बैठ गया. निलेश भी सामने रखे एक लोहे के बक्से पर बैठ गया.

वे कुर्सी पर बैठ गए और विपुल को देखते जा रहे थे लगातार. उनकी तरफ बार बार देख पाने का हौंसला विपुल में नहीं था. जीवन में पहली बार विपुल ने उन्हें इतना असहाय, हताश, दयनीय, पराजित देखा था. उनका चेहरा निरीह और कारुणिक लग रहा था.

"अनीता कैसी है. उसे भी साथ लाए हो या अकेले आए हो." उन्होंने उससे पूछा था. अनीता उसकी पत्नी का नाम था. उसे वे बहुत चाहते थे.

"नहीं उन्हें तो साथ नहीं लाया, अकेले ही आया हूं." विपुल ने बताया था.

"बेटा तुम्हारा कैसा है. मन लगता है पढ़ने में उसका."

"हां पढ़ता है."

"बहुत होशियार है. कैल्कुलेशन्स उसकी बहुत तेज हैं. गॉड बलैस हिम. उसे खूब पढ़ाओ." उन्होंने आशीर्वाद के स्वर में कहा था.

आज से करीब दो साल पहले विपुल गया था उनके घर. अनीता भी साथ थी. तभी उनके बेटे से इनका परिचय हुआ था. दसवीं में पढ़ता था वह तब. तीन चार घंटे वे लोग इनके साथ रहे थे. पता नहीं किस आधार पर उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला था कि उसकी कैल्कुलेशन्स बहुत तेज हैं. पर हर फोन में या हर चिट्ठी में विपुल के बेटे और अनीता के बारे में पूछना न भूलते. विपुल और विपुल के परिवार के प्रति एक गहरी आत्मीयता थी उनमें जिसमें उनका स्नेह पूरी तीव्रता के साथ घुला हुआ था.

"सर बहुत बुरा हुआ. आपके साथ ऐसा नहीं होना चाहिए था." विपुल ने कहा.

"घृणा का जो बीज यहां बोया गया वह अब फल देने लगा है." उन्होंने उदासी से कहा.

"हर जगह यही घृणा है. हर घर में घृणा फल-फूल रही है सर. राम के नाम पर घृणा, उपेक्षा, अपमान, तिरस्कार. आपको भी उन्होंने नहीं छोड़ा." विपुल ने बड़ी मुश्किल से अपने आक्रोश को उनके सामने व्यक्त किया.

वे बिल्कुल चुप रहे. कुछ बोले नहीं गोया उन्हें लकवा मार गया हो. चुपचाप

विपुल को देखते रहे. कमरे में सन्नाटा छा गया.

निलेश भी चुप था उसने भी कुछ नहीं कहा.

"वी शुड प्रे आलमाइटी, थिंग शुड बी आलराइट वैरी सून. दिस इज नॉट ए हैल्दी साइन." उन्होंने गम्भीर होकर कहा.

उनके स्वर में असहायता थी.

विपुल ने कमरे में नज़र दौड़ाई. कमरे की दीवार पर उनकी पत्नी की तस्वीर थी, बेहद सुंदर. बेहद आकर्षक. आंखें बेहद भावपूर्ण और आत्मीय. विपुल को तस्वीर की तरफ देखते हुए कहा, "अब यह भी नहीं रहीं. इनके जाते ही सब खत्म हो गया." उनके स्वर में हताशा थी.

कमरे के बाहर कुछ खटपट हुई थी. उनकी बेटी अफरोज थी. उन लोगों के लिए कुछ खाने के लिए लाई थी शायद आइसक्रीम. नीली टी शर्ट और क्रीम कलर की पैंट पहने. मुस्कराती हुई अफरोज.

विपुल को याद आयां कि निलेश ने बताया था कि अफरोज ने फाइन आर्टस में डिप्लोमा ले लिया है और उसकी शादी एक हिंदू लड़के से तय हुई है. पोथीवाला खुद इस शादी के पक्ष में थे हालांकि उनकी पत्नी तो नहीं चाहती थी कि अफरोज एक हिंदू लड़के से शादी करे लेकिन पोथीवाला का आग्रह और बेटी के प्यार से उनकी पत्नी भी इस शादी के लिए मान गई और अच्छी बात तो यह है कि इस हुल्लड़ में भी उनकी बेटी के ससुराल वालों ने पोथीवाला का साथ दिया. हालांकि उनको भी धमकियां दी गईं कि वे इस रिश्ते को खत्म कर दें लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया. यह बहुत बड़ी बात है.

"कैसी हो तुम."...निलेश ने उसे पहचान लिया था.

उसके इस सवाल पर वह मुस्करा दी.

निलेश को खुद ही अपने इस सवाल पर शर्म सी महसूस हुई. इतना कुछ होने के बाद भी उससे यह पूछना– कैसी हो– महज एक औपचारिकता ही नहीं, बेमानी सा सवाल था. फिर भी उसने औपचारिकता निभाते हुए कहा,

"ठीक हूं. बहुत दिनों बाद आए." उसने उदासी से कहा.

"माहौल ही कुछ ऐसा हो गया. अविनाश से लगातार आप लोगों की खबर मिलती रही. आप लोगों के बारे में सुना था. हम लोग अपने आपको कितना असहाय महसूस करते हैं. हम लोगों के होते हुए भी आप लोगों को अपना घर इस तरह छोड़ना पड़ा." निलेश ने कहा.

उसके स्वर में भयानक पश्चाताप था. गोया इन सारी घटनाओं का जिम्मेदार वह खुद हो.

"क्या करें, दरिंदों को जब सत्ता दे दी जाए तो ऐसा ही होगा. मैंने तो पापू को

कई बार कहा है कि यह देश हम लोगों के रहने लायक है ही नहीं." उसने आइसक्रीम का कप विपुल की तरफ बढ़ाते हुए कहा. उसके स्वर में सख्त नफरत थी.

"मैं यहां नहीं रहना चाहती. यहां से चले जाना चाहती हूं." उसने पास रखे स्टूल पर बैठते हुए कहा.

"कहां जाना चाहती हो." निलेश ने पूछा.

"अमेरिका में अपने भाई के पास."

"क्यों. यहां क्यों नहीं रहना चाहती."

"यहां अब बचा ही क्या है. अम्मी पहले ही चल बसी. पापू का बहुत अपमान हुआ है. सब कुछ तो खत्म हो गया. एक घर था, वह भी नहीं रहा अब. उस घर में मेरा बचपन था. उस घर के खत्म होते ही मेरा बचपन भी खत्म हो गया. मेरी मां ने उस घर को बहुत अरमानों से बनाया था. मेरे पिता का बहुत अपमान हुआ है यहां."

उसकी बात सुनकर कोई कुछ नहीं बोला. न विपुल. न निलेश. न ही पोथीवाला और न ही उनका बेटा साजिद.

थोड़ी देर बाद उसने खुद ही कहा, "अब हमको यह लगने लगा है कि अब हमारे लिए कोई जगह नहीं है यहां. न गुजरात में और न ही हिंदुस्तान में." उसके स्वर में गहरी निराशा थी.

"ऐसा नहीं है." निलेश ने असहमति के स्वर में कहा.

"ऐसा ही है अंकल. इस दौर में कई सारे उन हिंदुओं को मार दिया जिन्होंने मुसलमानों से शादी की थी... यहां रहकर मुझे या अनुराग पटेल को, हममें से किसी एक को अपना धर्म बदलना होगा. हम यहां हिंदू या मुसलमान बनकर रह सकते हैं, भारतीय बनकर नहीं. जबकि अमेरिका में हम भारतीय बनकर रह सकते हैं."

उसके तर्कों में दम था. निलेश ने उनको खारिज करते हुए कहा, "लेकिन इस देश में भी हिंदू और मुसलमान पति पत्नी हैं."

"वह बहुत ताकतवर लोग हैं. अंकल, हम उनसे दूर ही रहना चाहते हैं. हमें हिंदू मुस्लिम सामंजस्य से कोई लेना देना नहीं है. हमें अपने बारे में सोचना है. मेरे पापा ने हिंदू मुस्लिम सामंजस्य के बारे में सोचा. उन्हें क्या मिला. अपमान और बरबादी ही. हमें अपमान और बरबादी नहीं चाहिए. आपको पता है अंकल, मेरी सहेलियां अब मुझे मुस्लिम लड़की के रूप में देखने लगी हैं. पहले ऐसा नहीं था." उसके स्वर में एक नफ़रत थी.

विपुल ने सर को देखा कनखियों से. वे अपनी आरामकुर्सी में अधलेटे थे. पूरी

बातचीत से एकदम दूर. यदि यही बातें पहले कभी उनकी बेटी ने कही होतीं तो वे ज़रूर उसे समझाते.

पर आज वे एकदम मौन थे. वे निर्विकार से उन लोगों की बातें सुनते रहे. कुछ बोले नहीं.

विपुल को कुछ सूझ नहीं रहा था कि इनसे क्या बात करूं.

विपुल को इस तरह ख़ामोश देखकर उन्होंने खुद ही पूछा, "दिल्ली में तुम्हारी नौकरी कैसी चल रही है."

"ठीक चल रही है." विपुल ने अपने चेहरे पर नक़ली मुस्कराहट लाते हुए जवाब दिया.

"देखो आज अख़बार में ख़बर है. पूरे शहर में त्रिशूल भाले बांटे गए हम लोगों को मारने के लिए." साजिद ने ग़ुस्से में कहा.

साजिद अभी तक चुप बैठा था, वह भी उन लोगों की बातचीत में शामिल हो गया.

"पूरे शहर से ही नहीं वरन पूरे राज्य से हम लोगों को हटा देना चाहते हैं." अफरोज ने कहा.

"वे ऐसा कैसे कर सकते हैं." विपुल ने उनकी बात का प्रतिवाद किया.

"कर तो नहीं सकते लेकिन कोशिश उनकी यही है. यदि यही माहौल रहा तो हम लोग खुद ही यहां से चले जाएंगे. संभालते रहना अपना देश और जीते रहना धर्म की बैसाखी पर चौदहवीं सदी के हिंदुस्तान में." साजिद ने निहायत ही घृणा से कहा.

सर अवाक् होकर साजिद को देखते रहे गोया वे वहां मौजूद ही न हों. उन्होंने उसकी इस बात पर कोई ऐतराज़ नहीं किया. यदि ऐसा उसने पहले कहा होता तो घंटों भाषण देते इस देश की सभ्यता पर. इसकी मिलीजुली संस्कृति पर, इसकी महानता पर. इसके इतिहास पर. लेकिन आज वे बिल्कुल मौन थे.

"हालात सुधरने तो चाहिए." विपुल ने कहा.

"कैसे सुधरें अंकल. सारा खेल सियासत का है और फिर हम यहां रहें क्यों. आप मुझे दो कारण ऐसे बता दो जिसके कारण पापू इस देश में रहें. यह देश जब उन्हें आराम से रहने नहीं दे सकता. उनकी काबलियत को स्वीकार करते हुए भी उन्हें नहीं मानता तो फिर हम यहां रहें क्यों. बड़ा भाई बार बार हम लोगों को वहां बुला रहा है तो हम क्यों न जाएं वहां. ये लोग हमें इस देश का नहीं समझते तो न समझें, हमें भी इस देश की ज़रूरत नहीं." उसने इस देश के प्रति एक वितृष्णा से कहा.

विपुल को याद आया है कि पोथीवाला का बड़ा लड़का अमेरिका में नासा में

है. पोथीवाला ने उसके लिए अमेरिका जाने के रास्ते तैयार किए. उसकी शिक्षा ही इस तरह से हुई कि वह अमेरिका चला जाए. एक योजनाबद्ध तरीक़े से उन्होंने उसकी पढ़ाई कराई शायद इसका एक कारण यह भी हो कि अमेरिका में नौकरी करने की एक दबी-सी आस उनमें रही हो जो अपने बेटे के माध्यम से पूरा करना चाहते थे. विपुल ने निलेश से कई बार कहा था कि इस देश का हर बुद्धिजीवी अपने बच्चों के लिए अमेरिका जाने के रास्ते बनाता है. वे चाहते तो अपने बेटे को यहीं इस देश में रहने के लिए बाध्य कर सकते थे. या हो सकता है उन्होंने किया भी हो और उनकी पत्नी ने ही उनके बेटे को विदेश की राह दिखाई हो. पोथीवाला ने इस राह में रुकावट न डाली हो. पर उनकी मौन स्वीकृति तो रही ही होगी. आज उनके दोनों बच्चे अफरोज और साजिद भी इस देश में नहीं रहना चाहते.

"न तो सारे लोग ऐसे हैं और न ही पूरा देश ऐसा है... ये लोग लुंपन एलीमैंट हैं. इनके कारण पूरे देश के बारे में कोई राय बनाना ग़लत होगा." पोथीवाला ने बीच में हस्तक्षेप करते हुए कहा था.

"पर ये लुंपन एलीमैंट किसके सहारे कूद रहे हैं. कौन इन्हें शै दे रहा है, कौन इन्हें फायनैंस कर रहा है. कौन इन्हें सुरक्षा दे रहा है." साजिद ने सवालों की बौछार सी लगा दी थी.

"शासन व्यवस्था." निलेश ने उसके इन सारे सवालों का जवाब दो शब्दों में दे दिया.

"कौन सी शासन व्यवस्था." उसके इस सवाल से साजिद का ग़ुस्सा और अधिक बढ़ गया. वह आवेश में आ गया था.

"फ़ासिस्टों की शासन व्यवस्था. फ़ासीवादों ताक़तों ने हमेशा ही पढ़े-लिखों का उपहास किया है, उन्हें रौंदा है. हिटलर ने यही किया था. मुसोलिनी ने यही किया था." निलेश ने उसके ग़ुस्से को शांत करने के अंदाज में कहा.

पोथीवाला ने बीच में हस्तक्षेप करते हुए कहा, "इतना आसान नहीं है यह मामला. दरअसल लोगों में शिक्षा नहीं है. पढ़े लिखे लोग भी नहीं जानते कि वे क्या कर रहे हैं. वे ग़लत लोगों के बहकावे में आ जाते हैं और ग़लत कदम उठा लेते हैं जिसका नुकसान पूरे समाज को उठाना पड़ता है. बहकाने वालों को पकड़ना चाहिए."

साजिद और अफरोज दोनों इस हादसे से बुरी तरह आहत हो चुके थे. वे किसी भी क़ीमत पर इस देश में नहीं रहना चाहते थे. अंदर अंदर ही उन दोनों में बहुत कुछ सुलग रहा था. उनके सारे अरमान ध्वस्त हो गए थे. उनकी सारी आस्थाएं

हिल गई थीं. वे इस देश में किसके लिए काम करें और क्यों करें. जब इस देश के लोग उनके साथ दरिंदगी करने पर तुले हुए हैं तो वे क्यों एक बेहतर इंसान बनें. वे इस देश में किसकी अराधना करें ईश्वर की, धर्म की, विज्ञान की, विवेक की."

"शमा का अपना घर बंद कर दिया." विपुल ने सर से पूछा.

नहीं. बंद तो नहीं किया बेटा. वहां पुलिस वाले बैठे हैं. घर को उन्होंने अपने कब्जे में ले लिया है." उन्होंने बताया.

"उस घर में पापू की कुछ किताबें हैं. कुछ ज़रूरी चीज़ें हैं. डायरी, मां की स्मृतियों से जुड़ी कुछ चीज़ें. मेरी कुछ ज़रूरी चीज़ें. उन्हें वहां से लाना है. मां के जाते ही घर भी चला गया. बहुत शानदार घर बनवाया था मां ने. उसकी एक एक ईंट को सहेज कर रखा था उन्होंने." अफरोज ने बेहद दुख से कहा.

"तो अभी ले आते हैं. गाड़ी है हम लोगों के पास." निलेश ने कहा.

"मैं भी चलूंगी." अफरोज ने हमारे साथ चलने की पेशकश क़ी. वे दोनों अपने घर को देखना चाहते थे. उनकी उम्मीदों और अरमानों से भरा हुआ घर. उनके बचपन का घर. उनकी मां की स्मृतियों का घर. विपुल ने सर की तरफ़ देखा. उन्होंने सहमति देते हुए कहा, "जरा संभल कर जाना. मैंने मजिस्ट्रेट को फ़ोन पर कह दिया था कि मुझे कुछ ज़रूरी सामान अपने घर से निकालना है. शायद एक दो दिन में हम लोग आएं. पुलिस होगी वहां. शायद वे घर में जाने में कोई दिक़्क़त करें." पोथीवाला ने धीरे से कहा.

वे भी चाहते थे कि जो कुछ भी उस घर से लाया जा सकता है, ले आया जाए. पलक झपकते ही उन्हें अपना घर छोड़ना पड़ा था. बहुत कुछ उस घर में रह गया था.

विपुल ने सर को नमस्ते की और स्टूल से उठने लगा. उसे उठता देख उन्होंने कहा, "तुम भी जाओगे साथ में."

"जी." उसने अपनी सहमति दी.

"तो ठीक है. आते रहना." उन्होंने कहा.

वे चारों घर से बाहर आ गए. विपुल, निलेश, साजिद और अफरोज.

8

पूरा रास्ता सुनसान था. जगह-जगह जली हुई दुकानें थीं. जगह-जगह जली हुई लारियां और खोंमचे थे.

"यह देखो यहां स्वागत रेस्तरां था. पूरा जल कर राख हो गया."

"यह घर किसी मुसलमान का था."

"हम लोगों को जलने के बाद ही पता चला जब अख़बार में ख़बर आई कि अमुक होटल या अमुक दुकान मुसलमान के थे. हम तो उन्हें हिंदुओं के ही समझते थे." निलेश ने कहा.

"यह देखो स्कूटर के शोरूम में ही आग लगा दी गई. यहां से सिर्फ़ दो सौ गज़ की दूरी पर पुलिस स्टेशन है."

"यह जली हुई रेडीमेड कपड़ों की दुकान थी. अख़बार में छपा था कि खाते पीते घर के लोग भी इस दुकान से कपड़े उठा कर ले गए." निलेश ने बताया.

"यह सब बंद के दौरान हुआ. जब लोग अपने अपने घरों में बंद थे और जब सड़कों पर पुलिस और सेना का आतंक था." साजिद ने कहा.

"बंद के दौरान जिन लोगों ने अपनी दुकानें खुली रखीं, उन्हें ज़बरदस्ती बंद करा दिया गया. जिन लोगों ने काम पर जाने की कोशिश की उनके वाहनों को रोक दिया गया. उन्होंने जाने की कोशिश की तो उनके वाहनों के टायरों की हवा निकाल दी गई."

"इन दो दिनों के दौरान पूरे शहर में दहशत समा गई."

पूरे शहर में सन्नाटा था. सड़कों पर इक्का दुक्का वाहन ही थे.

कार ने जब शमा एरिया में प्रवेश किया तो साजिद ने कहा, "इस बार ऐसा नहीं हुआ कि केवल ग़रीबों की बस्ती में ही आग लगाई गई हो. चुन चुन कर लोगों को

मारा गया. चुन चुन कर उनके घरों और दुकानों में आग लगाई गई. क्या ग़रीब. क्या अमीर. किसी को भी नहीं छोड़ा गया."

"सुना तो यह भी है कि गोधरा कांड के बाद अहमदाबाद में हुक्मरानों की एक ख़ास बैठक बुलाई गई और उस बैठक में हम लोगों को सबक़ सिखाने की बात कही गई." अफरोज के स्वर में घृणा थी.

"जब हुक्मरान ही ऐसा करेंगे तो बाक़ी लोगों से क्या उम्मीद की जा सकती है." विपुल ने कहा.

निलेश ने पोथीवाला के घर के सामने कार को धीरे से रोका. कार से उतरते ही विपुल ने देखा कि पोथीवाला का बड़ा सा घर एकदम सुनसान हो गया था. कहीं कोई हलचल नहीं. कहीं कोई सुगबुगाहट नहीं. सब कुछ शांत, वीरान और मौन. बड़े से घर की बाहर की दीवारों पर कालिमा थी. बाहर दालान में जली हुई कार थी जो जल कर लोहे का कंकाल बन गई थी. घर के दरवाज़े और खिड़कियां जल चुके थे. घर की बग़िया में लगे अशोक के पेड़ झुलस चुके थे. बग़िया के बाक़ी पौधे भी अधजले थे. घर में मेन गेट पर लगी डॉ. के.एम. पोथीवाला की नेमप्लेट को खरोंच दिया गया था. उनके नाम पर कालिख पुती थी.

घर के बाहर दो पुलिस वाले तैनात थे. गाड़ी के रुकते ही वे दोनों खड़े हो गए थे. डर के इस माहौल में पोथीवाला के घर के सामने किसी कार के रुकने से वे चौकन्ने हो गए थे. अफरोज को कार से बाहर निकलते देख वे सशंकित हो उठे थे. उनमें से एक ने आगे बढ़ कर पूछा, "किससे मिलना है."

" इन्हें किसी से नहीं मिलना. इन्हीं का यह घर है. ये पोथीवाला की बेटी हैं. अपने घर से कुछ सामान लेने आई हैं."

निलेश ने पुलिस वाले को बताया.

पुलिस वाला समझदार था. शायद उसे ख़बर थी कि पोथीवाला के बच्चे घर का बचा खुचा सामान लेने आएंगे. उसने औपचारिकतावश कुछ सवाल पूछे कि वे लोग कहां से आए हैं. पोथीवाला साहब इस समय कहां हैं. उन लोगों के पास आइडेंटिटी कार्ड हैं कि नहीं. कितनी देर तक घर में रहेंगे. क्या क्या सामान लेना है."

उन लोगों ने अपना अपना आइडेंटिटी कार्ड उसे दिखाया. विपुल का लाइसेंस उसने चैक किया. एक फ़ार्म भरवाया. संभवतः जिला मैजिस्ट्रेट की ओर से उसे

ऐसे फ़ार्म भरवाने के आदेश थे जिसमें उनका नाम, पता, नौकरी वग़ैरह संबंधी कुछ सामान्य सी जानकारियां थीं. पूरी तरह संतुष्ट हो लेने के बाद उसने उन लोगों को अंदर आने दिया.

विपुल ने ग़ौर से देखा था कि यह वही घर था जहां अक्सर वे लोग शाम के समय आते थे. जहां बैठकर दुनिया जहान की बातें उनसे करते थे. सामने वही सुनसान और वीरान सड़क जिस पर इक्का दुक्का आते जाते लोग. पड़ोस के घरों में इस घर के बारे में एक अजीब सी उत्सुकता. पेड़ों की टहनियों का हमेशा की तरह हवा में लहराना और उनसे आते ठंडी हवा के झोंके, सड़क के कोने की लॉरी पर पान मसाला खाते हुए किशोर और आवारा क़िस्म के लड़के और इन सबको एकांत और शांत भाव से देखता हुआ पोथीवाला का वीरान घर जो अब खंडहर में तब्दील हो चुका था. हालांकि विपुल एक अर्से बाद इस घर को देख रहा था लेकिन उसकी स्मृतियों में यह घर हमेशा छाया रहा. शान-ओ-शौकत लिए हुए खड़ा रहता था यह मकान. बड़ा सा आंगन, शांत और सौम्यता का प्रतीक. सफ़ेद संगमरमर की दीवारें. अंदर जाने के लिए छोटा सा गेट. उस गेट से कमरे तक जाने का लगभग दस फ़ीट का रास्ता. घर के दाएं तरफ़ एक छोटी सी बग़िया. उस बग़िया में तरह तरह के फूल और पौधे. हरी हरी घास जो विपुल की अंतश्चेतना में हमेशा रहती.

वे चारों घर के अंदर गए. बाहर की तरफ़ एक बड़ा सा कमरा था जहां बैठकर वे लोग पढ़ा करते थे. कमरे की दीवार पर एक बड़ा सा अधजला पोस्टर अब भी वहां था जिस पर लिखा था एजुकेशन कैन चेन्ज द सोसायटी...

यह शिक्षा पोथीवाला के चिंतन का मूल मंत्र थी.

विपुल को याद आया कि पोथीवाला शिक्षा पर हमेशा ज़ोर देते थे. कहा करते थे कि इस देश को आगे ले जाने के लिए शिक्षा हवा और पानी की तरह ज़रूरी है. मुसलमानों को, ख़ासकर मुस्लिम लड़कियों को, शिक्षित करने के वे हमेशा हिमायती रहे. कहा करते थे कि मुसलमानों को उनकी ग़रीबी, जहालत और उनकी सोच से शिक्षा ही बाहर निकाल सकती है. शिक्षा से ही वे अपने विजन को बढ़ा सकते हैं. अपनी अज्ञानता से बाहर आ सकते हैं. उन लोगों को पढ़ाते समय न जाने कितनी बार वे बुद्ध का वह उद्धरण सुनाया करते थे जो बुद्ध ने अपने शिष्यों

को कहा था कि कोई बात सिर्फ़ इसलिए मत मान लेना कि बुद्ध ने कहा था. खुद सोचना और अपने रास्ते खुद बनाना, अपना दीपक खुद बनना और अपने रास्ते खुद बनाने के लिए तुम्हारी शिक्षा और तुम्हारा अनुभव तुम्हारी मदद करेंगे. उन लोगों को भी वे बार-बार कहा करते थे कि कोई भी बना-बनाया रास्ता मत लेना. अपने लिए अपना रास्ता खुद बनाना. अपना रास्ता बनाने में कठिनाइयां ज़रूर आएंगी लेकिन तुम्हारी शिक्षा ही तुम लोगों को कठिनाइयों से पार करेगी.

यही उनका मूल मंत्र था. यही उनका विजन था और यही उनका दर्शन था. यही उनका जीवन लक्ष्य था.

देख कर दंग रह गया था विपुल. शिक्षा देने वाले का यह घर ही आग के हवाले कर दिया था गोया उनका घर नहीं; सारा इतिहास, सारी परंपराएं, सारा ज्ञान ही जला दिया हो.

कमरे की अस्त-व्यस्त हालत को देखकर उसकी आंखें नम हो गई थीं. सारा फ़र्नीचर जल गया था.

"कुछ नहीं बचा. सब कुछ ख़त्म हो गया." साजिद ने अपने जले हुए घर को देखते हुए कहा.

"पापू ने कुछ किताबें कहा था लाने को. यदि कुछ बची हों तो ले जाएं." अफरोज ने सजल नेत्रों से कहा.

"शायद ऊपर वाले कमरे में आग न पहुंची हो, वहां देखते हैं कुछ बचा हो तो ....." साजिद के स्वर में आशा की एक हल्की सी लौ थी.

आग ऊपर वाले कमरे में भी पहुंच गई थी लेकिन नुकसान उतना नहीं हुआ था. किताबों के शेल्फ़ तक पहुंचते-पहुंचते आग बुझ गई थी फिर भी काफ़ी किताबें जल चुकी थीं. अफरोज ने उन जली किताबों में से कुछ किताबें छांटते हुए कहा, "पापू की न्यूकलर साइंस की किताबें मिल जाएं तो अच्छा है. यूनिवर्सिटी में पढ़ाने के लिए उनकी ज़रूरत होती है. कुछ नोट्स लिए थे उन्होंने. वह न जले हों तो ज़्यादा अच्छा. उनकी एक डायरी भी थी, उन्हें उसकी बहुत ज़रूरत है. वो डायरी भी यहीं कहीं होगी. देखो जरा कहीं मिलती हो तो..." अफरोज ने घबराई हुई आवाज़ में कहा.

अफरोज ने कुछ किताबें चुनकर अलग एक बैग में भर लीं. कुछ और ज़रूरी चीज़ें, कुछ तस्वीरें, सजावट का कुछ सामान. वह बार-बार डायरी ढूंढने की बात कर रही थी.

साजिद ने कहा, "शायद नीचे वाले कमरे में हो."

उन लोगों ने नीचे वाले कमरे में सब जगह देखा. जली हुई मेज़ की दराज़ों में, अलमारी में, किताबों के शेल्फ़ में लेकिन वह डायरी नहीं मिली.

"देखो तो यह क्या है." विपुल ने एक अधजले कवर को अपने हाथ में उठाते हुए कहा.

अफरोज दौड़ कर उसके पास आई. उस अधजले टुकड़े को देखकर सन्न रह गई, "यही तो है वह डायरी जिसे हम लोग ढूंढ़ रहे थे." उसकी आवाज़ में कुछ चमक सी आ गई थी.

"जब घर में आग लगाई गई थी उस समय वह टेबल पर ही रह गई थी. शायद पापू कुछ लिख रहे थे."

"ओह.... पापू को बहुत ज़रूरत है. उनका पूरा अतीत इसमें दर्ज है. बहुत कुछ लिखा था इसमें." साजिद ने कहा.

एक सन्नाटा था उस कमरे में. वे चारों उस सन्नाटे में डूब गएं थे. जली हुई डायरी को देखकर कमरे में स्तब्धता और भी गहरी हो गई थी.

विपुल ने बहुत ग़ौर से देखा. बहुत मोटी थी डायरी. पिछले बीस सालों से वे लिखते थे डायरी. कुछ पन्ने बचे हुए थे, जले नहीं थे. उसने संभाल कर वह डायरी अपने पास रख ली.

"सब नष्ट हो गया. पापा के कपड़े. उनकी किताबें, उनके नोट्स. उनकी तस्वीरे. सब जला दिए गए." साजिद ने आर्द्र स्वर में कहा.

पूरे घर में उदासी-सी छा गई थी. ऐसा लग रहा था कि हम सब एक यातना शिविर में आ गए हों. घर के किसी भी कोने में नज़र जाती वहां कोई न कोई संदर्भ था. और हर संदर्भ के मूल में स्मृतियां थीं और वे सारी स्मृतियां इस समय यातना दे रही थीं.

साजिद ने दूसरे कमरे से कुछ किताबें इकट्ठी कीं और कांपते हुए हाथों से उन्हें एक बैग में रखा. कुछ ले जा सकने वाले बचे हुए कपड़े और कुछ और छोटा-मोटा सा सामान जिन्हें ले जाया जा सकता था. पोथीवाला की जली हुई तस्वीर को संभाला और कहा, "चलो, अब चलते हैं."

सब वापस चलने के लिए तैयार हो गए. जो कुछ ले जा सकते थे, उन्हें दो-तीन बैग में भर लिया.

जब चलने लगे तो अफरोज ने कहा, "एक चीज़ और ले लेते हैं."

"क्या." निलेश ने पूछा.

"अम्मी की तस्वीर."

वह लगभग दौड़ती हुई फिर से ऊपर वाले कमरे में गई और वहां दीवार पर टंगी अपनी अम्मी की तस्वीर को उतारा और वापस आकर कहा, "अब चलो."

वे चारों घर से बाहर आ गए.

पुलिस वाले उन लोगों को देखकर फिर खड़े हो गए. उन्होंने सारा सामान गाड़ी में रखा और निलेश ने गाड़ी स्टार्ट कर दी.

साजिद और अफरोज ने अपने घर पर एक नज़र डाली और डबडबाई आंखों से कार का शीशा चढ़ा लिया.

9

पोथीवाला बॉलकनी में बेचैनी से टहल रहे थे. बाहर का वातावरण स्तब्ध और आतंकित कर देने वाला था और अंदर का वातावरण हलचलों से भरपूर था. उनके मन में तूफान उठ रहा था, इतना बड़ा नरसंहार कैसे हो गया. क्यों नहीं इसे रोका जा सका. गलती कहां हुई. इतना बड़ा नरसंहार आज़ादी के बाद भी. सारी सुरक्षा और लोकतंत्र के बावजूद भी. लोगों को शिक्षित करने में हम कैसे पिछड़ गए. अपने बच्चों को क्यों नहीं संभाल सके हम. संस्कार देने में कैसे पिछड़ गए. सवाल ....सवाल ....सवाल... उनके मन में सवालों का जखीरा था.

गाड़ी को रुकते देख वे तेज़ी से नीचे आ गए. साजिद ने किताबों से भरा हुआ बैग उन्हें सौंपते हुए कहा था, "पापू आपकी किताबें. बस इतनी ही बच सकी हैं."

"अच्छा किया बेटा ले आए. खैरियत तो है वहां. लोग तो कुशल से हैं."

"हां पापू सब ठीक है." साजिद ने बताया.

"पर पापू, हमारा घर पूरी तरह जल गया है. घर की एक-एक चीज आग में जल चुकी है. आपकी किताबें, आपके नोट्स, आपके कपड़े, घर का सारा फर्नीचर, हमारा टीवी, हमारा फ्रिज, हमारा टेलीफोन. आग में कुछ भी नहीं बचा पापू. बगिया में अधजले पेड़ और पौधे ही रह गए हैं. बगिया उजड़ चुकी है." अफरोज ने लगभग रोते हुए कहा था.

"मेरा चश्मा कहीं मिला. जल्दी में उठाना रह गया था."

"नहीं पापू कहीं नहीं मिला. हम लोगों ने बहुत ढूंढ़ा. पर कहीं नहीं मिला."

"उसके बिना बड़ा मुश्किल सा हो रहा है. कुछ पढ़ नहीं सकता.".

"नया बनवा लीजिए." विपुल ने कहा.

"पर इस हुल्लड़ में किसकी दुकान खुली होगी."

"सारा शहर ही बंद है."

"मेरे एक पुराने दोस्त हैं उमर अंसारी. उनकी दुकान में चले जाओ. वे मेरा नया चश्मा बना देंगे. उनके पास मेरा नंबर है. पर पता नहीं उनकी दुकान इस

हुल्लड़ में बची भी है या नहीं."

"मैं भी चलती हूं." अफरोज ने कहा

"नहीं बेटा इन लड़कों को जाने दो. उनकी दुकान शहर के रावपुरा इलाके में है." उन्होंने कहा.

रावपुरा शहर का सबसे तनावग्रस्त इलाका था. सबसे ज्यादा आग इसी इलाके में लगी थी. सबसे ज्यादा तबाही इसी इलाके में हुई थी.

उन लोगों की कार धीरे-धीरे शहर के इस इलाके में प्रवेश कर रही थी. बड़ौदा का सबसे भीड़-भाड़ वाला इलाका था यह. सुना है आजादी के बाद इस शहर में सबसे पहले हिंदू मुसलमानों का झगड़ा सन् 1970 में हुआ था जब गाय को लेकर इस शहर में विवाद हुआ था. उसके बाद दंगों का अच्छा-खासा इतिहास है इस शहर का. आरक्षण विरोधी आंदोलन के बाद से तो दंगों की बाढ़-सी आ गई थी इस शहर में. तब से यह शहर हमेशा ज्वालामुखी के मुहाने पर बैठा-सा लगता है. हिंदुस्तान के किसी कोने में धर्म के नाम पर जरा-सा कुछ भी हो जाए, भभक उठता है यह शहर पेट्रोल की तरह और पूरे शहर में फैल जाती है पेट्रोल की आग. चाहे हिंदुस्तान-पाकिस्तान का क्रिकेट मैच हो, उतरायण का त्योहार हो, मोहर्रम का जुलूस हो, अयोध्या प्रकरण हो या किसी माफिया डॉन की गिरफ्तारी हो, यह शहर बहुत जल्दी ही दंगों की आग में तपता है. यह इस शहर की खासियत है. दंगों का अंदेशा हमेशा इस शहर में बना रहता है.

कई दिनों बाद आज कुछ-कुछ दुकानें खुली थीं लेकिन डर अभी भी मौजूद था. शायद इसी डर की वजह से ही भीड़-भाड़ वाला यह इलाका कुछ शांत-सा था. सड़कों पर लोग थे पर इतने नहीं जितने अक्सर होते हैं. इक्का-दुक्का वाहन थे. सेना की गाड़ियां अभी भी दिखाई दे जाती थीं.

"अरे... यह क्या" निलेश ने कार चलाते-चलाते सामने की ओर इशारा करते हुए कहा.

उन सबने सामने देखा. बाटा का विशाल शोरूम जल चुका था.

"अरे उधर देखो...." उधर निलेश ने दाईं तरफ़ इशारा करते हुए कहा.

दाईं तरफ़ कम से कम बीस-पच्चीस दुकानों की कतार थी. पूरी कतार की कतार जल कर राख हो गई थी.

"ऐसा शायद आज़ाद भारत में पहली बार हुआ है जब दुकानों की कतारें एक

साथ जला ही गई हों." अविनाश ने कहा.

रावपुरा से मांडवी तक के रास्ते का यही हाल था. एक दुकान पर नज़र हटती नहीं थी कि दूसरी दुकान दिखाई दे जाती. जली हुई. सन्न रह गया विपुल यह मंजर देखकर. कैसे किया होगा यह सब. इन दुकानों के लोग कहां थे उस वक्त. आग बुझाने के कुछ तो प्रयास किए होंगे. फायर ब्रिगेड ने कुछ तो कोशिश की होगी. पुलिस ने कुछ तो किया होगा. इतनी बड़ी आग.... इतना बड़ा विनाश.... इतनी बड़ी तबाही...

जहां पर डीलक्स आप्टिकल्स की दुकान थी, वहां पर मलबा पड़ा था.

"लगता है उमर अंसारी की दुकान नहीं बची." अविनाश ने मलबे के पास गाड़ी को रोकते हुए कहा.

आसपास की दोनों दुकानें सही सलामत थीं. केवल बीच के डीलक्स आप्टिकल्स की दुकान ही मलबे में तब्दील हो गई थी.

निलेश ने पास खड़े लॉरी वाले से पूछा, "कैसे हुआ यह सब. उमर अंसारी साहब कहां हैं?"

"अंसारी साहब.... देखते नहीं क्या हाल हो गया." लॉरी वाले ने क्षुब्ध होकर कहा.

उस लॉरी वाले के स्वर में ग़ुस्सा था कि भला यह कैसा आदमी है. पूरा शहर यह जानता है कि यह कैसे हुआ और यह अनजान बनकर पूछ रहा है कि यह हुआ कैसे.

"पुलिस ने करवाया साहब. पुलिस ने." उसने इत्मिनान ने जवाब दिया.

"पुलिस ने." विपुल ने जानते हुए भी अनजान बनने का बहाना किया.

"हां, पुलिस की मदद के बिना कोई दुकान को थोड़े ही इस तरह गिरा सकता है. वो देखिए सामने पुलिस स्टेशन है फिर भी अंसारी साहब की दुकान का यह हाल हो गया. यह उन्होंने ही करवाया है. उसने पुलिस स्टेशन की तरफ़ इशारा करते हुए कहा.

आसपास की भीड़ उस मलबे को देखने के लिए जुट गई थी. दुकान इतनी सफ़ाई से गिराई गई थी कि आसपास की बाक़ी सारी दुकानें सही सलामत थीं.

कैसे गिराया होगा इसे इस तरह कि आसपास की एक भी दुकान को जरा भी नुकसान न हो और यह छत समेत नीचे. निलेश ने मन ही मन कहा.

"कोई कैमिकल था जिससे पूरी दुकान मलबे में तब्दील हो गई." विपुल ने कहा.

उसे याद आया कि अविनाश ऐसे किसी कैमिकल का ज़िक्र कर रहा था जो बिल्डिंगों को गिराने के काम में आता था.

"पर कैमिकल दुकान के अंदर डाला कैसे गया होगा." विपुल ने पूछा.

"हमलावरों ने पहले दुकान को लूटा होगा और दुकान के अंदर जाकर यह कैमिकल डाला होगा. तभी पूरी की पूरी दुकान एकदम मलबे में तब्दील हो गई है." उन्होंने बताया.

"कमाल है ऐसा तो पहले कभी नहीं हुआ था. इन दंगों में यह पहली बार हो रहा है." विपुल ने हैरानी से कहा.

"अरे साजिद भाई आप..." भीड़ में से एक लड़के ने पूछा.

"अरे... तुम" साजिद ने उसकी शक्ल पहचान ली थी. वह लड़का डीलक्स आप्टिकल्स में काम करता था.

"कहां हैं सब लोग. कैसे हुआ यह सब. अंसारी साहब ख़ैरियत से तो हैं." साजिद ने कई सारे सवाल उस लड़के से पूछ लिए थे.

"सब कुछ लुट गया. कुछ नहीं बचा. गुंडों ने पूरी दुकान लूट ली और बाटला लंगाकर दुकान को गिरा दिया. सारा माल लेकर भाग गए." उस लड़के ने बताया.

"और अंसारी साहब..... उनका बेटा अनवर...."

"वे सब बच गए. पर धंधा सब ख़त्म हो गया. दुकान ख़त्म हो गई." उसके स्वर में गहरी निराशा थी.

"कहां हैं सब लोग." साजिद ने उससे पूछा.

"नागरवाड़ा में." उसने बताया

"नागरवाड़ा में...."

"हां नागरवाड़ा में. एक नुक्कड़ पर छोटी सी जगह में बैठने का इंतज़ाम किया है. जरूरी काम है तो चलिए, मैं लिए चलता हूं नहीं तो मुझे बता दीजिए मैं आपका काम कर दूंगा." उसने थोड़े में बहुत कुछ बता दिया था.

"नहीं. काम तो बहुत ज़रूरी है. उनसे मिले बग़ैर होगा नहीं."

"तो चलिए मैं आपको लिए चलता हूं. गाड़ी साइड में पार्क कर दीजिए. पैदल ही चलना होगा. पास ही मैं है." उसने उन्हें रास्ता दिखाने के अंदाज में कहा.

निलेश ने गाड़ी वहीं खड़ी कर दी. वे लोग पैदल ही चलने लगे नागरवाड़ा की तरफ़. वह लड़का तंग गलियों से गुज़ार कर उन लोगों को ले जा रहा था. रास्ते में दोनों तरफ़ घर थे. गलियों में छोटे-छोटे घर. दोमंज़िला तिमंज़िला घर. उन गलियों से झांकती आंखें. बेबस और निरीह आंखें. शहर की तंग गलियों में लोग अपने-अपने घरों में बंद थे. डरे हुए लोग, सहमे हुए लोग, परेशान और त्रस्त लोग, अपने घरों को बचाते लोग. इन तंग गलियों के घरों के दरवाज़ों पर बाहर बैठे बूढ़े कहां जाएं. क्या करें. रोज़गार बंद. धंधा बंद. अख़बारों में कोई दिलचस्पी नहीं.

ऐसी ऐसी ख़बरें छपीं कि पढ़ कर मन उदास हो जाए. आवेश और ग़ुस्से का भाव लिए भटकते युवक. वे कब तक बदार्शत करेंगे और क्यों करें बर्दाश्त. उनका क़सूर हो तो करें भी बर्दाश्त. सारी गलियां ख़ामोशी की गिरफ़्त में थीं.

"इन गलियों में हर तरह के लोग मिलेंगे आपको. खुश रहने की जी-तोड़ कोशिश करते हुए, लेकिन कोई खुश नहीं रह पाता. सब छोटा-मोटा काम करके अपना गुज़ारा करते हैं. पिछले कई दिनों से तो वह भी बंद हो गया है." साजिद ने बताया.

"कौन सा काम करते हैं ये लोग." विपुल ने पूछा.

"यही कोई पतंग बनाता है. कोई रंगरेज़ है. कोई अगरबत्तियां बनाता है. कोई जिल्दसाज़ है. कोई साराभाई या ऐसी ही किसी बड़ी कंपनी में मज़दूरी करता है. इन्हीं गलियों में रहकर ये लोग अपने अभावों से लड़ेंगे. अपनी बीमारियों से लड़ेंगे. बाहर के लोगों के शक का सामना भी ये यहीं रहकर करेंगे. पर कुछ बोलेंगे नहीं. अपनी बात नहीं कहेंगे." साजिद के स्वर में ग़ुस्सा था.

उन गलियों में कई लोग थे जो ग़ोल-ग़ोल टोपियां पहने इधर-उधर आ जा रहे थे. कई बुज़ुर्ग थे जो दाढ़ी और बालों में मेंहदी लगाए अपने-अपने कामों में व्यस्त थे. कुछ महिलाओं के सिर पर बुरका था. बड़ी बूढ़ी औरतों ने बुरके को अपने सिर से ऊपर कर लिया था.

उन्हें देखकर निलेश ने कहा, "ये लोग अपनी अलग पहचान क्यों बनाए रखते हैं. क्यों नहीं सबके साथ घुल-मिल जाते."

"यही तो वह चीज़ है जिससे ये लोग चिपटे हुए हैं. यही पहचान तो इनकी अपनी है. इसी पहचान से ही तो इन्हें ताक़त मिलती है." विपुल ने कहा.

"और सिक्यूरिटी भी." निलेश ने कहा.

"काहे की सिक्यूरिटी. सबसे ज़्यादा मार इन्हीं लोगों पर पड़ती है. देश में कहीं भी ज़रा-सा फ़साद हो जाए यहां के लोग डर से जाते हैं. कहां है इनकी सिक्यूरिटी." साजिद ने कहा.

"पर इन लोगों ने अपनी पहचान तो अलग बना ही रखी है." विपुल ने कहा.

"पहनावे से अलग पहचान बनती है तो कह सकते हो कि अलग पहचान है. वैसे कोई पहचान अलग नहीं है जो पूरे देश की पहचान है वह इनकी भी है. भूख, अभाव, बीमारी और बेचारगी से ये लोग वैसे ही त्रस्त हैं जैसे देश का आम नागरिक."

"पर मस्जिद में जाने से, ख़ास तरह का लिबास पहनने से, ख़ास तरह से दाढ़ी तराशने से इनकी अलग पहचान तो बनती ही है." विपुल ने अपने तर्क के समर्थन में कहा.

"क्या बाक़ी लोग अपनी पहचान को छोड़ देंगे. क्या बाक़ी लोग मंदिरों में शंख बजाना छोड़ देंगे. क्या वे लोग धोती-कुर्ता पहनना छोड़ देंगे." साजिद ने तर्क के अंदाज में कहा.

"वे तो छोड़ रहे हैं. चलिए पोशाक न छोड़ें बालों पर मेंहदी लगाना, दाढ़ी को एक ख़ास ढंग से काटना तो छोड़ दें." निलेश ने कहा.

"छोड़ना इतना आसान नहीं है. पूरी संस्कृति का मामला है." साजिद ने कहा.

"संस्कृति एकता के लिए होनी चाहिए न कि अलगाव के लिए और शायद यही कारण है कि आम लोगों के मन में ये लोग सम्मान नहीं प्राप्त कर सके. आम लोग इन्हें हिक़ारत की नज़र से ही देखते हैं. लोग इनके साथ संबंध रखेंगे, इनके साथ धंधा करेंगे. आना-जाना रखेंगे लेकिन दिल से इनका सम्मान नहीं करेंगे. इन्हें दिल में नहीं बसाएंगे. यह एक हक़ीक़त है मानो या न मानो." निलेश ने कहा.

"इसमें आम लोगों का दोष नहीं, माहौल ही कुछ ऐसा बनाया गया है जिससे कि आम लोगों के मन में इनके प्रति कोई सम्मान पैदा न हो सके.". विपुल ने कहा.

"आम लोगों की बात नहीं, पढ़े-लिखे तबक़े की भी यही सोच है. इस देश का पढ़ा-लिखा तबक़ा भी इन लोगों को हिकारत की निगाह से देखता है." निलेश ने कहा.

"इस देश में सबसे ज़्यादा कम्यूनल कोई है तो वह है पढ़ा-लिखा तबक़ा. उनसे बात कर लीजिए कितना ज़हर भरा होगा इनके प्रति. हालांकि वे सब जानते हैं इनकी आर्थिक स्थिति, इनकी सोच, इनकी लाचारगी लेकिन इनके प्रति सहानुभूति नहीं रखेंगे. एक अप्रत्यक्ष-सी घृणा इनके प्रति उनमें हमेशा से ही विद्यमान रहती है." साजिद ने कहा.

"आज कर्फ़्यू नहीं है लेकिन लोग घरों से बाहर नहीं निकलना चाहते." निलेश ने उन घरों से झांकती बेबस आंखों को देखकर कहा.

"डरे हुए हैं लोग. अपना घर छोड़कर जाना नहीं चाहते." साजिद ने कहा.

डर... किससे डर... पुलिस से या फिर दंगाइयों से. विपुल ने मन ही मन सवाल किया.

दुकान का वह लड़का उन लोगों के आगे-आगे चल रहा था. अचानक एक दुकान पर वह रुक गया. दुकान हार्डवेयर की थी. उसका शटर आधा खुला हुआ था. आधे खुले शटर की ओर इशारा कर कहने लगा, "शटर के नीचे से चले जाइए. अंदर अंसारी साहब मिल जाएंगे आपको."

वे लोग शटर के नीचे से दुकान के अंदर गए. एक लंबी सी दुकान थी. दुकान के काउंटर पर चालीसेक साल का आदमी किसी से टेलीफ़ोन पर बात कर रहा था. उन तीनों को दुकान के अंदर इस तरह आते देख उसने टेलीफ़ोन को चालू रखने के लिए कहा और उनकी तरफ़ मुख़ातिब होकर आंखों से पूछा कि, "क्या काम है."

साजिद ने आगे बढ़कर कहा कि उमर अंसारी साहब से मिलना है. उनसे यह सुनते ही, उसने दुकान के अंदर की सीढ़ियों की ओर इशारा करते हुए कहा कि ऊपर चले जाइए और फ़ोन पर बात करने लगा.

वे तीनों सीढ़ियों से ऊपर गए. ऊपर दुकान के एक कोने में उमर अंसारी बैठे हुए मिल गए थे. साठ साल के आसपास उम्र रही होगी उनकी. मंझला क़द. लंबा चेहरा. भूरी आंखें. सफ़ाचट सन जैसी सफ़ेद दाढ़ी क़रीने से तराशी हुई. लंबा कुर्ता और पायजामा पहने हुए. उन्होंने साजिद को पहचान लिया था, "अरे बेटा तुम... सब ख़ैरियत तो है."

उन्होंने उन लोगों को सामने रखी दरी पर बैठने का इशारा करते हुए कहा. दरी पर चश्मे के बॉक्स थे. कुछ बिल थे. उन लोगों ने वहां के सामान को थोड़ा खिसकाया और अपने बैठने लायक जगह बना ली.

"इस माहौल में ख़ैरियत कैसे हो सकती है. आपकी दुकान देख कर आ रहा हूं. कैसे हुआ यह सब." साजिद ने उनके दुख में अपने आप को शामिल करते हुए कहा. उसके स्वर में मायूसी थी.

"क्या बताएं....." कुछ कहते कहते उनकी आंखों में आंसू आ गए थे.

"कैमिकल लगाकर हमारी दुकान को गिरा दिया. सारा सामान लूट लिया."

"पुलिस ने कुछ नहीं किया." निलेश ने कहा.

"पुलिस ही गिराने में सबसे आगे रही. बिना पुलिस की मदद से इतनी बड़ी तबाही नहीं हो सकती. हमारी दुकान के सामने ही पुलिस चौकी है."

उनके शब्दों में पुलिस के प्रति एक नफ़रत थी.

"बाद में आपने पुलिस को बुलाया?" विपुल ने पूछा.

"बाद में क्या हम लोगों ने पुलिस को उसी वक्त फ़ोन किया पर पुलिस से यही जवाब मिला कि वे नहीं आ सकते."

"क्यों नहीं आ सकते थे..."

"वो यही कहते रहे कि उनके पास फ़ोर्स नहीं है."

"पर ऐसा था नहीं?"

"नहीं, ऐसा नहीं था. पुलिस के पास फ़ोर्स भी थी. ताक़त भी थी. सब कुछ था उनके पास. पर पुलिस आना नहीं चाहती थी. जब लोग दुकानों को लूटने आए

तो पुलिस आगे-आगे थी और भीड़ उनके पीछे-पीछे." उनका ज़र्रा ज़र्रा रो रहा था.

"आप तो एक अर्से से गुजरात में रह रहे हैं. गुजरात में कैसे इतना बड़ा हादसा हो गया." विपुल ने जानना चाहा.

विपुल को बोलता देख अंसारी साहब ने सवालिया निगाहों से साजिद की ओर देखा.

"पापू के बहुत अज़ीज़ हैं. ख़बर सुनकर आए हैं दिल्ली से उनसे मिलने. उनका हालचाल जानने. दिल्ली में नौकरी करते हैं."

साजिद की बातों से उन्हें तसल्ली हुई.

उन्होंने विपुल को स्नेह से देखा और एक लंबी सांस ली और कहने लगे, "बहुत सारी बातें हैं. गुजरात एक तो इंडस्ट्रियल स्टेट है. वर्षों से ही गुजराती पैसा कमाने में लगे रहे. छोटे-छोटे कामों की ओर इन्होंने ध्यान नहीं दिया."

"क्यों, छोटे-छोटे कामों की ओर ध्यान क्यों नहीं दिया." विपुल की जिज्ञासा बढ़ गई.

"पैसे वाले लोग हैं बेटा. छोटे-छोटे काम इन गुजरातियों ने बाहर के लोगों पर छोड़ दिये."

"बाहर के लोग. कौन से बाहर के लोग?"

"दूसरे प्रांतों से आए लोग. और उन्होंने ही यह सब करवाया है."

विपुल को हैरानी हुई यह जानकर.

"तो क्या गुजरात के लोग नहीं हैं उनमें?" विपुल को कुछ आश्चर्य सा हुआ.

"नहीं ऐसा नहीं है. गुजरात के लोग भी उनमें हैं. बल्कि कहा जाए कि गुजरात के लोग ही आगे हैं."

"दरअसल सारा खेल सियासत का है." निलेश ने कहा.

"पर क्या पहले भी ऐसा था?" विपुल ने सवाल किया.

"नहीं पहले ऐसा नहीं होता था. पहले की बात और थी. सात आठ साल पहले भी लोगों ने पालेज पर इसी प्रकार ट्रेन में हमला किया था जिस प्रकार गोधरा में हुआ था. उस हमले के बाद हिंसा की वारदातें भी हुई थीं लेकिन वह हिंसा इतनी व्यापक नहीं हो सकी जितनी इस बार हुई है."

उन्होंने दंगों का अतीत बताया.

"अंदाजन कितना नुकसान हुआ होगा." विपुल ने पूछा.

"इस आग में गुजरात कई वर्षों पीछे चला गया. हजारों फैक्टरियां बंद हो गईं. सैकड़ों उद्योग तबाह हो गए और मुस्लिम मजदूर या तो किसी दूसरे राज्य में जा रहे हैं या फिर किसी सुरक्षित जगहों पर जा रहे हैं."

“आपकी दुकान में कैसे हुआ सब.” साजिद ने जानना चाहा.

“रात के दो बजे तक कुछ नहीं हुआ. दो बजे तक हम लोग दुकान के पास ही थे. जो कुछ हुआ दो बजे के बाद ही हुआ.”

“कैसे हुआ था?”

“पहले तो दुकान के शटर पर कोई कैमिकल लगाया गया. उस कैमिकल से शटर में बहुत बड़ा होल हो गया. मवाली लोग उस होल से दुकान के अंदर गए. पहले दुकान का सारा सामान उठा लिया. दुकान के पंखे निकाल लिए. टेलीफोन निकाल लिया. कम्प्यूटर और आई-टेस्टिंग मशीन उठा लिए और फिर गैस सिलेंडर लगाकर पूरी दुकान को उड़ा दिया.” कहते-कहते उनकी आंखों में आंसू आ गए.

उनकी बातें सुनकर एक मायूसी-सी सबके चेहरे पर छा गई. थोड़ी देर तक दुकान में सन्नाटा रहा. जब वे थोड़ा संयत हो गए तो निलेश ने पूछा, “कौन लोग थे. बड़ौदा के थे...?”

“नहीं बाहर के थे. हैल्मेट पहनकर आए थे रात के तीन बजे. हमको पुलिस ने दो बजे के बाद भगा दिया. कहने लगे आपकी जान को खतरा है. आप लोग यहां से चले जाओ. हमें आशंका थी कि जरूर कुछ होगा लेकिन इस तरह सब कुछ मिट्टी में मिल जाएगा इसकी उम्मीद नहीं थी.” उन्होंने लगभग सुबकते हुए कहा था.

“आस-पड़ोस के दुकानदारों ने नहीं रोका उन्हें. रात को वे लोग भी अपनी दुकानों की हिफाजत के लिए अपनी दुकानों पर रहे होंगे?” विपुल के मन में सहज सा सवाल उठा.

“वे कैसे रोकते, उनको धमकाया गया कि यदि उन्होंने रोका तो उनकी दुकान भी लूट लेंगे. देखिए आप सामने अनाज मार्केट है. लेकिन एक भी दाना नहीं लूटा गया. अनाज मार्केट की सारी दुकानें हिंदुओं की हैं. लूटपाट करने वाले सारे लोग बाहर से आए थे. और लूटपाट के लिए पूरे शहर में एक ही तरकीब अपनाई गई.”

“कौन सी तरकीब?” विपुल की उत्सुकता बढ़ गई.

“यही कि नारे लगाते हुए ट्रक में भरकर लोग आते थे. उनके पीछे टैम्पों में लोग थे. आवारा किस्म के लोग. ट्रक में से उतरते थे. उनके हाथों में छुरे और त्रिशूल थे. किसी के हाथ में बम भी थे. वे पहले दुकानों को लूटते थे. फिर दुकान में आग लगाते थे. और इसके बाद किसी को मोबाइल फोन करके अपनी सफलता की खबर देते थे. उनके हाथों में लिस्ट थी. उस लिस्ट से उन्हें पता चलता था कि कौन-सी दुकान मुसलमान की है कौन-सी दुकान हिंदू की है. दुकानों और मकानों

को गिराने में एसिटिलीन गैस का इंतजाम किया गया. ऐसा विभाजन के बाद में इतिहास में पहली बार हुआ था.'' उन्होंने विस्तार से शहर में हुए हादसों के बारे में बताया.

''पुलिस ने कुछ गिरफ्तारियां तो की होंगी.'' निलेश ने जानना चाहा.

''हां, दिखाने के लिए कुछ गिरफ्तारियां की थीं लेकिन अगले ही दिन सबको छोड़ दिया गया. एक भी एफ.आई.आर. दर्ज नहीं की गई.'' उनके स्वर में पुलिस के प्रति एक गुस्सा था.

''आपने अख़बार में पढ़ा होगा कि अहमदाबाद में जाफरी साहब ने सुबह पुलिस के आई.जी. को फोन करके बताया था कि उनकी जान को खतरा है. लेकिन कुछ नहीं हुआ. दो घंटे बाद उन्होंने फिर पुलिस को फोन किया लेकिन कुछ नहीं हुआ. आखिर भीड़ ने उनके घर को आग लगा दी और निर्ममता से उनकी हत्या कर दी गई. जब जाफरी साहब अपने लिए कुछ नहीं कर सके तो आम मुसलमान की क्या बिसात. जब पुलिस ही मारने पर उतर आए तो कोई क्या कर सकता है.'' कहकर वे चुप हो गए.

''आप बताइए कि क्या आप पंद्रह करोड़ मुसलमानों को इस देश से बाहर निकाल सकते हैं.''

किसी ने कोई जवाब नहीं दिया. न साजिद ने. न विपुल ने. न निलेश ने.

उन्होंने खुद ही कहना जारी रखा, ''नहीं न. क्या पंद्रह करोड़ मुसलमानों की हत्या कर सकते हैं. नहीं न. क्या पंद्रह करोड़ मुसलमानों को पाकिस्तान भेज सकते हैं. नहीं न. तो फिर इन पंद्रह करोड़ मुसलमानों को अपना क्यों नहीं बना लेते.''

उनके स्वर में गुस्सा भी था. नर्मी भी थी. आक्रोश भी था.

''बनाया तो है अपना. यह तो कुछ लोग हैं जिन्हें अच्छा नहीं लगता.'' बातचीत में हिस्सा लेते हुए निलेश ने कहा.

''वही लोग हैं जिन्हें हम फूटी आंख नहीं सुहाते. एक सौ पचास साल से हैं हम इस शहर में. हिंदुओं से मिलना-जुलना है हमारा. एक दूसरे के त्यौहारों में हम आज भी जाते हैं. हमने कभी सोचा भी नहीं है कि हम अलग-अलग हैं. कोई डर नहीं था. दंगे तो ख्वाब में भी नहीं सोचे थे. गायकवाड स्टेट में ऐसा नहीं था. गणपति की स्थापना में हम लोग आगे रहते थे. जुलूस में हम लोग आगे रहते थे. नवरात्रि में गरबा का आयोजन हम लोग करते थे. यहां तक कि हिंदुओं ने कभी नहीं सोचा कि हम मुसलमान हैं. मुसलमानों ने कभी नहीं सोचा कि वे हिंदु हैं. जैन मंदिरों में मनोरंजन कार्यक्रम हम करवाते थे. कोई खतरा नहीं था.'' उन्होंने बताया.

"अब कैसे हो गया. इस शहर में अब इतना तनाव कैसे हो गया?" विपुल ने पूछा.

"इन लोगों ने तनाव को बढ़ाया. और इसी तनाव के सहारे हिंदुस्तान को बांट दिया. गायकवाड एस्टेट को बांट दिया. बड़ौदा को बांट दिया. पिछले बीस सालों से ऐसा माहौल बनाया गया कि हम हिंदू बन जाएं या हम मुसलमान बन जाएं. हम इंसान न बनें, बाकी सब कुछ बन जाएं." उन्होंने बताया.

"किसने बनाया." निलेश ने गुस्से में कहा.

"हिंदुओं ने बनाया. मुसलमानों ने बनाया." उन्होंने संजीदगी से कहा.

"मुसलमानों ने." निलेश के स्वर में कुछ हैरानी थी कि मुसलमान भी इस तनाव के माहौल को बनाने में जिम्मेदार हो सकते हैं.

"हां मुसलमानों ने भी तनाव को बढ़ाया. मुसलमान भी कम जिम्मेदार नहीं हैं. ये लोग अड़ गए धर्म को लेकर. इन मुसलमानों ने उन लोगों का नहीं, अपने ही लोगों का नुकसान किया है. मुस्लिम बिरादरी का नुकसान किया है."

"अब हल क्या हो सकता है. कैसे सद्भाव बढ़ाया जाए? विपुल ने पूछा.

"एक दूसरे में विश्वास पैदा किया जाए." उन्होंने बताया. "पर एक बात आप समझ लीजिए कि तमाम मुसलमान पाकिस्तानपरस्त नहीं हैं– इस चीज़ को समझना चाहिए. सैंतालीस में एक लकीर खींच दी गई थी. आधे रिश्तेदार इधर आधे उधर. संबंध तो रहेंगे ही. फिर शादी-ब्याह भी हो रहे हैं. कैसे अलग कर सकते हैं." उन्होंने अपनी बात का खुलासा किया.

"क्या आम मुसलमान इस देश को छोड़कर जाने की सोचता है?" अचानक निलेश ने उनसे पूछा.

निलेश के इस सवाल से वे एकदम रुष्ट-से हो गए. गुस्से में बोले, "यह एकदम वाहियात बात है. यह भी एक झूठ लगातार फैलाया जा रहा है. यह आप अच्छी तरह समझ लीजिएगा कि एक आम मुसलमान इस देश को छोड़कर जाने की नहीं सोचता. कैसे जाए और कहां जाए. पाकिस्तान में जाए.... या फिर इराक, ईरान में जाए... इन देशों में उनका अपना कोई है नहीं. यहां उनके अपने हैं. यह तो झूठे प्रचार के कारण हर मुसलमान को शक की निगाह से देखा जाता है. आप मुल्क छोड़कर जाने की बात करते हैं, अहसान जाफरी की पत्नी का स्टेटमैंट आया है अख़बार में. उनका कहना है कि वे उसी कॉलोनी में रहेंगी. वे चमनपूरा में ही रहेंगी जहां जाफरी साहब का घर है. मुल्क तो मुल्क वे तो इस मौहल्ले को छोड़कर नहीं जाना चाहतीं."

वे कहते-कहते कांपने से लगे थे.

थोड़ी देर तक सन्नाटा छाया रहा. कुछ देर बाद उन्होंने फिर कहना शुरू

किया, "उन्नीस सौ बयासी में हमारी दुकान लूटी. इस बार फिर लूटी. आखिर कब तक हम लोगों के साथ ऐसा ही होता रहेगा?"

"बहुत गलत हुआ. आखिर इन लोगों ने इनका क्या बिगाड़ा था." साजिद ने सहमे-से स्वर में कहा.

सब लोग चुप हो गए किसी के पास कहने के लिए कुछ नहीं बचा था.

कुछ लम्हे बाद साजिद बोला, "पापू के पास कोई पढ़ने का कोई चश्मा नहीं है. उनके चश्मे पुराने घर में छूट गए. बिना चश्मे के उन्हें काफी दिक्कत हो रही है. चश्मे बनावाने के लिए ही आपके पास भेजा है उन्होंने. कहा है कि नंबर तो आपके पास है ही. उससे नया चश्मा बनाने में आसानी रहेगी."

साजिद ने अपने आने का कारण बताया.

"नंबर था तो सही बेटा. पर दुकान में था. सब जल गया." उमर अंसारी ने बैचेनी से बताया.

अवांक रह गया यह सुनकर साजिद. तो फिर चश्मा कैसे बनेगा.

"ओह.... " उसके मुंह से निकला.

"देखता हूं शायद घर में भी उनके चश्मे का नंबर रखा हो. पोथीवाला साहब तो पुराने दोस्त है. हम लोगों ने मिलकर मुस्लिम लड़कियों की पढ़ाई के लिए बहुत काम किया है. ढूंढ़ता हूं शायद उनका नंबर घर में मिल जाए तो खबर करता हूं. मिलेगा तो चश्मा बनवा दूंगा."

"पर अंकल बनाएंगे कैसे दुकान तो...." विपुल ने कहा.

उसकी अधूरी बात का आशय अंसारी साहब समझ गए थे. बीच में बोले, "यह दुकान जान-पहचान वालों की है. गली के अंदर है. होलसेल का काम है इनका. भले लोग हैं. खुद ही कहने लगे. दुकान का तो कुछ ठिकाना नहीं. ऐसे कब तक चलेगा. यहीं बैठ जाओ. जितना हो सकता है करो. हम लोग भी मान गए. धंधा तो करना ही है. आप जैसे परमानेंट ग्राहक पूछ रहे थे."

"हां वो तो है आखिर कब तक बिना काम के रहा जा सकता है." साजिद ने कहा.

"दो चार दिन बाद चश्मे का नंबर ढूंढ़ कर नया बनवा दूंगा और खुद ही देने आ जाऊंगा. पोथीवाला साहब से कहना चिंता न करें, अपना ख्याल रखें."

वे सब मौन थे. किसी के पास कहने के लिए कुछ खास नहीं था.

"शाम हो रही है आप लोग जल्दी चले जाइए. माहौल अभी भी पूरी तरह ठीक नहीं है." उन्होंने उन लोगों को जाने की सलाह दी.

वे तीनों उठ खड़े हुए. उन्होंने लड़के को आवाज दी और कहा कि उन लोगों को गाड़ी तक पहुंचा आए.

वह लड़का उनके साथ हो लिया और उन्हें वापस उन्हीं गलियों से गुज़ारता हुआ मेन रोड तक ले आया जहां उनकी गाड़ी खड़ी थी. सड़कों पर आवाजाही लगभग बंद हो गई थी. वातावरण में सन्नाटा था. निलेश ने गाड़ी स्टार्ट की और उनकी गाड़ी रावपुरा से बाहर निकलने लगी.

10

अगले दिन पोथीवाला अपने घर को देखने गए थे. खादी का लंबा कुर्ता और सफेद पायजामा पहने. कंधे पर सफेद शाल थी. आंखों में सूनापन. साथ में उनकी बेटी थी अफरोज. आसमान एकदम साफ था. एक भी परिंदा आकाश में नहीं था. दूर तक कॉलोनी की सड़कें पूरी तरह शांत थीं. कहीं कोई आदमी नहीं दिखाई दे रहा था. सुबह के नौ बजे थे. सूरज अपने पूरे ताप में था. हवा में सन्नांटा था.

कार ने जब उनकी कॉलोनी में प्रवेश किया ही था कि अफरोज ने कहा, "पापू अब घर तो पूरी तरह जल गया. अब तो वहां पुलिस है. अब वहां क्या बचा होगा?"

पोथीवाला ने उसकी बात का कोई जवाब नहीं दिया. केवल कार के शीशे से बाहर सूनी सड़क को देखते रहे जो अब उनके लिए बेगानी हो चुकी थी. सड़क के आसपास की दुकानों में बीच में से कुछ दुकानों के शटर गिरे हुए थे. जले हुए. वे एक अजीब मंजर पैदा कर रहे थे. एक खौफनाक मंजर जिसे देखते आदमी डर जाए.

सड़क के कोने में धोबी की लारी जल कर राख हो चुकी थी. वे हैरानी और निराशा से यह सब मंजर देख रहे थे. इस प्रकार के मंजरों की कल्पना उन्होंने नहीं की थी. अफसोस की रेखाएं उनके चेहरे पर छा गई थीं.

उनके अपने घर की सड़क शांत और वीरान थी.

घर के सामने आकर अविनाश ने कार रोक दी. घर एकदम सूना था. सामने सैकड़ों पांवों से रौदा हुआ घर था. उजड़ा हुआ. पेड़ों से टूट कर बिखरे हुए सूखे पत्ते. बाहर का दरवाजा पूरी तरह झुलस चुका था. घर को देखकर मन में एक अजीब-सी वेदना हुई. पूरे शरीर में एक सिहरन-सी दौड़ गई. वे सहम-से गए. हिचकिचाते हुए उन्होंने अपना कदम अपने घर की छोटी सी बगिया में रखा. घर का रास्ता इसी बगिया से होकर जाता था.

पूरा घर जला हुआ था. जली हुई दीवारें, खिड़कियां, दरवाजे, टूटे हुए कांच, गिरे हुए पेड़-पौधे डर पैदा कर रहे थे. अमीना के लगाए गए परिजात के फूलों के पेड़ जलकर राख हो गए थे. उनका दिल तेजी से धड़कने लगा था. पिछले बीस सालों से वे इस घर में रह रहे थे.

कितना लंबा अर्सा था. अमीना की यादें. मीर, अफरोज, साजिद का बचपन, उनकी स्मृतियां इस घर के जर्रे-जर्रे में थीं. आज अमीना नहीं थी, उनका अपना मीर नहीं था. तो उनके सपनों का घर खत्म हो चुका है. वे एकदम अकेले रह गए. सुबह की धूप पूरे घर में फैली हुई थी. वह घर जो उनके सपनों का प्रतीक था, जहां पर वे स्कूल के बच्चों को साइंस पढ़ाया करते थे, वह घर पूरी तरह आग में झुलस चुका था. घर के गेट पर उनका नाम खुदा था डॉ. के.एम. पोथीवाला. उसे खरोंचकर मिटाने की कोशिश की गई थी लेकिन नाम उनका मिट नहीं सकता था. खिड़कियों के शीशे टूट चुके थे. पूरे घर में जगह जगह पत्थर और कांच के टुकड़े बिखरे हुए थे. घर की सारी दीवारें धूएं से काली हो गई थीं. जला हुआ फर्नीचर घर में पड़ा हुआ था. उनकी किताबों का कमरा, उनकी रसोई. उनका ड्राइंग रूम, उनकी किताबें सब कुछ स्वाहा हो चुका था.

घर के अंदर जाने से पहले वे छोटी-सी बगिया में गए. अमीना ने बड़े प्यार और चाव से इस बगिया के पौधों को लगाया था. पूरी सावधानी और सतर्कता से बगिया के एक-एक पौधे की हिफाजत की थी. उन्हें आंधी तूफान से बचाया था. एक-एक पौधे की रखवाली अपने बच्चों जैसी की थी. अशोक के छोटे-छोटे पेड़. गुलमोहर, गुलाब, रातरानी, गैंदा जैसे फूलों से महकने वाली बगिया जल कर राख हो गई थी. उस बगिया में पहुंचकर गहरी वीरानगी उनके मन में छा गई. इस बाग के साथ अमीना की स्मृतियां जुड़ी हुई थीं. उनके सपने जुड़े हुए थे.

"तुम्हारी अम्मी ने इस घर को बड़े चाव से बनाया था. उनके जाते ही यह भी खत्म हो गया." परिजात के पौधे को छूते उन्होंने अपनी बेटी से कहा और आंखों में आते आंसुओं को रोक लिया.

पड़ोस से एक-दो लोग उन्हें देखकर बाहर आ गए थे. वे भी उनके साथ उस बाग में आ गए थे. पोथीवाला से उन्होंने केवल आंखों से ही अभिवादन किया था. उन्हें वहां देखकर एक ने कहा, "जो कुछ हुआ ठीक नहीं हुआ सर."

उनकी बात सुनकर पोथीवाला ने एक लंबी सांस ली और कहा, "प्रार्थना करो कि फिर से ऐसा न हो."

वे कुछ कहते-कहते रुक गए. उनकी आंखें नम हो गईं. पानी की पतली सी

लकीर आंखों में आ गई. किसी गहरी सोच के साथ उन्होंने अपने घर का दरवाजा खोला. हजारों-हजार सवाल उनके मन में उमड़ रहे थे जिनका इस वक्त कोई जवाब नहीं था उनके पास. सूने मन से उन्होंने उस घर में कदम रखा और घर के एक-एक कर सारे कमरे देख आए. हर कमरे में कुछ देर रुके. दीवारों को अपलक देखते रहे. खाली पड़ी अल्मारियों के दरवाजे खोल-खोल कर देखते रहे. वहां कुछ नहीं मिला. सब कुछ खाली था. अफरोज, साजिद, अविनाश, निलेश, विपुल किसी को पता भी नहीं था कि वे क्या ढूंढ़ रहे हैं.

विपुल भी सन्न था. घर के जर्रे-जर्रे में अमीना और बच्चों की स्मृतियां थीं. उसकी आवाजें थीं. प्यार भरे लमहे थे. उसके साथ बिताई पूरी जिंदगी थी.

"पापा, अम्मी ने कभी नहीं सोचा था कि इस घर की यह हालत हो जाएगी." अफरोज ने उनके मन के सन्नाटे को तोड़ने की कोशिश की.

"अम्मी ने क्या बेटा, किसी ने नहीं सोचा था कि यह इस तरह खत्म हो जाएगा." उंन्होंने धीरे से कहा.

चलते चलते उनके कदम लड़खड़ा रहे थे. लग रहा था कि चक्कर आ जाएगा. वे वहीं फर्श पर बैठ गए. वे हर कमरे में जाते समय ठिठक कर रह जाते. फटी-फटी आंखों से कमरे की दीवारों को देखते. कमरे के खालीपन को देखते और उस खालीपन को देखकर उनके अंदर का सूनापन और ज्यादा गहरा जाता. वे एक गहरी सांस लेते. उनके भीतर ही भीतर एक बवंडर था जो थमने का नाम नहीं ले रहा था.

"हमने नहीं सोचा था कि इस घर का यह हाल हो जाएगा." उन्होंने विपुल को देखते हुए कहा.

वे लड़खड़ाते पैरों से घर की छत पर गए. छत ज्यों की त्यों थी. छत पर खड़े होकर उन्होंने शहर को देखा. किसी रहस्य की तरह यह शहर लग रहा था. बड़ी इमारतें. बड़ी-बड़ी कॉलोनियां, दूर तक फैले घर. सड़कें और सड़कों पर सन्नाटा. हरे-हरे पेड़ और पेड़ों पर मौन. एक शांति का आलम था. एक मरघट-सी शांति. दूर सोसायटी के घरों की सूनी-सूनी छतें थीं. उन सूनी छतों पर तेज धूप पसरी हुई थी. कहीं हवा नहीं थी. सब तरफ सन्नाटा था. ऊपर आसमान पर सूरज अपने पूरे ताप में तप रहा था.

वे काफी देर तक छत पर खड़े रहे. गुमसुम. तपती धूप में दूर कहीं देखते हुए. फिर धीरे धीरे सीढ़ियां उतरते नीचे आ गए. घर का आंगन, मुंडेर, बरामदा, अपना ड्राइंग रूम, रीडिंग रूम, रसोई मुश्किल से पहचान में आ रहे थे. उन्हें नहीं लग रहा था कि यह उनका अपना घर है. उनके बाग के फूल मुरझा चुके थे. फूलों के पौधे अस्त-व्यस्त हो गए थे. पूरा घर अनजान सा लग रहा था.

वे इस मंजर को देख कर डर से गए थे. एक गहरी उदासी उनके चेहरे पर छा गई थी.

अफरोज, साजिद, अविनाश, निलेश और विपुल उनका इंतजार कर रहे थे. नीचे आते ही उन्होंने धीरे से कहा, "चलो बच्चो वापस. यहां अब कुछ नहीं बचा है. सब कुछ खत्म हो गया."

वे लोग घर से बाहर निकल आए. आसपास के रहने वाले भी कुछ लोग इकट्ठा हो गए. उनमें भरत पटेल भी थे. उन्होंने गर्मजोशी से भरत पटेल से हाथ मिलाया. उनकी आंखें डबडबा गईं और कार में आकर बैठ गए.

अविनाश ने कार स्टार्ट की तो उन्होंने इस घर को अंतिम बार देखा और माथे तक हाथ ले जाकर इस घर को अंतिम सलाम किया. अमीना का हंसता चेहरा उनके मन में था. उसकी स्मृतियां संजोए वे सामने सूनी सड़क की ओर देखने लगे.

"एक सपना था कि हिंदू और मुसलमानों के मिले-जुले घर हों, वह सपना बर्बाद हो गया. धूल धसरित हो गया." कार जब कॉलोनी से बाहर आई तो उन्होंने बहुत दुख से कहा.

उनके मन में गहरी निराशा थी.

11

पोथीवाला की डायरी पढ़ने की विपुल की बेहद इच्छा थी. रात के समय में मैं डायरी खोल कर बैठ गया. डायरी जगह-जगह से झुलस चुकी थी. कहीं-कहीं कुछ पन्ने साबुत बचे थे.

उनकी डायरी में गुजरात के पहले के गर्वनर का एक पत्र फोल्ड करके रखा हुआ थां जो उन्होंने गुजरात छोड़ते समय उन्हें लिखा था. उन्होंने लिखा था–

गुजरात की राजनीति में आपने अपना जो सार्थक योगदान दिया उसकी मैं सराहना करता हूं. मुझे विश्वास है कि गुजरात की राजनीति को सही दिशा देने में आप अपने प्रयासों में सफल होंगे. हालांकि आप अपने प्रयासों में पहले ही सफल हो चुके हैं. आपके विचार युवकों को प्रभावित कर रहे हैं. यह ठीक है कि हिंदुओं और मुसलमानों दोनों में कुछ ऐसी खतरनाक प्रवृत्तियां उभरकर सामने आई हैं जो हमारे देश के लिए घातक हैं लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि देर-सबेर उन्हें अपने ही फायदे के लिए यह बात समझ में आएगी कि कठमुल्लेपन को छोड़कर आधुनिक सोच को अपनाना है.

फ़ासीवादी ताकतें फ़िरकापरस्त उद्देश्यों के लिए हिंसा का प्रयोग करती हैं. एक खास समुदाय के लोगों को अपनी हिंसा का शिकार बनाती हैं. जनता में उत्तेजना फैलाना, जनता में ग़ुस्से को फैलाना, समुदाय विशेष के खिलाफ़ गैर सांविधिक तरीकों का उपयोग करना, दूसरे धर्म के लोगों की जान-माल को नुकसान पहुंचाना और जो लड़ाकू हो वही जिए- जैसा वातावरण पैदा करना ही इनका मूल मकसद है.

जिस पन्ने में यह पत्र फोल्ड करके रखा हुआ था, उसी पन्ने पर पोथीवाला ने लिखा था–

पूरे गुजरात में फ़ासीवादी ताकतों का बढ़ता प्रभाव न सिर्फ मुसलमानों के लिए घातक है, वरन पूरे देश के लिए विनाशकारी है. इन ताकतों ने मुसलमानों के खून

और आंसुओं से अपनी ताकत हासिल की है. इन ताकतों ने गुजरात के पचास लाख मुसलमानों को हाशिए पर ला दिया है. मुसलमान गरीब है और बेहद अशिक्षित है. लेकिन जीवन की प्रतिकूल स्थितियां आने वाले दिनों में उन्हें और भी मजबूत बना देंगी. मुसलमान न तो गुजरात छोड़ेंगे और न ही संघ की दया पर यहां सैकेंड ग्रेड सिटिजन बनकर रहेंगे.

फरवरी 95

मुसलमानों को नए संकटों का सामना करने के लिए अपनी जीवनशैली बदलनी होगी. उन्हें रोजगार में आना होगा. रोजगार न मिले तो अपने आप को किसी व्यवसाय से जोड़ना होगा. उन्हें अपनी आर्थिक हालत हर हाल में मजबूत करनी होगी. अपनी बदहाली को दूर करना होगा. बिना बदहाली को दूर किए मुस्लिम समाज आगे नहीं आ सकता. यह खुशी की बात है कि नौजवान मस्जिद से दूर रहने लगे हैं, यह एक शुभ लक्षण है.

हमें यह बात अच्छी तरह जान लेनी चाहिए कि शिक्षा के सहारे ही मुसलमानों को सम्मान और गौरव मिल सकेगा. मुस्लिम समुदाय की नींव महिलाओं पर निर्भर है. मुस्लिम महिलाओं को अपने आप को हजरत खादिजा और हजरत फातिमा की तरह आधुनिक बनाना चाहिए.

अमीना, मैं तुम्हारा कर्ज़दार हूं. कई बार सोचता हूं मेरे खातिर तुमने अपने को खत्म कर दिया. तुममें गजब का माद्दा है. एक तरफ स्कूल का दबाव और दूसरी तरफ अपने अम्मी-अब्बा का दबाव. तुमने उनके यहां भी मेरे खातिर आना-जाना बंद कर दिया. तुम्हारे कारण ही मैं कुछ कर पाया हूं. तुमने बच्चों को संभाला और मुझे भी. तुम्हारा कर्ज़दार हूं मैं.

मार्च 1995

फिल्म बंबई के प्रदर्शन पर हुए विवाद के बारे में उन्होंने अपनी डायरी में लिखा था :

बंबई फिल्म का विवाद सुलेमान रश्दी के संदर्भ में हुई घटनाओं को ही दोहराएगा. सांप्रदायिक सद्भाव पर बनी एक बेहतरीन फिल्म को हमें धार्मिक पूर्वाग्रहों में नहीं बदलना चाहिए. मुस्लिम लड़की यदि किसी हिंदू लड़के से शादी करती है तो इसमें मुसलमानों के परेशान होने की क्या जरूरत है.

क्या हम लोग अभी भी पाषाण युग में रह रहे हैं जहां पर औरतों को एक संपत्ति के रूप में देखा जाता था. उसने अपने समुदाय से बाहर के लड़के से शादी

करके मध्यवर्गीय [illegible] है. लेकिन समुदाय के लड़के द्वारा दूसरे समुदाय की लड़की से शादी करना स्वागत-योग्य है. यह विजय का प्रतीक है.

अमीना के लिए

तुमने अच्छा किया कि मीर को अमेरिका भेजने की तैयारी कर ली है. यदि फैसला मेरे ऊपर ही छोड़ा होता तो शायद मैं यह फैसला नहीं ले पाता जो तुमने लिया. मैं यह तो नहीं कहता कि मैंने अमेरिका छोड़कर गलत किया है. लेकिन यदि बच्चे अपनी योग्यता और कामों से अमेरिका में रहते हैं तो क्या बुरा है. पर उसकी शादी जरूर किसी भारतीय लड़की से हो. यह मेरी एक इच्छा है. पता नहीं पूरी भी होगी कि नहीं.

अगस्त 95

अयोध्या की समस्या को हिंदुओं की समस्या के रूप में देखा जाना चाहिए न कि मुसलमानों की समस्या के रूप में. इससे संबंधित जो भी मुद्दे उठाए गए हैं उन्हें हमारे हिंदू भाइयों ने ही मिलकर हल करना है. मुझे विवेकानंद और गांधी के हिंदुत्व पर पूरा विश्वास है. कोई भी मुस्लिम लीडर यदि इसमें कटुता पैदा करता है तो उसकी निंदा की जानी चाहिए. बुखारी को यह समझा दिया जाना चाहिए कि उनकी नीतियों ने सूरत, बाम्बे और कानपुर में लाखों मुसलमानों को तबाह कर दिया है.

सितंबर 95

गुजरात में अहमदाबाद को एक दासता के प्रतीक के रूप में देखा जाता है. सुलतान अहमदशाह कौन था. ज्यादातर लोगों को इसका पता नहीं है. लोग सुनी-सुनाई कहानियों पर ही यकीन कर रहे हैं. इतिहास की किताबों में एक नेक आदमी के रूप में सुल्तान अहमदशाह का उल्लेख किया गया है. वह न्याय के प्रति प्रतिबद्ध था. वह कवि था और कला एवं वास्तुशिल्प का हिमायती था. अहमदाबाद के 'तीन दरवाज़ा', अहमदाबाद के 'जामा मस्जिद' पर उसकी छाप है. वह एक बेहतर और नेक इंसान था और लोग उसे चाहते थे. उसके वंश ने उसके नाम से 132 वर्षों तक राज्य किया और बाद में उसके वंश को मुगलों के साम्राज्य में मिला दिया गया.

यह बहुत [illegible] को भुला दिया गया है. उसका अपराध यही है कि उसके नाम के आगे अहमद जुड़ा हुआ है. पिछले एक हजार साल के दौरान इस्लाम और भारत को लेकर बहुत ही दुखद घटनाएं हुईं जिस पर सभी भारतीयों का सिर शर्म से झुक जाता है. लेकिन साथ ही अकबर और दाराशिकोह भी हुए हमारे बीच में है. ताजमहल और कुतुबमीनार भी है और सबसे महत्त्वपूर्ण बाबा फरीद और ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती हैं. भारतीय संस्कृति, कला और नैतिक मूल्यों को हटाना बिल्कुल असंभव है.

मुसलमान भी उतने ही भारतीय हैं जितने कि हिंदू. 99 प्रतिशत मुसलमान दलित ही थे जिन्होंने हजारों साल पहले इस्लाम स्वीकार कर लिया था.

अक्तूबर 95

आज मुसलमानों को इतिहास में मुस्लिम शासकों द्वारा किए गुनाहों का प्रायश्चित करने के लिए कहा जा रहा है. इससे देश में घृणा की भावना ही बढ़ रही है. प्यार बांधता है लेकिन घृणा बांटती है. यह घृणा जंगल की आग की तरह सब कुछ जलाकर राख कर देती है. मोहम्मद अली जिन्ना ने पाकिस्तान लेने के लिए घृणा का सहारा लिया. आज पाकिस्तान में घृणा है. चाहे यह घृणा उसके अपने लोगों के प्रति हो या भारत के प्रति हो.

नवंबर 95

मीर आज अमेरिका चला गया. उसके जाने से घर एकदम खाली हो गया. अमीना बाहर से तो खुश है पर मुझे पता है कि वह खुश नहीं है. वह मीर को सुरक्षित भी देखना चाहती है. उसका कैरियर भी बनाना चाहती है और अपने पास भी रखना चाहती है. उसे मेरे पास भी रखना चाहती है और मुझसे दूर भी. उसके जाते ही वह भी अकेली-सी हो गई. स्कूल से आकर उसका मन मीर और उसकी बातों में ही लगा रहता है. वह अमेरिका चला गया यह ठीक है. पर भीतर ही भीतर मुझे एक अफसोस भी है. वह हिंदुस्तान में भी रह सकता था. इस घर में. हम लोगों के पास. अपनी अम्मी के पास. मेरे पास. शायद उसे लगता है कि यहां उसकी कद्र नहीं होगी. कम्प्यूटर इंजीनियरों की इतनी मांग नहीं होगी जितनी अमेरिका में है. या शायद वह भी यह सोचता हो कि एक मुसलमान इंजीनियर को कोई अच्छी नौकरी न मिले. पर ठीक ही किया उसने. उसे बनाने में उसकी मां का काफी रोल रहा. मैं तो अपने में ही मग्न रहा. जहां रहे वह, खुश रहे. पर यहां रहता तो और भी अच्छा रहता.

दिसंबर 95

आज सूरत गया था एक सेमिनार में भाग लेने. मुसलमानों का विकास कैसे किया जाए– इस पर बातचीत करने के लिए अहमदाबाद के एन.जी.आर. ग्रुप की ओर से सूरत में एक सेमिनार रखा गया. सेमिनार में मुसलमानों की शिक्षा, व्यवसाय और उनकी सामाजिक स्थितियों में सुधार पर बातचीत की गई. जुए और शराबखोरी जैसी सामाजिक बुराइयों पर बातचीत भी की गई. मुस्लिम छात्रों का स्कूल छोड़ना, मुस्लिम महिलाओं में गर्भपात की बढ़ती दर और विवाहों में फिजूलखर्ची पर भी लोगों ने चिंता व्यक्त की. इमाम और मौलवियों की कम तन्खाह पर सेमिनार में चिंता व्यक्त की गई. ये इमाम और मौलवी मुस्लिम समाज में तब्दीली लाने में निर्णायक भूमिका निभा सकते हैं. पर दुख की बात तो यह है कि ज्यादातर इमाम और मौलवी चीजों को टोटेलिटी में नहीं देख पाते. सेमिनार में इस पर सहमति व्यक्त की गई कि मुसलमानों की समस्याओं को महिलाओं को आर्थिक और सामाजिक सुरक्षा देकर दूर किया जा सकता है.

अमीना ने स्कूल में नौकरी कर अपनी स्थिति खुद ही मजबूत की. अफरोज और साजिद अब बड़े हो रहे हैं. वह भी घटनाओं को धीरे-धीरे समझ रहे हैं. मुझे लगता है कि ये दोनों भी अपने बडे भाई मीर की तरह अपने रास्ते खुद ही तलाश लेंगे.

अप्रैल 96

आज बड़ौदा के स्लम इलाकों में गया. बड़ौदा के रैनबसेरा और कमाटीपुरा जैसे स्लम इलाकों में जाकर देखा तो पाया कि वहां बेइंतहा गरीबी है. और गरीबी के कारण ही माता-पिता अपने बच्चों को स्कूल नहीं भेजना चाहते. उनके पास इतने पैसे नहीं हैं कि वे अपने बच्चों को पढ़ा सकें. गरीबी के कारण मुस्लिम बच्चे स्कूल नहीं जा पा रहे हैं. और जो बच्चे स्कूल जाते हैं उनमें से दस प्रतिशत बच्चे भी गणित में पास नहीं हो सकते. क्या करेंगे ये बच्चे?

जुलाई 97

लखनऊ के सियाओं के मौलवी के अपमानजनक व्यवहार की निंदा की जानी चाहिए. ये मौलाना पूरे देश में शिया सुन्नी के झगड़ों को बढ़ा रहे हैं. वे धार्मिक जलूस को सुन्नियों के मौहल्लों से ले जाकर इस्लाम के खलीफाओं का अपमान कर रहे हैं.

अयोध्या एक ऐसा प्रेत है जो हमें कई समय तक सताता रहेगा. हमें इससे जूझना होगा. अयोध्या केवल एक मस्जिद को गिराना ही नहीं है वरन अल्पसंख्यकों पर बहुसंख्यकों का आतंक स्थापित करने की कोशिश है. इसका मकसद केवल सत्ता प्राप्त करना है और यह सब राम के नाम पर किया गया जिन्होंने हमेशा भाईचारे का ही संदेश दिया. श्री जिन्ना ने भी ऐसा ही कार्य किया था. उन्होंने भी केवल सत्ता प्राप्त करने के लिए पूरे समुदाय में घृणा और भय ही पैदा किया था.

दोनों ही मामलों में इसकी कीमत लाखों निरीह और भोले लोगों को चुकानी पड़ी. पहले विभाजन की त्रासदी के कारण विधवाएं और अनाथ लोग थे. अब अयोध्या के कारण विधवाएं और अनाथ लोग हैं. इन लोगों के आंसू पोंछने वाला कोई नहीं है. और सबसे बड़ी विडंबना यह है कि यह सब जन आंदोलन के नाम पर किया गया.

अक्तूबर 97

अहं सवाल मंदिर मस्जिद का नहीं है. अहं सवाल देश को कमजोर कर रही ताकतों से मुकाबला करने का है. इन ताकतों को पहचानने का है. इन ताकतों के चरित्र को पहचानने का है. और उनके खिलाफ़ लोगों में एक चेतना फैलाने का है. पर सवाल यह भी है यह काम कौन करेगा.

नवंबर 97

इस शती में देश के मनोविज्ञान में हिंदू-मुस्लिम संबंध छाए रहे. हिंदू धर्म के प्रति गांधी जी के विश्वास ने एक भावनात्मक आधार तैयार किया है. उन्होंने मुसलमानों को राष्ट्र की मुख्यधारा में शामिल करवाने के लिए अपना जीवन दे दिया. आज मुसलमान राष्ट्र की मुख्यधारा के अभिन्न अंग हैं लेकिन उनमें असुरक्षा और भय विद्यमान है. राजनीति ने उनकी असुरक्षा और डर को और अधिक बढ़ाया है. सांप्रदायिक सोच हमारे देश के लिए शर्म की बात है.

दिसंबर 97

मुसलमानों को मस्जिद की मानसिकता से बाहर आना होगा. मस्जिद को बचाने के लिए इस प्रकार के पागलपन के कारण ही पाकिस्तान में कई बार अनेक त्रासदियां हुई हैं. वहां पर शिया और सुन्नी के लड़ाकू लोगों ने अपनी मशीनगनों

का उपयोग [illegible] में ही किया. क्या हम इसी प्रकार की घटनाएं दिल्ली, लखनऊ या मुम्बई में भी चाहते हैं.

अप्रैल 98

पाकिस्तान में पादरी की आत्महत्या से देश का क्रूर चेहरा ही सामने आया है. पादरी की आत्महत्या से वहां रह रहे अल्पसंख्यकों का डर और असुरक्षा का पता चलता है. अभी हाल ही में पाकिस्तान में एक ऐसा नियम बनाया गया जिसके चलते कोई भी आदमी यदि हजरत मोहम्मद का अपमान करते पाया गया तो उसे मौत की सजा दी जा सकती है. यकीनन इससे गैर-मुस्लिमों से अपना व्यक्तिगत बदला लिया जा सकता है. धार्मिक कट्टरता की समाज में पकड़ इतनी ज्यादा मजबूत है कि पादरी को लगा होगा कि लोग उससे अपना व्यक्तिगत बदला लेंगे और उसने आत्महत्या ही कर ली.

मई 98

पैप्सी, कोकाकोला, बस्कीन, राबन आइसक्रीम की फैक्टरियों में लूटपाट की घटनाएं हो रही हैं. भीड़ ने इनकी सम्पत्ति में आग लगा दी और हिंदुवादी नारे हवा में उछाले और दुख की बात तो यह है कि हमारे नेताओं ने इन घटनाओं को आजादी के पहले की घटनाओं की स्मृति कहा है.

जुलाई 98

कुछ लोगों ने यह आरोप लगाया कि एक मुस्लिम लड़के ने जबर्दस्ती हिंदू लड़की से शादी की है और वहां का कलैक्टर राजनेताओं के तलवे चाटने के लिए मुस्लिम लड़के को गिरफ्तार करने के लिए लालायित है.

घृणा के इन सौदागरों के लिए यह समझना कठिन है कि प्रेम धर्म और जाति की किसी भी सीमाओं को नहीं मानता. कॉलेज और दफ्तरों में लड़के-लड़कियों में परस्पर संवाद होता है और वे एक दूसरे के निकट आते हैं. भविष्य में इस प्रकार के विवाह और भी होंगे. राष्ट्रीय एकता का यह एक बेहतर हल हो सकता है.

इन सबका मकसद धार्मिक उन्माद को लगातार बनाए रखना ही है. मुसलमानों के खिलाफ़ फैलाई जा रही घृणा कम करने का इससे बेहतर रास्ता नहीं हो सकता भले ही यह रास्ता फिल्मी लगे.

लेकिन सच्चाई यह है कि हनीफ और वर्षा ने विवाह किया. तीन और हिंदू

लड़कियों ने भी मुस्लिम लड़कों से विवाह किया. बड़ौदा में भी याकूतपुरा इलाके में हिंदू लड़के ने मुस्लिम लड़की से विवाह किया.

अगस्त 98

मैंने अभी नायपाल की किताब *बियांड बिलीफ* पढ़ी. इस किताब में यह विचार उभरकर सामने आया कि इस्लाम अरब धर्म है जिसका पवित्र स्थान अरब में है, जिसकी भाषा अरबी है.

नायपाल का मानना है कि इस्लाम में साम्राज्यवादी मांग निहित है. वह अपने इतिहास, संस्कृति और भाषा को खारिज कर देता है. और उनका मानना है कि इस खारिज के कारण ही इस्लामिक दुनिया में अशांति है.

इस्लाम के बारे में उनकी यह समझ बहुत ही कच्ची है कि इस्लाम अरब में है. यह बहुत ही संकीर्ण सोच है. हजरत मोहम्मद अरब के थे, कुरान अरबी में है, मक्का-मदीना अरब में है, लेकिन इस्लाम का संदेश विश्वव्यापी है और ईश्वर एक है जो कि सृष्टि का निर्माता है और जो हमारी मृत्यु के बाद हमारा मूल्यांकन हमारे द्वारा किए गए कार्यों के आधार पर करेगा. ईश्वर किसी भी जाति, भाषा, रंग, नस्ल, राष्ट्रीयता में कोई भेद नहीं करता. वह परवरदिगार है. सच्चा मुसलमान हिंदू और मुसलमान में, काले और श्वेत में, दलित और ब्राह्मण में कोई भेद नहीं कर सकता.

इस्लाम के बारे में जिन्ना की समझ भी वायवीय थी. उनकी दो राष्ट्र की थ्योरी भी इस्लाम के खिलाफ़ थी. कुरान किसी भी राष्ट्रीय सीमाओं को नहीं मानता. अपने समय के दो बड़े नेताओं मरदूदी मदानी और अबूल कलाम आजाद ने उनकी दो राष्ट्र की थ्योरी का विरोध किया. कोई भी देश केवल इस्लाम के सहारे नहीं रह सकता.

नायपाल का यह मानना भी गलत है कि इस्लामिक समाज की कोई जड़ें नहीं हैं. यह विचार चौदह सौ साल पुराना है. क्या कोई समाज बिना जड़ों के इतने लंबे समय तक रह सकता है. सारी समस्या मौलवियों द्वारा विज्ञान और तार्किकता को आत्मसात न कर पाने की है. वे ज्ञान को गैर- इस्लामिक मानते हैं. क्या विडम्बना है.....

जनवरी 2000

हमें यह याद रखना होगा कि सांप्रदायिकता का कोई धर्म नहीं होता. हिंदू सांप्रदायिकता और मुस्लिम सांप्रदायिकता दोनों ही हमारे लिए घातक हैं. इनसे

मुक्ति यदि पाई जा सकती है तो केवल व्यवस्था के ढांचे को बदल कर ही.

फरवरी 2000

हमारे देश के लोग बहुसांस्कृतिक परिवेश में रहते हैं. हिंदू और मुसलमान एक दूसरे के परिवेश से बंधे हैं. वे गांवों, मोहल्लों और गलियों में साथ साथ रहते हैं. मध्यवर्गीय हिंदुओं को इस तथ्य को ध्यान में रखना चाहिए. मध्यवर्गीय हिंदुओं को सांप्रदायिकता पर बात करते समय सभी पक्षों पर ध्यान देना चाहिए, अल्पसंख्यकों के कठमुल्लेपन पर भी बात करनी चाहिए. उनकी संकीर्ण सोच को भी सामने लाना चाहिए. दीपा मेहता को अपनी फिल्म फायर में सीता और राधा जैसे नाम नहीं रखने चाहिए. इसी तरह सलमान रश्दी को भी वेश्या का नाम हजरत मोहम्मद की पत्नी के नाम पर नहीं रखना चाहिए. हमारे लेखक कलाकार को इसी तरह की प्रवृत्ति से बचना चाहिए.

अप्रैल 2000

अभी हाल ही में दिल्ली में मजहब बचाओ आंदोलन शुरू किया है. इसमें कोई शक नहीं है कि दिल्ली की रैली की अपार भीड़ खतरनाक संकेतों को दर्शा रही है. इससे भारत के मुसलमानों में अलगाव की भावना सामने आ रही है. मुसलमानों ने इस देश के लिए बहुत कुछ किया है. इन मुसलमानों ने इतिहास की धारा को ही बदला है. अब्दुल कलाम ने राष्ट्र की सुरक्षा के लिए अकेले ही काम किया है. अज़ीम प्रेमजी पूरी दुनिया में सबसे अमीर भारतवासी है. अकबराल्लाह की कंपनी बहुत तेजी से व्यवसाय जगत में अपनी जगह बना रही है. हुसैन एक सर्वश्रेष्ठ पेंटर हैं. उस्ताद बिस्मिल्ला खां इस शती के सबसे महत्त्वपूर्ण संगीतकार हैं. इस तरह के नामों की सूची बहुत लंबी है. साहित्य, मनोरंजन, खेल, विज्ञान आदि कई क्षेत्रों में मुसलमानों ने बेहतरीन योगदान दिया है.

जुलाई 2000

हिंदू और मुस्लिम दोनों के लीडर दंगों की जिम्मेदारी एक-दूसरे पर डालकर तनाव को और बढ़ा रहे हैं. उनके बयानों से सेक्यूलरिज्म की ताकतें कमजोर ही होंगी. ये लोग समाज का भला न करके नुकसान ही करेंगे. इन लीडरों के पास न तो कोई मूल्य हैं और न ही कोई आदर्श. ये लोग केवल अपना भला कर रहे हैं.

आगे कुछ पंक्तियों को लिखकर काट दिया गया था. बस इकबाल का एक शेर लिखा था :

वतन की फ़िक्र कर नादां, मुसीबत आने वाली है
तेरी बरबादियों के मशवरे हैं आसमानों में
न समझोगे तो मिट जाओगे ऐ हिंदुस्तां वालो
तुम्हारी दास्तां तक न होगी दास्तानों में.

दिसंबर 2000

मुसलमानों के हित के संरक्षक नेता केवल महात्मा गांधी ही थे. वे मुसलमानों का हित चाहते थे और इसके लिए वे जीवन भर लड़ते रहे. अपनी इस सोच की कीमत भी उन्हें चुकानी पड़ी. उनके बाद मुस्लिम समुदाय को या तो वोट के सहारे छोड़ दिया गया या उन पर जब-तब दंगे थोप दिए गए. उनके बाद के किसी भी नेता ने मुसलमानों के सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए कोई कार्य नहीं किया. उन्हें संकीर्णता में रहना ही सिखाया गया. उनके धार्मिक नेताओं ने भी उनके सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए कोई कार्य नहीं किया.

जनवरी 2001

कई बार मुझे लगता है कि मुसलमानों का भला चाहने वाली पार्टियां और लोग अपना घर ही भर रहे हैं. एक तरफ तो वे सरकार के आगे सजदा कर सारे फायदे उठा रहे हैं और दूसरी तरफ तमाम एन.जी.ओ. की ओर से ढेर सारी दौलत बटोर रहे हैं. ऐसे कई एन.जी.ओ. आजकल देखते देखते खड़े हो गए हैं जो मुसलमानों की भलाई के नाम पर अपना घर भर रहे हैं. मुस्लिम समुदाय को इस तरह के एन.जी.ओ. से सावधान रहने की जरूरत है. ये एन.जी.ओ. एक ओर तो सांप्रदायिक सोच को बढ़ावा दे रहे हैं और दूसरी ओर मुसलमानों की गरीबी, शिक्षा, बदहाली का पूरा फायदा उठा रहे हैं.

फरवरी 2001

घने बादलों के पार आशा की एक हल्की-सी किरण है. गुजरात के भूकंप ने हिंदू मुसलमान ईसाई सब को एक कर दिया है. भूकंप ने न सिर्फ जीवन और मकानों को खत्म कर दिया बल्कि पूर्वाग्रहों और घृणा की दीवारों को भी गिरा दिया

है. अहमदाबाद में एक सौ मुसलमान अपने हिंदू भाइयों का जीवन बचाने के लिए उन्हें खून देने के लिए रात भर कतार में खड़े रहे. यह बहुत खुशी की बात है. इसका जितना प्रचार हो उतना अच्छा.

अक्तूबर 2001

अमीना के जाने के बाद एकदम अकेला हो गया हूं. सारी कोशिशों के बावजूद भी उसे बचा नहीं सका. अब हर लम्हा मुझे इम्तिहान जैसा लगता है. अनजाने ही एक डर-सा मन में बैठा रहता है. मुझे हौंसला देने वाला कोई नहीं रहा. एकदम अकेला हो गया हूं. मेरे कारण उसे अपने जीवन की भारी कीमत चुकानी पड़ी. कई बार यह सोचता हूं कि यदि अमेरिका न छोड़ता तो न वह बीमार होती और न ही उसका अंत इस प्रकार होता.

दिसंबर 2001

वर्ल्ड ट्रेड सेंटर में बम गिराना और अफगानिस्तान में युद्ध से पूरे विश्व के मुसलमानों को आत्मनिरीक्षण करने की जरूरत है. इस्लाम का आशय शांति से है. फिर भी हमारे हिंदू और ईसाई मित्र हमें शक की निगाहों से देखते हैं. पता नहीं क्यों.

पिछले सौ साल इस्लाम के इतिहास के लिए बहुत दुखदायी रहे. विज्ञान और आधुनिकता की दृष्टि से मुसलमानों के लिए अपनी अस्मिता तलाश करने का समय रहा. इसका एक जवाब तो तुर्की के कमाल अता तुर्क ने दिया था जिसके हाथ में सत्ता थी. उसने कहा था अपनी अस्मिता के लिए मुसलमानों को पूरी तरह पश्चिम के रंग में रंग जाना चाहिए. पर मोहम्मद अली जिन्ना दूसरी तरह ही सोचते थे. उनका मानना था कि मुसलमानों की अस्मिता के सवाल को मुसलमानों के लिए एक अलग देश पाकिस्तान बनाकर हल किया जा सकता है. उनका यह विचार बुरी तरह खारिज हो गया.

सारे मुसलमान मोहम्मद द्वारा प्रचारित इस्लाम को ही आदर्श इस्लाम मानते हैं. तालिबानों ने भी इसका सहारा लिया लेकिन उनको इसमें सफलता नहीं मिल सकी. वे भूल गए कि इस्लाम का मतलब सहनशीलता, दया, करुणा, ज्ञान, महिलाओं के प्रति सम्मान में निहित है.

हज़रत मोहम्मद का मानना था कि ज्ञानी आदमी का दर्जा किसी शहीद के दर्जे से ज्यादा बड़ा है और जरूरत पड़ने पर ज्ञान हासिल करने के लिए चीन जाना चाहिए. जहां-जहां इस्लाम गया, वहां-वहां लाइब्रेरी और विश्वविद्यालयों की स्थापना हुई. जब किताबी दुनिया अंधेरे में ही भटकती रही. अबासिद और फातिमिद की सल्तनत में बौद्धिक गतिविधियां लगातार हो रही थीं चाहे ये गतिविधियां गणित, ज्योतिष से संबंधित हों या चाहे संगीत से संबंधित हों. अरब से ही बीजगणित की शुरुआत हुई. इस्लाम का स्वर्णिम काल अविसेना का रहा जो कि एक महान जीनियस था और जो आर्किमिडीज और लियोनार्दो द विंची के समय के बीच के समय में था.

इस्लाम की सबसे बड़ी त्रासदी यह रही कि बारहवीं शताब्दी में रचनात्मक कार्यों को अल्लाह की आराधना से दूर करने वाले कार्यों के रूप में कहा गया. यहां तक कि गणित को एक बुराई के रूप में देखा जाने लगा. खुले विचारों और ज्ञान की भी शैतान के कार्य के रूप में निंदा की गई. मुसलमानों के लिए नरक की आग से बचने और जन्नत पाने का ही लक्ष्य रखा गया. यहीं से मदरसों की शुरुआत हुई.

डायरी के अंतिम पन्ने में अपनी पत्नी का नाम लिखकर लाल स्याही से बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा हुआ था : इस साल एकदम अकेला हो गया हूं. इस साल तुम्हें भी खो दिया और तुम्हारे घर को भी नहीं बचा सका.

बाकी के पन्ने पढ़ने में नहीं आ रहे थे. सब काले पड़ चुके थे.

12

रात का तनाव सुबह तक विपुल पर हावी रहा. उमर अंसारी की सुनाई गई दास्तान पूरी रात ज़ेहन में गूंजती रही. पोथीवाला की डायरी की बातें सुबह तक उसके मन में ताजा थीं. रह-रह कर उसका मन उन्हीं बातों में जाकर उलझ जाता था. एक गहरी सोच और हालात को बदलने का एक माद्दा उस डायरी के पन्नों में बिखरा हुआ था. एक अकेलापन पन्ने दर पन्ने झांक रहा था.

एकाएक दरवाजे पर कॉलबैल बजी.

"कौन हो सकता है इस वक्त." निलेश ने कहा और दरवाजा खोलने के लिए उठा.

बाहर दरवाजे पर साजिद था. पोथीवाला का बेटा.

आज विपुल ने उसे गौर से देखा. बीस-बाइस साल का लड़का था. चेहरे पर ओज. घुंघराले बाल. मझला कद. धारदार आंखें.

कमरे में आते ही बोला, "पापू ने आप लोगों को बुलाया है."

"कुछ खास है क्या?"

निलेश बेचैन-सा हो गया था.

"नहीं, कुछ खास नहीं. शायद उन्हें कहीं जाना है. आप को साथ ले जाना चाहते हैं." उसने विपुल की तरफ इशारा करते हुए कहा.

"अच्छा बैठो. मैं नहा लूं. फिर चलते हैं. तब तक तुम अख़बार पढ़ो." विपुल ने अख़बार उसे देते हुए कहा.

"अख़बार में क्या रखा है अंकल." उसने हिकारत से कहा.

विपुल हैरान रह गया उससे यह सुनकर.

"क्यों... शहर में अमन-चैन की खबरें हैं इसमें." विपुल ने उसे दिलासा देते हुए कहा.

"कुछ अमन-चैन नहीं है. भीतर ही भीतर एक आग सुलग रही है. यह

अख़बार वाले कहां बताएंगे इस आग के बारे में.

उसके स्वर में बेहद गुस्सा था.

"कौन सी आग..." विपुल ने पूछा.

"चुन चुन कर मुसलमानों को मारा गया. उनकी दुकानें जलाईं, उनके घर जलाए, उनको लूटा गया. क्या आप सोचते हैं कि मुसलमान इस जुल्म को चुपचाप बर्दाश्त कर लेंगे जबकि बर्दाशत करना उनकी फितरत में नहीं है. उनके पास भी अंडरवर्ल्ड है. उनके पास भी माफिया है." उसने बताया.

विपुल हैरान रह गया उसकी बात सुनकर.

"क्या करते हो तुम?" विपुल ने जानना चाहा.

"एम.एस.सी कर चुका हूं. कहीं नौकरी देख रहा हूं." उसने लापरवाही से बताया.

"किस विषय के साथ एम.एस.सी किया है?" विपुल ने पूछा.

"मैथ्स के साथ." उसने बताया.

"आगे पढ़ने का इरादा नहीं है?" निलेश ने उससे पूछा.

"नहीं, कोई इरादा नहीं है." उसने लापरवाही से जवाब दिया.

"पी.एच.डी. करने की इच्छा नहीं है?"

"नहीं. पी.एच.डी. करने से क्या होगा. क्या पी.एच.डी. करने से मुझे नौकरी मिल जाएगी?" उसने एक सवाल उन दोनों के सामने रख दिया.

"हां... हां.... मिलेगी क्यों नहीं. किसी कॉलेज में लेक्चररशिप तो मिल ही जाएगी." निलेश ने उसे सांत्वना दी.

"कहां मिलेगी. इस देश में मुसलमानों को नौकरी कहां मिलती है जो मुझे मिल जाएगी." उसने उदासीन होकर कहा.

"नहीं, ऐसा तो नहीं है. तुम्हारे पापा भी तो मुसलमान हैं उन्हें भी तो नौकरी मिल गई थी और भी न जाने कितने मुसलमान हैं जो तमाम विश्वविद्यालयों में, दफ्तरों में काम कर रहे हैं. तुम्हारे शहर का कलैक्टर स्वयं मुसलमान है वह आई.ए.एस. है." विपुल ने उसकी बात काटते हुए कहा.

"इन लोगों को आज से तीस साल पहले नौकरियां मिली थीं. तब ऐसा नहीं था. पर अब नहीं मिलती." उसने विपुल की बात का प्रतिवाद किया.

"पर ऐसा नहीं है जैसा तुम सोचते हो." विपुल ने कहा.

"ऐसा ही है अंकल." उसने जोर देकर कहा, "आप बताइए सिविल सर्विस में हर साल कितने मुसलमानों को नौकरी दी जाती है. इस देश में कितने प्रतिशत डॉक्टर मुसलमान हैं. कितने मुसलमान हाई कोर्ट, सुप्रीम कोर्ट में वकील हैं. कितने मुसलमान अध्यापक, प्रोफेसर हैं. जो आंकड़ा आप निकालेंगे वह दहाई का

आंकड़ा भी पार नहीं करेगा."

"तो फिर तुम क्या करना चाहते हो अपने जीवन में?" विपुल ने उससे पूछा.

"मैं अमेरिका जाना चाहता हूं." उसने कहा.

"क्यों. अमेरिका में क्या करोगे जाकर." निलेश ने पूछा.

"वहां जाकर कुछ भी कर लूंगा. मेरा बड़ा भाई वहां रहता है. वहां पढ़े-लिखे लोगों की कद्र है." उसने अपना सपना बताया.

"क्या करता है वहां तुम्हारा भाई?"

"नासा में नौकरी करता है."

"यहां कभी कारोबार करने का ख्याल नहीं आया तुम्हारे मन में?" विपुल ने जानना चाहा.

"नहीं कारोबार करने का कोई ख्याल कभी मन में नहीं आया और फिर कारोबार करने से क्या होगा. देखा नहीं आपने इस देश में बिजनिस करने वाले उमर अंसारी जैसे मुसलमानों के साथ कैसा सुलूक किया गया. पीढ़ियों से जमे-जमाए उनके व्यवसाय को सैकेंडों में उजाड़ दिया गया. यहां धंधा करना, बसना और उजड़ना ही मुसलमानों की नियति है. यही बार-बार इस देश में हम लोगों के साथ होता आ रहा है. तो मैं इस देश में क्यों रहूं."

उसके स्वर में बेहद गुस्सा था

उसने एक बड़ा-सा सवाल उन लोगों के सामने रख दिया था. वे सब सन्न रह गए थे उसके इस सवाल से. निलेश ने विपुल तरफ देखा. गोया कह रहा हो पोथीवाला के बेटे के मन में इस देश के प्रति इतनी घृणा. उस पोथीवाला के बेटे में जिन्होंने अपने मूल्यों और विश्वासों के लिए आज से तीस साल पहले अमेरिका छोड़ दिया था और फिर कभी अमेरिका जाने का लालच ही मन में न आए, इसके लिए उन्होंने अपना ग्रीन कार्ड तक फाड़ डाला था. आज उन्हीं का बेटा इस देश के हालातों से त्रस्त होकर यह देश ही छोड़कर अमेरिका चला जाना चाहता है. एक बेटा पहले ही चला गया और दूसरा भी जाना चाहता है.

"क्योंकि यह देश तुम्हारा भी है इसलिए यहां रहो." विपुल ने जोर देकर अपनी बात कही.

"हमारा नहीं अंकल, केवल हिंदुओं का है यह देश. हमारा होता तो हम लोग इस तरह भटकते नहीं. इस तरह अपमानित और ज़लील नहीं होते. सैंतालीस के बाद से हम लोग हमेशा मार ही खाते आ रहे हैं. टैल मी टू गुड रीज़न व्हाई आई शुड लिव इन दिस कंट्री."

उसने एक और सवाल उन लोगों के सामने रख दिया.

उनमें में से कोई नहीं बोला. उन लोगों को चुप देखकर उसने कहना जारी

रखा,

"करप्शन यहां पर है. बिना पैसे दिए स्कूटर का लाइसेंस नहीं बनवा सकते आप. भ्रष्टाचार के नए नए मामले रोज़ सामने आ रहे हैं. पीने का साफ पानी नहीं है यहां. सारी नदियों का पानी सूख चुका है. सड़कों पर ट्रेफिक बेहाल है. कोई नियम नहीं, कोई कायदा नहीं. हम लोग जहां चाहें वहां रह नहीं सकते. हमारे लिए केवल मुस्लिम कॉलोनियां ही बची हैं. गंदी तंग गलियां. भीड़-भाड़ वाले इलाके ही हमारे लिए हैं. पुलिस यहां की राक्षस है. दफ्तरों में काम करने की कोई कल्चर नहीं. जरा-जरा सी बात पर आंदोलन, बंद, ठप्प. सारे देश के काम को एक दिन के लिए बंद करवा कर किसका नुकसान कर रहे हैं. रेलगाड़ियों में बेइंतहा भीड़. क्या है सारे जहां से अच्छे इस देश में. हमारे घर को अब तक तीन बार लूटा जा चुका है. हम लोग कब तक घर बनाते रहेंगे और इसी तरह लुटते रहेंगे. न पापू जैसा हौसला मुझमें है और न ही उन जैसे वैल्यूस." उसने बहुत गुस्से से कहा.

उसके अंदर एक ज्वालामुखी धधक रहा था.

उसकी ये सारी बातें सच्ची थीं. खरे सोने जैसी सच्ची. उसकी इन बातों का कोई जवाब उन लोगों के पास नहीं था.

कुछ ही देर में विपुल तैयार हो गया था.

निलेश को अपने कॉलेज के काम से कहीं जाना था. उसने गाड़ी की चाबी विपुल को देते हुए कहा था, "तुम सर के पास हो आओ. मैं शाम को तुम्हें मिलता हूं."

"अविनाश नहीं आएगा साथ?" विपुल ने पूछा.

"शायद नहीं. उसके कॉलेज में कैंप लगा हुआ है. आज वह वहां बिजी है. तुम अकेले हो आओ पोथीवाला के साथ." निलेश ने विपुल को कहा.

गाड़ी स्टार्ट करते हुए विपुल ने उससे कहा था कि "मुझे रास्ता बताते रहना. हालांकि इस शहर में रहा हूं लेकिन अब यह शहर बहुत बदल चुका है."

"आप मेरे साथ स्कूटर पर आ जाइए." साजिद ने कहा.

"नहीं स्कूटर यहीं रहने दो. आते समय ले लेना. सम्भवतः सर को कहीं जाना हो इसलिए गाड़ी लिए चलते हैं."

उसने विपुल की बात मान ली थी और उसके साथ सामने वाली सीट पर आकर बैठ गया था.

गाड़ी चलाते हुए विपुल ने उससे पूछा था, "क्या लगता है तुम्हें इस बार मुसलमानों की ओर से कार्यवाही होगी."

"फिलहाल तो वे टूट चुके हैं लेकिन भविष्य में कुछ भी हो सकता है."

"क्या हो सकता है." विपुल ने जानना चाहा.

विपुल की बात का उसने कोई जवाब नहीं दिया. चुप रहा वह.

उसे चुप रहते देख विपुल ने कहा, "कल के अख़बार में खबर थी कि पुलिस ने मुस्लिम बहुल इलाकों में छापे मारे. वहां से सैकड़ों की संख्या में बंदूकें, बम आदि मिले. कई मुसलमानों को भी पकड़ा गया. कइयों के पाकिस्तान से संबंध बताए गए."

"यह सब झूठ है. पुलिस ने अपनी ही कहानी गढ़ ली है. छापे ही मारने थे तो पहले मारते. हम लोग तबाह तो नहीं होते. मेरे कई दोस्तों को पुलिस बिना किसी अपराध के पकड़ कर ले गई. सिर्फ इसलिए कि पाकिस्तान में हमारे दोस्त और हमारे रिश्तेदार रहते हैं." उसने गुस्से में कहा.

विपुल ने उसकी बात का कोई जवाब नहीं दिया.

पोथीवाला का घर ज़्यादा दूर नहीं था. यूनिवर्सिटी से उन्होंने घर एलाट करने का अनुरोध किया था जिसे यूनिवर्सिटी ने मानकर उन्हें यह घर एलाट कर दिया था. वे दोनों पांच-सात मिनट में ही उनके घर पहुंच गए. वे अपने रिश्तेदार का घर छोड़कर यूनिवर्सिटी के अपने घर में आ गए थे.

घर तक पहुंचने से पहले आधा किलोमीटर तक सुनसान रास्ता था. आसपास प्रोफेसरर्स के घर थे. लेकिन कॉलोनी पूरी तरह सुनसान थी. यूनिवर्सिटी के कैम्पस में होने के नाते बाहर के लोग़ों की आवाजाही नहीं के बराबर थी. इसलिए कॉलोनी के अंदर की सड़कें वीरान और सुनसान थीं. घर के चारों तरफ कीकर और नीम के बड़े-बड़े पेड़ थे. सड़क के दोनों ओर बड़ी-बड़ी घास थी. उनका घर कॉलोनी के एकदम कोने में था.

पोथीवाला अपने फ्लैट की बालकनी में बेचैनी से टहलते हुए उन लोगों का इंतजार कर रहे थे. जैसे ही इन लोगों की गाड़ी उन्हें दिखाई दी, उन्होंने ऊपर से ही विपुल को रुकने का इशारा किया और दरवाज़ा बंद करके तेज़ी से नीचे आ गए.

आते ही गाड़ी की पिछली सीट पर बैठते हुए उन्होंने कहा, "पुलिस स्टेशन से दो बार एस.पी. का फोन आ चुका है. वे मुझे वहां बुला रहे हैं. मेरा बयान रिकार्ड करना चाहते हैं. वहां चलना है."

"आप उनसे कह देते कि यदि उन्होंने बयान ही रिकार्ड करना है तो वे खुद आ जाएं. हमारे पास कोई गाड़ी नहीं है."

साजिद ने अपना प्रतिरोध दर्ज करते हुए कहा.

"कहा था बेटा. पर वे कहने लगे कि मैं ही वहां आ जाऊं तो ठीक रहेगा."

"तो आप हो आइए मैं नहीं जाता." कहकर साजिद ने गाड़ी से उतरने के लिए दरवाज़ा खोला.

"हां, तुम घर पर ही रहो. अफरोज अभी आती होगी. वो पास ही कहीं गई है. अपनी सहेली के पास."

"ठीक है." कहकर साजिद गाड़ी से उतर गया.

"जब से यह हादसा हुआ तब से अफरोज अकेले घर में रहने से डरने लगी है. पहले की बात और थी." उन्होंने विपुल को चलने का इशारा करते हुए कहा.

"किधर जाना है." विपुल ने पूछा.

"सामने जाकर बाएं ले लो. आगे जाकर मेन रोड आ जाएगी."

विपुल ने गाड़ी स्टार्ट की और कहा, "आप मुझे रास्ता बताते रहिए."

थोड़ी-सी ड्राइविंग के बाद उनकी गाड़ी मेन रोड पर आ गई थी. पोथीवाला विपुल के साथ आगे की सीट पर आकर बैठ गए थे.

फिर वही रास्ता. जली हुई दुकानें. जली हुई लारियां. जले हुए होटल. सुनसान और वीरान सड़कें. उन सड़कों पर इक्का-दुक्का वाहन. हालांकि शहर में कर्फ्यू नहीं था. कर्फ्यू केवल रात का ही था. लेकिन दिन भी कर्फ्यू जैसा ही था.

"इस बार तबाही बहुत ज्यादा हुई. पहले कभी ऐसा नहीं हुआ. इतनी तबाही पहले कभी नहीं हुई थी." विपुल ने कहा.

उन्होंने एक जली हुई दुकान को देखते हुए कहा, "हां, इतनी तबाही पहले कभी नहीं हुई थी. पहले केवल गरीब आदमी ही मरते थे पर इस बार क्या गरीब, क्या अमीर. सभी को मारा गया. सभी को जलाया गया. किसी को नहीं बख्शा गया."

"यह बहुत घातक है."

"क्रूरता की ऐसी मिसाल आज़ाद भारत में कहीं नहीं मिलेगी. सारा कुछ प्लान तरीके से हुआ. मुसलमानों की हत्या, लूट, पुलिस की मिलीभगत. सब कुछ योजना बनाकर किया गया. आज तक ऐसा नहीं हुआ."

"बस यहीं गाड़ी खड़ी कर दो. दाएं तरफ ही पुलिस स्टेशन है." उन्होंने दाएं तरफ इशारा करते हुए कहा.

विपुल ने दाएं तरफ गाड़ी खड़ी कर दी.

पुलिस स्टेशन पर पुलिस इंस्पैक्टर बहुत शालीनता से उनके साथ पेश आया. शायद उसे उनके कद का एहसास हो गया था. शहर की एक प्रमुख शख्सियत थे. उनके आने से पहले ही पुलिस कमिश्नर का फोन इस थाने में पहुंच चुका था. पुलिस कमिश्नर ने उनको भी फोन करके पुलिस स्टेशन जाकर कुछ कागजातों पर हस्ताक्षर करने के लिए कहा था. पुलिस इंस्पैक्टर ने एक स्टेटमैंट बना रखा था. उस पर उनके हस्ताक्षर करवाए जिसमें उनके घर के सामान की सूची थी जो जल गया था. एफ.आई.आर. थी. उसने उन्हें उस एफ.आई.आर. पर हस्ताक्षर करने के लिए कहा.

पोथीवाला ने कांपते हाथों से एफ.आई.आर. पर हस्ताक्षर किए गोया एफ.आई.आर. पर हस्ताक्षर न कर रहे हों, अपनी सजा के आदेश पर हस्ताक्षर कर रहे हों.

पुलिस इंस्पैक्टर ने शालीनता से एफ.आई.आर. की एक कॉपी उन्हें देते हुए कहा, "इससे आपको अपना क्लेम दाखिल करने में आसानी होगी."

उन्होंने कांपते हाथों से एफ.आई.आर. की कॉपी ले ली और उसे फोल्ड करके अपने कुर्ते की जेब में रख लिया.

लौटकर जब विपुल ने गाड़ी उनके फ्लैट के नीचे रोकी तो उन्होंने कहा, "कुछ काम न हो तो आओ थोड़ी देर बैठो."

विपुल को क्या काम था. वो तो आया ही उनसे मिलने था. कहा, "ठीक है आप चलिए. मैं आता हूं गाड़ी पार्क करके."

13

कमरा थोड़ा ठंडा था. मार्च का महीना था. कमरे में हल्की सी ठंडक थी. इस ठंडक से बचने के लिए पोथीवाला बाहर बालकनी में रखी आरामकुर्सी पर बैठ गए. वे बहुत थके हुए लग रहे थे. घर में कोई नहीं था. साजिद कहीं बाहर गया हुआ था. अफरोज अभी तक नहीं आई थी या आकर कहीं चली गई थी.

विपुल भी उन्हीं के सामने रखी एक कुर्सी पर बैठ गया. उन्हें इस तरह हताश और परेशान देखकर एक अजीब-सी अनुभूति उसके मन में हुई.

"यकीन नहीं होता कि आपके साथ भी ऐसा हो सकता है. कौन लोग थे सर." उसने सहमते-सहमते उनसे पूछा.

पोथीवाला ने एक लंबी सांस ली. गोया अपने भीतर नयी ऊर्जा संग्रह कर रहे हों. फिर उसकी तरफ देखकर कहा, "भरवार लोग थे. गाय भैंसों को चराने वाले."

"कौन भरवार? यहीं के थे कि बाहर से आए थे?" विपुल ने उत्सुकता से जानना चाहा.

"यहीं के थे. बाहर से नहीं आए थे."

"यहां के....." विपुल के स्वर में हैरानी थी.

हैरानी इसलिए कि उसे पता था कि पोथीवाला ने इन भरवारों के लिए बहुत कुछ किया था और यहां के भरवार उनका सम्मान करते थे.

"हां.... यहीं के थे और सबसे बड़ी दुखदायी बात तो है कि यहां का कारपोरेटर उनकी अगुआई कर रहा था." उन्होंने दुख भरे स्वर में बताया.

"आपको पहले अंदाजा नहीं था कि ऐसा भी हो सकता था." विपुल ने पूछा.

"नहीं, पहले अंदाजा नहीं था कि ऐसा भी हो सकता है. जब से हुल्लड़ की खबरें आनी शुरू हुई थीं तब से मैंने अपनी सुरक्षा के लिए पुलिस को इन्फार्म किया था. पुलिस कमिश्नर को दो बार फोन करके कहा था. उसने आश्वस्त भी किया था कि मेरे साथ ऐसा कुछ नहीं होगा."

"पर फिर भी हुआ?"

"कमिश्नर ने पुलिस के दो आदमी भेजे थे मेरे घर पहरा देने के लिए. पहरा देने वाले पुलिस वालों के हाथों में बंदूकें थीं. उन्हें देखकर मुझे भी लगता था. कि कुछ नहीं होगा लेकिन...." कहते कहते वे रुक गए.

विपुल ने गौर से देखा उनकी आंखों में पानी की एक हल्की सी लकीर दिखाई दे रही थी. चेहरे पर विषाद की गहरी रेखाएं थीं.

"लेकिन...." कहते कहते वे चुप हो गए.

विपुल भी चुप हो गया. एक सन्नाटा सा कमरे में छा गया.

"पुलिस ने ही उनको हमारे घर के अंदर आने दिया. पुलिस ने ही उनको घर के रास्ते दिखाए." उन्होंने लगभग रुआंसे होकर बताया.

"बहुत बुरा हुआ यह. ऐसा नहीं होना चाहिए था." विपुल ने कहा.

"और दुख तो इस बात का है कि घर में आग लगाने वाले और लूटने वाले भरवार लोग थे. दलित थे. वही दलित जिनके लिए मैंने बहुत काम किया, जिनकी लड़ाई मैंने लड़ी. वही दलित आज मेरे और सारे मुसलमानों के खिलाफ़ हो गए."

उनके स्वर में एक गहरी निराशा थी. उन्हें लग रहा था एक लंबे अर्से तक जो आशाओं का महल वे खड़ा करते रहे, वह एकदम धराशायी हो गया. जो सपने उन्होंने देखे थे, वे एकदम धूल धूसरित हो गए हैं. जो संकल्प उन्होंने लिए थे, वे तार-तार हो गए हैं. वे बेहद परेशान थे. उस समय उनका दिल चुपचाप रो रहा था.

"कैसे हुआ यह सब. दलित तो आपके मिशन के साथ थे. राजीव परमार के साथ तो आपका उठना-बैठना था. वह तो रोक सकता था उनको." विपुल ने दबे स्वर में एक सवाल उनके सामने रख दिया.

"उसने भी कुछ नहीं किया. जब हुल्लड़ बहुत बढ़ गया तो मैंने उसे भी फोन करके कुछ करने के लिए कहा था. लेकिन उसने कुछ नहीं किया. शायद उसे कुछ न करने के लिए कहा गया हो." उनके स्वर में विक्षोभ था. गहरा विक्षोभ.

"एक सोची-समझी साजिश के तहत आज दलितों को मुसलमानों के खिलाफ़ खड़ा कर दिया गया. और आज यही दलित कह रहे हैं कि हिंदुस्तान के प्रति मुसलमानों का लगाव बहुत कम है." विपुल ने कहा.

"गलत कह रहे हैं यह दलित. आज भी हिंदुस्तान के प्रति मुसलमानों का लगाव बहुत ज्यादा है." पोथीवाला ने आवेश में कहा.

विपुल का कथन सुनकर वे आवेश में आ गए थे. उनका तो मानना था कि मुसलमान भी इस देश को उतना ही चाहते हैं जितना दलित, हिंदू या अन्य कोई.

"पर वे लोग तो कहते हैं कि मुसलमान पाकिस्तान जाना चाहते हैं." उसने

पूछा.

"गलत कहते हैं. मुसलमानों का लगाव पाकिस्तान के प्रति कैसे हो सकता है? वहां तबाही है, बर्बादी है. शिक्षा नहीं है वहां. यहां का मुसलमान तो अपनी बदहाली से ही बाहर नहीं आ रहा है. पाकिस्तान में तो इससे भी बुरा हाल है. कैसे यहां का मुसलमान पाकिस्तान के प्रति लगाव रख सकता है?"

उनके स्वर में गुस्सा भी था. दुख भी था.

"पर अख़बार तो कहते हैं कि यहां का मुसलमान पाकिस्तानपरस्त है." विपुल ने अख़बारों की बात उनके सामने रखी.

"गलत कहते हैं अख़बार. यहां के अख़बार भी मुसलमानो के विरोधी हैं. यहां का मुसलमान पाकिस्तान क्यों जाएगा. पाकिस्तान में एजुकेशन नहीं है. नौकरियां नहीं हैं. कोई बिजनिस नहीं है. वहां तो केवल मशीनगन है, मस्जिदें हैं, ड्रग्स हैं. यहां के मुसलमानों का तादात्म्य पाकिस्तान के मुसलमानों के साथ नहीं हो सकता. यहां खुलापन है. मुसलमानों के आगे आने के पूरे मौके हैं. पाकिस्तान में ऐसा कुछ नहीं है. यहां का मुसलमान पाकिस्तानपरस्त क्यों होगा?" उन्होंने गंभीर होकर कहा.

"यह कम्यूनल फीलिंग्स बहुत दुखदायी है." विपुल ने कहा.

"हां, दुखदायी तो बहुत है. उन्नीस सौ तेहत्तर में जब हम लोगों ने काम शुरू किया था तो एक उम्मीद थी कि हिंदू और मुसलमान न सिर्फ वर्कप्लेस में साथ-साथ रहेंगे बल्कि रिहायशी इलाकों में भी साथ-साथ रहें. पर हमारी इन सारी उम्मीदों पर पानी फिर गया. हम लोग फेल हो गए पोलोराइजेशन को ज़ज करने में. हमको मालूम नहीं था कि कम्यूनिलिज़्म के सवाल का उपयोग राजनीति इस तरह करेगी. हमारी तीस सालों की मेहनत पर पानी फिर गया." कहते-कहते उनकी आंखों में आंसू आ गए.

जब वे शांत हो गए तो विपुल ने पूछा, "क्या किया जा सकता है अब?"

"बहुत कुछ किया जा सकता है अब भी. लोगों के दिमाग में जो धुंध छा गई है, सबसे पहले उसे साफ करना होगा. लोगों को समझाना होगा."

उनकी आंखों में एक चमक-सी आ गई थी.

"कैसे होगी यह धुंध साफ?" विपुल ने जानना चाहा.

"इसके लिए एक लंबा कार्यक्रम बनाना होगा. कम से कम पचास साल का कार्यक्रम. जो बारूद की फैक्टरियां इस देश में पिछले सालों से बनाई गई हैं उन्हें डिफ्यूज करने के लिए हमें हजारों की संख्या में ऐसे लोग तैयार करने होंगे जो इनका मुकाबला कर सकें. मुसलमानों में फिर से विश्वास पैदा करना होगा. हमें अपनी प्राथमिकताएं फिर से तय करनी होंगी और उन प्राथमिकताओं में सांप्रदायिकता

को अव्वल नंबर पर रखना होगा. साम्प्रदायिकता के खिलाफ़ चेतना को हमें रोज़मर्रा की ज़िंदगी का एक हिस्सा बनना होगा.''

कहते-कहते उनमें एक उत्साह-सा पैदा हो गया.

''आपने एक बार चुनाव भी लड़ा था.'' विपुल ने पूछा.

''हां, एक बार. उन्नीस सौ नवासी में चुनाव में खड़ा हुआ था. यह वो समय था जब सलमान रश्दी की किताब को बैन किया गया था. मुसलमान इस किताब पर रिएक्ट कर रहे थे.''

''मुसलमानों का क्या स्टैंड था इस किताब पर.''

''वे सलमान रश्दी को मुसलमानों के दुश्मन के रूप में देख रहे थे और उसका विरोध कर रहे थे. उसकी किताब जला रहे थे. मैंने उस समय भी उनसे कहा था ऐसा करना गलत है. इससे मुस्लिम समाज का नुकसान ही होगा. उस समय मैंने लोगों का विरोध किया. तब यहां के मुसलमानों को लगा कि मैं उनका दुश्मन और सलमान रश्दी का दोस्त हूं. यहां के मुसलमानों ने मुझे काफिर घोषित कर दिया.''

''यह सब चुनावों के दौरान ही हुआ?''

''नहीं, चुनावों के दौरान नहीं हुआ. चुनावों के कुछ पहले की घटना है. बाद में, इस घटना के तकरीबन एक साल बाद उन्नीस सौ नब्बे में जब चुनाव हुए तो मैं स्वतंत्र उम्मीदवार के नाते चुनाव में खड़ा हुआ. उस समय मेरे पास साधन नहीं थे चुनाव लड़ने के लिए. मैंने अपने-अपने दोस्तों के खर्चों से जगह-जगह सभाएं कीं. मुस्लिम समाज को शिक्षा के बारे में बताया. मुस्लिम लड़कियों की पढ़ाई की जरूरतों पर जोर दिया. लोग इस शहर में मुझे पहले से ही जानते थे. सभाओं और रैलियों से मेरा प्रभाव बढ़ने लगा. उस समय गायकवाड मेरे सामने थे चुनाव में. उन्हें लगने लगा कि मेरी लोकप्रियता से उनका वोट चला जाएगा तो वे एक साल पहले सलमान रश्दी की किताब वाली घटना को चर्चा में ले आए. उन्होंने मुसलमानों को मेरे खिलाफ़ लामबंद किया और इस शहर के कुछ मुसलमानों ने मिलकर मेरे खिलाफ़ फतवा जारी कर दिया. मुसलमानों ने अख़बारों में मेरे खिलाफ़ बयान दिए और कहा ये तो काफिर है, इन्हें वोट नहीं देना है. उस समय चुनावी-सभाओं में मेरे लिए जाना जरूरी था और मुसलमान मेरे खिलाफ़ हो गए थे.''

उन्होंने विस्तार से अपना अतीत बताया.

''चुनाव का परिणाम क्या रहा?'' विपुल ने जानना चाहा.

''मुझे तो हारना ही था और मैं चुनाव हार गया. लेकिन इससे मुसलमानों के मन में एक चेतना जरूर फैली अपने आप को एजुकेट करने की.'' उन्होंने कहा.

कहकर वे चुप हो गए.

"क्या आज भी लोग आपके बारे में ऐसा ही सोचते हैं? क्या यूनिवर्सिटी में पढ़े-लिखे तबके की सोच में आपके बारे में कोई फर्क आया है?"

"नहीं, पढ़े-लिखे तबके में कोई खास फर्क नहीं आया. आज भी उनकी एप्रोच में कम्यूनिलिज़्म बहुत है. वे मुद्दों की कोई बात नहीं करते. वे किसी भी बात में मेरा समर्थन नहीं करते. मेरे साथ जो कुछ हुआ, उसको लेकर किसी में कोई परेशानी नहीं है. यूनिवर्सिटी एसोसिएशन ने इस बारे में कोई रेजूलेशन पास नहीं किया. सामान्यतः यूनिवर्सिटी एसोसिएशन की ऐसी परंपरा है लेकिन मेरे मामले में इस पर मौन साध लिया. कोई मुझसे इस बारे में बात नहीं करना चाहता है. सब मुझे देखते ही रास्ता बदलने की कोशिश करते हैं. टाटा इंस्टीट्यूट, हावर्ड यूनिवर्सिटी ने मेरे साथ हुई घटना की निंदा करते हुए एक रेजूलेशन पास किया लेकिन मेरी अपनी यूनिवर्सिटी ने ऐसा कोई रेजूलेशन अभी तक पास नहीं किया और न ही उनका ऐसा करने का इरादा है."

उन्होंने बहुत ही दुख और क्षोभ से कहा.

"इन घटनाओं के बाद आपको डर नहीं लगता." अचानक विपुल ने पूछा.

"कैसा डर...." उन्होंने हैरानी से विपुल की ओर देखते हुए कहा.

"यही... मौत का."

"नहीं, इन घटनाओं के बाद अब मुझे मौत का डर नहीं रहा. जिस दिन आएगी हंसते-हंसते झेल लेंगे. इन घटनाओं के बाद मेरी सोच का दायरा बहुत ज्यादा बढ़ गया. जब मैं अपने भीतर झांक कर देखता हूं तो मुझे लगता है कि मुझे अभी बहुत कुछ करना है. अब अच्छी चीजों के प्रति मेरी तमन्ना ही खत्म हो गई. रुपया पैसा, सोना चांदी मुझे आकर्षित नहीं करता. आई हैव क्रॉसड द स्टेज ऑफ गुड थिंग. बट आई विल प्रोटैक्ट द सैक्यूलर स्टेट ऑफ इंडिया. अपने जीवन के बचे हुए साल मैं सांप्रदायिकता को दूर करने में लगा दूंगा."

उन्होंने धीरे-धीरे कहा. उनका एक-एक शब्द दुख से भरा हुआ था.

"साजिद और अफरोज पर आप कोई खतरा नहीं महसूस करते. ये दोनों भी लोगों की नजरों में आ चुके हैं." विपुल ने जानना चाहा.

"हां, इन दोनों पर खतरा है. इस हुल्लड़ के बाद लोगों ने इन्हें मेरी बेटी और मेरे बेटे के रूप में पहचान लिया है. बेटी के ऊपर खतरा ज्यादा है. वह एक हिंदू लड़के से विवाह कर रही है. मुझे खुशी है कि इस माहौल में भी उसके ससुराल वालों ने उसका साथ दिया. उनके ऊपर भी बहुत दबाव था इस रिश्ते को खत्म करने के लिए. लेकिन वे अपनी बात पर मजबूती से अड़े रहे. अगर वे सांप्रदायिक ताकतों के सामने झुक जाते तो मुझे बहुत अफसोस होता लेकिन ऐसा कुछ नहीं

हुआ और वे अपनी बात पर अड़े रहे. इस देश में ऐसे लोग भी हैं.''

उनके स्वर में थोड़ा उत्साह आ गया था.

''शादी हो जाने के बाद क्या आपकी बेटी और दामाद यहीं रहेंगे.''

''नहीं.... वे दोनों यहां नहीं रहेंगे. अमेरिका चले जाएंगे. साजिद भी वीसा के लिए कोशिश कर रहा है. अपने बड़े भाई के पास जाने के लिए. यहां उनके लिए खतरा है.''

''उनके जाने के बाद आप एकदम अकेले हो जाएंगे''

''अकेला तो मैं अमीना की मौत के बाद से हो गया था.'' उन्होंने आंखें बंद करके अपनी गर्दन को कुर्सी की पीठ पर टिकाते हुए कहा.

विपुल को याद आया कि इनकी पत्नी अमीना की मौत साल भर पहले ही हो गई थी. डायरी में इन्होंने बहुत शिद्दत से अपनी पत्नी की स्मृतियों के बारे लिखा है.

''मुझे बहुत अफसोस है. मेरे सामने जीवन में अनेक कठिनाइयां आईं लेकिन उसने मेरा साथ नहीं छोड़ा. मुझे अफसोस है कि मैं उसे बचा नहीं सका.'' कहते-कहते वे एकदम उदास से हो गए.

''क्या हुआ था उन्हें.'' विपुल ने पूछा.

''कैंसर था.''

''ओह...''

''हां कैंसर... और यह बहुत बाद में पता चल सका. तब बहुत देर हो चुकी थी. धीरे-धीरे पूरे शरीर में रोग फैलता चला गया और वह हमें छोड़कर चली गई.'' कहते-कहते उनकी आंखों में आंसू आ गए थे.

कमरे में थोड़ी देर तक मौन छाया रहा.

''आप अमेरिका क्यों नहीं चले जाते मीर के पास?'' विपुल ने कहा.

''क्यों जाऊं,'' उन्होंने एक लंबी सांस लेकर कहा. ''यह मेरा शहर है. मेरी जड़ें हैं यहां. अपने सुख के दिनों में मैं वहां नहीं रह सका तो अब कैसे रह सकता हूं. मेरा अपना घर है यहां पर. मेरे बचपन के दोस्त हैं यहां पर. यहां लोग मुझे मेरे नाम से नहीं, मेरी काबलियत से जानते हैं. यहां की हवा में, यहां की धूप में, यहां के मौसम में एक अपनापन है, इसे छोड़कर मैं कैसे जा सकता हूं.'' उन्होंने बताया.

थोड़ी देर तक कमरे में सन्नाटा छाया रहा. फिर उन्होंने कहना शुरू किया, ''और फिर वापस क्यों न आता. यहां मेरा अपना घर था. शमा में मैंने सन् उन्नीस सौ अस्सी में घर बनाया था. उस घर में अमीना की स्मृतियां थीं. उस घर को छोड़कर मैं कैसे विदेश में रह सकता था.'' उन्होंने बहुत दुख से बताया था.

"उस समय आपको डर नहीं लगा हिंदू बहुल इलाके में घर बनाते हुए. उस समय नहीं सोचा नहीं था कि भविष्य में भी इस तरह का खतरा हो सकता है." विपुल ने कहा.

"नहीं, उस समय नहीं सोचा था कि इस तरह का खतरा भी हो सकता है. उस समय मैंने घर कैंटोनमैंट एरिया में खरीदा था यह सोचकर कि यहां आसपास आर्मी है. यहां खतरा नहीं हो सकता. उस समय मुझे लगता था कि इस एरिया में कम्यूनल फीलिंग्स नहीं होंगी. उस समय मैं सोचता था कि हमें यदि रूलर सैक्यूलर सोसायटी बनानी है तो हमें साथ-साथ रहना होगा. इससे इंटीग्रेशन बढ़ता है और वह सबसे ज्यादा जरूरी है."

"पर ऐसा हो नहीं सका." विपुल ने कहा.

"हां, ऐसा हो नहीं सका. उल्टे अलगाव बहुत ज्यादा हो गया है. अलगाव की रेखाएं बहुत गहरी हो गई हैं. आज हिंदू और मुसलमान एकदम अलग-अलग सोसायटी में रहने लगे हैं. आज उनमें विभाजक-रेखा बहुत साफ-साफ देखी जा सकती है. हम ऐसी स्थिति में आ गए हैं जहां बॉर्डर शब्द का प्रयोग होने लगा है, यह बहुत दुखदायी है."

उनके स्वर में गहरी वेदना थी.

"पर आपने हमेशा एक स्टैंड लिया हर मुद्दे पर." विपुल ने कहा.

"हां, मैंने हमेशा इशु के सामने अपना स्टैंड लिया. उन्नीस सौ इक्कासी में आरक्षण के विरोध में आंदोलन हो रहा था तो मैंने एक स्टैंड लिया था. उस समय मैं एक हॉस्टल का चीफ वार्डन था. उस हॉस्टल में चार हजार बच्चे थे. उनमें दलित बच्चे भी थे. और इस सारे आंदोलन के टारगैट दलित थे. दलितों को हिम्मत देने के लिए मैंने तीन दिन उपवास किया और आंदोलन में उनका साथ दिया. तीन दिन बाद जब मैं अपने घर में आया तो मेरे घर में हमला हुआ. हम लोग बहुत डर- से गए थे. मेरी पत्नी बहुत डर गई थी. वह बार-बार कहती थी कि अमेरिका से आकर बहुत बड़ी गलती की तुमने."

"पुलिस का बिहेवियर आपके साथ कैसा रहा?" विपुल ने पूछा.

"पुलिस का बिहेवियर हमेशा मेरे साथ खराब ही रहा. उन्नीस सौ बयासी में जब इस शहर में दंगे हुए तो पुलिस का बिहेवियर ठीक नहीं था. पुलिस गुंडे और बदमाशों के खिलाफ़ कार्यवाही न कर सकी तो हम लोगों ने सत्याग्रह शुरू किया था." उन्होंने बताया.

"कैसा सत्याग्रह." विपुल ने जानना चाहा.

"हमारी संस्था विमर्श से हम पांच-पांच लोग बारी-बारी से पुलिस कमिश्नर के ऑफिस के सामने बैठते और कोर्ट एरैस्ट करवाते. अंतिम राउंड में मैंने भी कोर्ट

एरैस्ट दिया. उस समय मेरे ऊपर आरोप लगाया था कि मैं बड़ौदा में पाकिस्तान बनाना चाहता हूं. उस समय मैं अध्यापक कुटीर में रहता था. मेरे घर में उस समय भी हमला हुआ.'' उन्होंने बहुत दुख के साथ बताया.

''और आपकी पत्नी. उन्होंने कैसे लिया आपके ऊपर हुए इस हमले को.'' मैंने पूछा.

''बार-बार के हमलों से मेरी पत्नी बहुत नर्वस हो गई थी. वह बेहद डर गई थी. उसे हर बार लगता था कि मैंने अमेरिका छोड़कर बहुत बड़ी गलती की है. बार-बार मुझसे कहती रहती थी कि तुम्हें वापस यहां नहीं आना चाहिए था. जब जब ऐसे हालात होते, उसे बहुत अफसोस होता. मुझसे कहती तुम बच्चों के बारे में नहीं सोचते. उनकी सिक्यूरिटी के बारे में नहीं सोचते. बार-बार के हमले से वह बहुत डर गई थी. उसे स्ट्रैस बहुत हो गया था. उसे डिप्रेशन हो गया था. बीस साल तक वह लगातार डिप्रेशन में रही. दो बार हमारे घर में हमला हुआ. जब-जब मेरे घर पर हमला हुआ वह घर में थी. बच्चों के साथ. भीड़ आती थी. घर पर पत्थरबाजी होती थी. घर का नुकसान होता था. वह बेइंतहा डर गई थी. मेरे काम के लिए उसने बहुत बड़ी कीमत चुकाई. प्राइस शी पेड फॉर माई लाइफ इज़ वैरी हाई.'' कहते-कहते उनकी आंखों में आंसू आ गए. ''लेकिन फिर भी कभी उसने मुझे छोड़कर जाने के बारे में नहीं सोचा. हमेशा मेरे साथ रही. एक भारतीय महिला के संस्कार थे उसमें.''

''वे भी विचारों के स्तर पर आपके साथ थीं.''

''ऐसा तो नहीं था. विचार के स्तर पर तो वह कभी मेरे साथ नहीं रही लेकिन कभी मेरा विरोध नहीं किया. हमेशा मेरे साथ ही रही. वह एक टिपिकल हाउसवाइफ थी. बच्चों के बारे में ज्यादा चिंतित रहती थी. उनकी पढ़ाई-लिखाई के बारे में. उनकी सेहत के बारे में वह बहुत फिक्र करती थी.'' कहते-कहते वे अतीत की ओर चले गए.

वह बार मुझसे कहती थी कि यहां के हालात को देखते हुए मैं बड़ौदा क्यों नहीं छोड़ देता. यह सब क्यों नहीं छोड़ देता.

पर मैंने उसकी बात नहीं मानी. उसने बड़ी मेहनत और बड़ी रुचि लेकर शमा वाला घर बनवाया था. उसके सपनों और आकांक्षाओं का घर था वह. घर के एक-एक कण में उसके सपने थे. उसके अरमान थे. एक-एक चीज को उसने सहेज कर रखा था. किस्मत देखिए उसके जाते ही उसके सपनों का घर भी खत्म हो गया.'' कहते-कहते वे एकदम मौन हो गए.

''पर आपके कार्यों का वे बहुत सम्मान करती थीं.''

''हां सम्मान तो बहुत करती थी पर अक्सर उसका एक ही सवाल होता.''

कहते कहते वे रुक गए.

"क्या." विपुल उत्सुकता बढ़ गई.

"वह बार-बार मुझसे पूछती कि मैंने इतना कुछ किया. गिरफ्तारियां दीं. नातबार हुआ. मेरे घर पर हमले हुए. इसके एवज में मुझे क्या मिला. मेरे कार्यों से समाज में क्या बदलाव हुआ." इस तरह के सवाल वह बार-बार करती थी.

"आप क्या जवाब देते उनके इन सवालों का." विपुल ने जानना चाहा.

"मैं उसके इन सवालों के सामने निरूत्तर हो जाता. मेरे पास उसके इन सवालों का कोई जवाब नहीं था. मैं क्या जवाब देता. मैं अपने कामों का कोई परिणाम उसे नहीं दिखा सकता था."

"पर आपको क्या लगता है कि आपके कार्यो से समाज में कुछ बदलाव आया." विपुल ने आहिस्ता से पूछा.

विपुल का यह सवाल सुनकर उन्होंने विपुल की तरफ स्नेह से देखा और कहा, "क्या कहा जा सकता है. समाज के बदलाव का कोई पैमाना तो है नहीं. बस इतना जरूर कह सकता हूं जो मुझे ठीक लगता था, मैंने किया. एक कमिटमैंट था मेरे अंदर. मैंने उस कमिटमैंट को पूरा किया. समाज के प्रति अपने दायित्वों को निभाया. वी शुड लीव बैटर वर्ल्ड.... अवर्स ओन कंट्रीब्यूशन्स शुड बी देयर. हमारे मन में समाज के लिए कुछ कंसर्न होने चाहिए. हमारी कोशिश होनी चाहिए कि हम समाज को बेहतर बनाएं. एक बेहतर समाज आने वाली पीढ़ी को दे सकें."

उन्होंने शायद अपनी पत्नी के सवालों का जवाब विपुल को देते हुए कहा था.

उनसे इन सवालों का जवाब सुनकर विपुल ने पूछा, "आपने जो कुछ किया उससे संतोष है आपको."

"ऐसा तो नहीं कहा जा सकता कि मैं अपने कामों से संतुष्ट हूं. संतुष्टि का भी कोई पैमाना नहीं है. सामाजिक बदलाव की प्रक्रिया लगातार चलती है. हमारी कोशिश यही होनी चाहिए कि हम इस बदलाव की प्रक्रिया को तेज कर सकें. पर हां, यह जरूर है कि हमें हिम्मत नहीं हारनी चाहिए. गांधी ने यही किया. मार्क्स ने यही किया. लेनिन ने यही किया. लेकिन इनमें से कोई यह नहीं कह सकता कि अकेले मेरे कारण समाज बदला. मेरे कार्यों का यह परिणाम रहा. समाज को बदलने में बहुत सारी शक्तियां एक साथ काम करती हैं. हो सके तो हमें उन शक्तियों की गति को तेज करना चाहिए."

उन्होंने एक-एक शब्द रुक-रुक कर कहा था.

"आप अमेरिका में किस प्रकार की स्टडी करने गए थे." यह सवाल विपुल के मन में कई सालों से घुमड़ रहा था लेकिन कभी उनसे पूछा नहीं. आज जब

अवसर मिला तो पूछ बैठा.

"मैं एक नए विषय का अध्ययन करने के लिए गया था. आइंसटाइन ने कहा था कि जब किसी भी चीज की स्पीड लाइट की स्पीड से भी तेज हो जाए तो क्या होगा. मैं यह रिसर्च करने के लिए गया था कि यदि मान लो ऐसा हो ही जाए तो क्या हो सकता है. मेरे इस काम पर ही मुझे पी.एच.डी. की डिग्री एवार्ड हुई थी."

"क्या लगता है आपको कि लाइट की स्पीड को कोई यूनिवर्सल ताकत संचालित करती है." विपुल ने पूछा

"कोई न कोई शक्ति है जो सारे परिवर्तनों को संचालित करती है. जिसे आइंसटाइन कॉसमिक इंटेलिजेंस कहते थे. शायद इसी शक्ति ने हुल्लड़ के दौरान मुझे फौरन अपना घर छोड़ने के लिए कहा था और यदि मैं एक मिनट भी और वहां रुकता तो भीड़ ने मुझे घेर लेना था. तब मैं जिंदा न बचता– यह तय था. जैसे एहसान जाफरी की हत्या हो गई है वैसे ही मेरी भी हत्या हो जाती. वे लोग मुझे मारने ही आए थे. आज फुर्सत के समय में सोचता हूं कि अचानक मेरे मन में घर को छोड़ने का विचार कैसे आया. अमीना की स्मृतियों के घर को छोड़ने का विचार यकायक कैसे आ गया. इसे तुम मानवीय विवेक कह लो या इसे तुम सिक्स सैंस कह लो. कॉसमिक इंटैलिजेंस कह लो या इसे अंतरात्मा की आवाज कह लो या इसे रूहानी ताकत कह लो. कुछ तो था जरूर जिसने मुझे उस लम्हे में ही घर छोड़ने के लिए कहा और मैंने बिना दुबारा सोचे, बिना एक पल गंवाए अपना घर छोड़ दिया." उन्होंने बताया.

"क्या कभी आपने फिर अमेरिका जाने के बारे में सोचा." विपुल ने पूछा.

"नहीं फिर कभी अमेरिका जाने के बारे में नहीं सोचा. एक बार वह देश छोड़कर आ गए तो फिर वापस जाने के बारे नहीं सोचा. बाद में लोगों ने समझाया कोई बात नहीं एक बार गलती हो गई, तो हो गई. नासमझी में कभी-कभार आदमी ऐसे कदम उठा बैठता है लेकिन वक्त आने पर अपनी गलतियों को दुरस्त भी कर लेता है. अभी भी वक्त है. कुछ बिगड़ा नहीं है. फिर से अमेरिका जा सकते हो. वहां रहकर अपने देश और अपनी कौम के लिए ज्यादा कर सकते हो. लेकिन नहीं. मैंने जो ठानी सो ठानी. दुबारा उस देश के बारे में सोचा भी नही, जाने की बात तो बहुत दूर रही. मैं दुबारा जाने के लिए वापस नहीं आया था."

उन्होंने गर्व से बताया था.

"पर बच्चों को तो आपने अमेरिका का रास्ता ही दिखाया." विपुल ने एक सवाल-सा उनके समाने रख दिया.

"बच्चों को मैं नहीं रोक सकता था. अमीना के मन में एक अपराधबोध-सा था. उसने जब बहुत पहले बच्चों को अमेरिका में सैटल करने की बात कही थी तो मैं

उसे नहीं रोक सका था. और आज मुझे लगता है कि उसने ठीक ही किया.'' उन्होंने आंखें बंद करके लंबी सांस लेते हुए कहा था.

बातें बहुत हो गई थीं और देर भी काफी हो चुकी थी. साजिद और अफरोज दोनों आ चुके थे. उन दोनों को उनकी किसी बात में कोई दिलचस्पी नहीं थी. कुछ देर बाद विपुल ने कहा, ''मैं चलता हूं. कल फिर आऊंगा.''

''हां अब तुम चलो. कल देखना उमर अंसारी की दुकान से मेरा चश्मा बन गया हो तो लेते आना. शायद कल ही हमारे कुछ साथी शाहपुरा कैंप चलने वाले हैं. तुम्हारी इच्छा हो तो तुम भी चलो.''

''हां जरूर चलूंगा.'' विपुल ने कहा.

''चलना हो तो कल शाम आ जाना.'' उन्होंने विपुल से कहा.

''हां आ जाऊंगा और आते समय आपका चश्मा भी लेते आऊंगा.'' विपुल ने कहा.

''ठीक है.'' कहते हुए उन्होंने विपुल को जाने की इजाजत दी.

विपुल ने उन्हें प्रणाम किया और बाहर आ गया. बाहर आकर गाड़ी स्टार्ट की. और कुछ ही देर बार मेन सड़क पर आ गया. गाड़ी चलाते हुए उसे लग रहा था कि पोथीवाला के उपचेतन में उनके जीवन संघर्ष के अनुभव, उन अनुभवों से उपजी कड़वाहट, तिरस्कार और उन सबके बीच उनका अपना मिशन आज भी मौजूद है. वह यही सोच रहा था कि उन्होंने विष भी पीया और विष को पचाया भी. लेकिन कभी विष पीने का ढोल उन्होंने नहीं पीटा. उन्होंने दुख भोगे तो अपने फैसले के कारण ही लेकिन कभी भी अपना फैसला बदला नहीं. अपने फैसले पर अफसोस नहीं जाहिर किया.

14

उमर अंसारी अपनी दुकान को फिर से बनाने में लग गए थे. दुकान ही उनकी रोजी-रोटी का जरिया थी. इसी प्रकार के हुल्लड़ में पहले दो बार उनकी दुकान लूटी जा चुकी थी. पहले उन्नीस सौ बयासी के दंगों में और दूसरी बार उन्नीस सौ बानवे के दंगों में. उन्नीस सौ बयासी में जब दंगे हुए तब वे दुकान के ऊपर रहते थे. भय और खौफ का आलम था. तब अपनी आंखों से उन्होंने अपनी दुकान को लुटते हुए देखा था लेकिन उफ् तक नहीं की थी. उनका बेटा अनवर उस वक्त बहुत छोटा था. तब उनका घर दुकान के ऊपर ही था. दंगाई उनकी दुकान का सारा सामान लेकर चले गए. न किसी को मारा-पीटा था और न ही किसी को आहत किया था. सारा काम उन्होंने चुपके से किया था.

यह उन्नीस सौ बयासी की बात थी. लेकिन अब हालात एकदम अलग थे. इस बार न सिर्फ दुकान लूटी थी बल्कि दुकान को ढहा भी दिया गया था. उसे मलबे में बदल दिया गया था.

वे ज्यादा दिन तक अपनी दुकान की बर्बादी के शोक में डूबे नहीं रह सकते थे. जब माहौल थोड़ा शांत हो गया और लोग इस त्रासदी को भूलकर अपने काम धंधे में लगने लगे तो उमर अंसारी ने अपने बेटे अनवर से दुकान को फिर से बनवाने की बात कही तो अनवर बिफर-सा गया. कहने लगा, "हम लोगों के पास इतने पैसे हैं क्या कि फिर से दुकान बनवा सकें." उसने अपने पिता से सवाल किया.

"पैसे तो नहीं हैं लेकिन दुकान की इश्योरेंस का पैसा मिल जाएगा. थोड़ा बहुत बैंक से लोन वगैरह ले लेंगे. दुकान तो बनानी ही है." उमर अंसारी ने अपने बेटे को बताया.

"फिर लूट गए तो...." उसने फिर सवाल किया.

"दुकान न बनाएं तो क्या करेंगे?" उमर अंसारी ने एक दूसरा सवाल अपने

बेटे के सामने रख दिया.

"किसी दूसरी जगह दुकान नहीं बना सकते. शहर से बाहर किसी महफूज जगह? जहां इस तरह की वारदातें होने की गुंजाइश न हो." उनके बेटे अनवर ने उनके सामने बड़े-से सवाल का छोटा-सा हल रख दिया.

"कौन सी महफूज जगह है हम लोगों के लिए" उन्होंने निराशा से अपने बेटे की ओर देखते हुए पूछा.

उन्होंने एक दूसरा सवाल अपने बेटे के सामने खड़ा कर दिया.

अनवर के पास इस सवाल का जवाब था. कहने लगा, "शहर के बाहर नए नए काम्पलेक्स बन रहे हैं. अपनी ही बिरादरी के लोग बनवा रहे हैं. वहां कोई दुकान नहीं ले सकते. वहां अपना धंधा नहीं शुरू कर सकते?"

शहर के बाहर नए-नए काम्पलेक्स में कोई दुकान लेकर अपना धंधा शुरू करने का विचार उनके मन में कई बार आया था. पर कभी यह हो न सका. सन् बानवे में भी उन्होंने ऐसा ही सोचा था और सन् बयासी में ऐसा ही सोचा था. उनके मन में ख्याल आया था कि शहर के भीड़-भाड़ वाले इलाके में से अपनी दुकान को हटाकर कहीं दूसरी जगह ले जाएं. लेकिन कौन-सी जगह. उस समय भी उन्होंने कई जगह देखीं लेकिन कोई जगह रास नहीं आई. किसी जगह धंधा जमने के आसार उन्हें नहीं दिखाई दिए तो किसी जगह उन्हें सुरक्षा नहीं लग रही थी. तब यह सवाल केवल सवाल ही रहा.

आज उनके बेटे ने भी यही सवाल उनके सामने रखा था तो उनका पुराना अनुभव उनके सामने आ गया. कहने लगे, "दुकान तो वहां ले लेंगे पर धंधे का जमाना इतना आसान नहीं होगा. यहां हमारे परमानैंट ग्राहक हैं. वहां कौन आयेगा हमारी दुकान में?"

"ग्राहक तो वहां भी मिल जाएंगे. और वहां लुटने का डर तो नहीं रहेगा." अनवर ने सहजता से जवाब दिया.

"यह नामुमकिन है बेटा कि उन इलाकों में हमको कोई दुकान मिल जाएगी. अब पहली जैसी बात नहीं है. हम लोग हर कहीं दुकान नहीं ले सकते. हालात बहुत खराब हो चुके हैं. और फिर उन इलाकों में भी हालात यहां जैसे ही हैं. इस बार उन इलाकों में भी ऐसी कोई जगह नहीं बची जहां हुल्लड़ न हुआ हो. जहां दुकानें न लूटी हों. इस बार तो पॉश इलाकों की बड़ी-बड़ी दुकानों को भी लूट लिया गया."

उन्होंने अपने बेटे को हालात के बारे में बताने की कोशिश की. उनके स्वर में दुख और बेचैनी थी.

"तो क्या हम अपनी दुकान फिर से इसलिए बनाएं कि हम फिर से लुट जाएं. हमारी दुकान को फिर से गिरा दिया जाए." अनवर ने गुस्से से पूछा.

"उम्मीद तो ऐसी नहीं है लेकिन...."

कहते कहते उमर अंसारी रुक गए.

"देखना पांच-सात साल बाद ऐसे ही दंगे-फसाद फिर होंगे. फिर आएंगे वे हमारी दुकान लूटने. फिर से मंदिर का झगड़ा शुरू होगा. फिर से बंद का ऐलान होगा. फिर से हमारी दुकान तोड़ी जाएगी. फिर से हमें मार पड़ेगी. हम कब तक मार खाते रहेंगे." उसने बहुत निराशा और मायूसी से कहा था.

भविष्य का कोई भी नक्शा उसके जेहन में नहीं था.

अनवर के इस सवाल में दम था. उन्हें भी समझ में नहीं आ रहा था कि इसका हल क्या है. कब तक वे अपनी दुकान बनवाते रहेंगे और लुटते रहेंगे.

"उम्मीद तो है बेटा कि आगे ऐसा नहीं होगा. आखिर सरकार भी तो कुछ करेगी." उन्होंने अपने बेटे को दिलासा दिया.

"इस सरकार से आशा करना बेकार है. जब सरकार ही हम लोगों को मारने पर उतारू है तो किसी से क्या उम्मीद की जा सकती है. हम किससे उम्मीद करें. किस उम्मीद के सहारे फिर से दुकान बनाएं. क्या ऐसी कोई सरकार नहीं जो हम लोगों की सुरक्षा की गारंटी दे सके. हम लोगों को आराम से रहने दे. हम लोगों को मारे नहीं."

लग उमर अंसारी को भी रहा था कि मामला बहुत ज्यादा गहरा हो गया है. वे कुछ बोले नहीं. चुपचाप अपने बेटे की बातें सुनते रहे.

पर उमर अंसारी ने फैसला कर लिया था कि वे अपनी दुकान यहीं बनाएंगे. चौथी बार.

15

खुले आसमान के नीचे तपती धूप में शाहपुर कैंप लगा था. जमीन तप रही थी. सूरज इस तपिश को और अधिक बढ़ा रहा था. कैंप के बाहर एक बोर्ड लगा हुआ था जिस पर एक बैनर था. उस बैनर में लिखा हुआ था कि "हमसे मिलना है तो यहां आइए, हम अपने घरों में नहीं, राहत शिविरों में रहते हैं." इस कैंप में लोग थे. त्रस्त और डरे हुए लोग. आशंकित और बेसहारा लोग.

पोथीवाला को देखकर कुछ लोग उनके पास गए. दुआ सलाम के बाद एक ने पूछा. "कब जाएंगे हम वापस अपने घर?"

"अभी कुछ कहा नहीं जा सकता. कोशिश कर रहे हैं हालात सामान्य हों. जितनी जल्दी हो सके आप लोग अपने-अपने घरों में वापस जाएं."

"क्या नाम है आपका?" विपुल ने एक आदमी से पूछा.

विपुल की बात सुनकर वह चौंक गया. उसे अंदाजा नहीं था कि कोई उससे उनका नाम भी पूछ सकता है.

"अनवर शेख."

उसने घबराई हुई आवाज में बताया.

लंबा-सा शख्स था. चेहरे पर पतली-सी दाढ़ी थी. उस दाढ़ी में मेंहदी थी. आंखें छोटी और चेहरे पर उदासी.

"आप यहां कैसे आए? क्या हुआ था आपके साथ?" विपुल ने उससे जानना चाहा.

वह विपुल के इस सवाल से कुछ परेशान-सा हो गया.

"मैं यहां नहीं आया हूं. बल्कि मैं अपने लोगों को ढूंढ रहा हूं." उसने रूआंसा होकर कहा.

"किन लोगों को ढूंढ रहे हैं." विपुल ने फिर पूछा.

"हमारे गांव के दस लोग गुम हो गए हैं. उन्हें ढूंढ रहा हूं." उसने बताया.

“गुम हो गए... कैसे गुम हो गए?” विपुल ने हैरानी से पूछा.

“यही तो पता नहीं. उस दिन गुजरात बंद था. हमें अंदेशा था गड़बड़ का. हम सब मैमो ट्रेन पकड़ने के लिए गांव से निकले ही थे कि रास्ते में टैम्पो से आ रहे कुछ लोगों ने हमें रोक लिया और हमारे लोगों को टैम्पो में बिठाकर कहीं ले गए. मैं किसी तरह बच गया.”

उसने अपनी दास्तान बताई.

“कहां ले गए उनको?”

“यही तो पता नहीं. मैं यहां आया हूं शायद वे लोग इस कैंप में मिल जाएं.”

“आपने पुलिस को बताया था इस बारे में.” विपुल ने पूछा.

“हां बताया था. पर पुलिस ने कुछ नहीं किया.”

“क्यों नहीं किया?”

“क्यों नहीं किया, यह तो पता नहीं पर पुलिस ने हमको यही कहा कि अपने लोगों को किसी कैंप में ढूंढो. उन्हीं अपने लोगों को ढूंढ रहा हूं.”

“कौन थे वे लोग जो टैम्पो में बिठाकर आपके लोगों को ले गए.”

“पास वाले गांव के लोग थे साहब. हम लोगों ने उनसे कहा था कि हम कहीं नहीं जाना चाहते. आप हम सब को इकट्ठा करके गोली मार दो. पर वे उन लोगों को अपने साथ टैम्पो में बिठाकर कहीं ले गए.” उसके एक साथी ने बताया.

उन लोगों को बातचीत करते देख कुछ और लोग वहां आकर खड़े हो गए थे.

“आप यहां कैसे आ गए?”

विपुल ने पास खड़े एक दूसरे व्यक्ति से पूछा.

“मुझे भीड़ ने पकड़ लिया था.” उसने बताया.

“किस भीड़ ने.”

“टोपी वाली भीड़ ने.”

“कौन सी टोपी वाली भीड़ ने.”

“गेरूए रंग की टोपी वाली भीड़ ने. उनकी टोपी पर ओम लिखा हुआ था.” उसने बताया.

“क्या किया था उन्होंने.” विपुल ने जानना चाहा.

“उन्होंने मेरी बांह में त्रिशूल भोंक दिया.” उसने लगभग रोते हुए अपनी बांह का घाव दिखाया.

विपुल ने गौर से उसकी बांह को देखा. उसकी बांह को किसी तेज हथियार से गोद दिया गया था. हालांकि जख्म कई दिन का था लेकिन अभी भी भरा नहीं था.

“कोई दवा लगाई.”

"कहां है दवाई साहब. यहां न कोई डाक्टर है और न ही कोई दवाई. कैंप से बाहर जा नहीं सकते. बाहर खतरा है."

कैंप के सारे लोग इस भय से जूझ रहे थे. उन्हें आशंका थी कि यदि वो कैंप से बाहर निकले तो उनकी जान की खैर नहीं.

कैंप में एक बुजुर्ग से सज्जन ने पोथीवाला को बताया, "इस कैंप में केवल चार बाथरूम हैं. पांच हजार लोग हैं इस कैंप में. छोटा-सा पांडाल है. बाथरूम की सफाई तक नहीं हो रही. लोग नर्क जैसी स्थितियों में रह रहे हैं. डिहाईड्रेशन, टायफायड और मलेरिया जैसी बीमारियां फैल रही हैं. पानी नहीं है यहां."

सुबह-सुबह नौ बजे सूरज की तेज रोशनी पूरे पंडाल पर छा गई. कैंप का संचालक पोथीवाला से शिकायत कर रहा था.

"मेरे सामने वाले घर को जला दिया. मेरी बकरियां उठाकर ले गए."

पोथीवाला चुपचाप उनकी शिकायतों को सुनते रहे.

"हालात जब ठीक हो जाएंगे तो क्या वापस अपने घर जाना चाहेंगे." विपुल ने एक व्यक्ति से पूछा.

"नहीं हम नहीं जाना चाहेंगे. हम यहीं रहेंगे. हम वापस गए तो वे हमें फिर मार देंगे. हम मरना नहीं चाहते." उसने हाथ जोड़ते हुए कहा.

एक अनजाना-सा डर उसके रोम-रोम में दिखाई दे रहा था.

उन लोगों की बातें सुनकर एक बुजुर्ग ने कहा, "बस कयामत का माहौल है."

"आप यहां कैसे आए." विपुल ने पास खड़े उस बुजुर्ग से पूछा.

"हमको नगीन भाई छोड़ गए यहां."

"कौन नगीन भाई."

"हमारे पड़ोसी हैं. लेकिन हम लोगों ने कभी नहीं सोचा कि वे लोग हिंदू हैं और हम मुसलमान. जब भीड़ आई और शोर बढ़ने लगा तो नगीन भाई ने भांप लिया कि मामला संगीन है. उन्होंने हमें छत पर भेज दिया. हम अपनी छत से उनकी छत पर चले गए. तीन दिन तक हम लोग उनकी छत पर रहे. जब कैंप खुला तो नगीन भाई कहने लगे कि खतरा अब बहुत ज्यादा है. बेहतर होगा कि हम लोग कैंप में चले जाएं और वे हमें अपनी मारूति वैन में यहां इस कैंप में छोड़ गए. उन्होंने हमारी खातिर अपनी जान जोखिम में डाली."

उन्होंने कैंप में पहुंचने की अपनी दास्तान बताई.

"हम लोगों को यहां पहुंचाने में गुंडों का हाथ है साहब़. हम लोग बहरामपुरा के शीशनगर से आए हैं. झोंपड़पट्टी है हमारी. जब से धमाल की खबरें आने लगीं तो हम लोग सावधान हो गए और हमने बाहर से किसी को नहीं आने दिया. न

हमने खबरों पर यकीन किया और न ही अफवाहों पर. सब झूठी खबरें फैला रहे थे साहब. हमारी झोंपड़पट्टी में ऐसा कोई दंगा नहीं हुआ था साहब. हमारी झोंपड़पट्टी में मंदिर भी है, मस्जिद भी. हमने अपनी झोंपड़पट्टी में कुछ धमाल नहीं होने दिया साहब.'' किसी दूसरे व्यक्ति ने अपनी दास्तान विपुल को बताई.

''फिर आप यहां....'' विपुल ने जानना चाहा.

''हम अपने भाइयों के लिए खाना बनाकर यहां लाते हैं.''

उसके स्वर में उत्साह था.

''और आप... आप कैसे आए यहां?'' विपुल ने एक से पूछा.

''सुबह के नौ साढ़े नौ का वक्त था साहब. हमारे घर के चारों तरफ जयश्री राम का शोर हुआ. हम लोग शोर सुनकर घर से बाहर आए. बाहर बहुत सारे लोग थे.''

''कौन लोग थे वो?''

''पता नहीं. पहले कभी देखा नहीं था उन लोगों को. वे जोर-जोर से चिल्ला रहे थे कि हम मुसलमानों को खत्म कर देंगे. हम लोग डर गए. हमने भागने की कोशिश की लेकिन उन लोगों ने हमें पकड़ लिया. हमारे घरों को आग लगा दी. और उस आग में लोगों को उठा-उठा कर डालना शुरू किया. पहले उन्होंने मेरी अस्सी साल की बूढ़ी मां को आग में डाला. फिर मेरे बूढ़े पिता को. हमने उनसे रोते हुए कहा कि हमें छोड़ दो. हमने क्या बिगाड़ा है तुम लोगों का. लेकिन उन लोगों ने उनकी एक न सुनी और जबरदस्ती आग में धकेल दिया. किसी ने पीछे से मेरे सिर पर लोहे की छड़ मारी. मैं भागा और रास्ते में गिर गया. काफी देर तक वहीं पड़ा रहा. मुझे किसी ने अस्पताल पहुंचाया. अस्पताल से दवा लेकर यहां भटकता -भटकता इस कैंप में आ गया.''

उसने रोते हुए अपनी कहानी सुनाई.

''और कौन-कौन आया था आपके साथ?''

''मेरे साथ और भी कई लोग थे. पांच दिन से हम लोग कैंप में हैं. मुझे रात को नींद नहीं आती. रात को अम्मा अब्बा और जलता हुआ घर ही दिखाई देता है.'' कहते-कहते उसकी आंखों में आंसू बहने लगे.

पास में एक लड़की खड़ी थी. मासूमियत उसके चेहरे पर थी.

विपुल ने उससे पूछा, ''तुम यहां कैसे? तुम्हारे साथ कोई नहीं है क्या?''

''नहीं कोई नहीं है हमारे साथ. मैं अकेली हूं.''

''कब से हो इस कैंप में?''

''पिछले दस दिनों से कैंप में हूं.''

''क्या हुआ था?''

"सब खत्म हो गया हमारा." उसने लगभग सुबकते हुए बताया, "अच्छा भला घर था हमारा. सब जल गया. फुटपाथ पर कर दिया हम लोगों को. मेरे पिता को खींचकर घर से बाहर ले जाया गया और उनकी छाती में त्रिशूल घोंप दिया गया. एक भयानक चीख मारकर उन्होंने वहीं दम तोड़ दिया. हमारे घर को आग लगा दी गई."

"यहां खाने को मिल जाता है?" पोथीवाला ने एक से पूछा.

"कहां मिलता है खाना. यहां न खाने का ठिकाना न नहाने-धोने का. सुबह पांच बजे से ही बाथरूम के लिए लाइन लग जाती है यहां. वैसे भी रात भर नींद नहीं आती. जिसका घर तबाह हो गया हो उसे नींद कैसे आ सकती है. रात भर आंखों में आंसू रहते हैं. डर लगता है हमको यहां पर."

"डर...."

"हां, डर..."

"हमारे लिए सब खत्म हो गया. सच्चाई, ईमानदारी, प्रेम, अपनापन सब खत्म हो गया."

उसने आंखों में आंसू भरकर कहा.

"यहां रहना जेल में रहने जैसा है." उस बुजुर्ग ने कहा.

"क्या नाम है आपका?" पोथीवाला ने पूछा.

"सैय्यद आरिफ." उस बुजुर्ग ने अपना नाम बताया.

"क्यों.... जेल में क्यों?" विपुल ने जानना चाहा.

"यहां तो पुलिस हमको कहीं जाने नहीं देती. टायलेट में जाते हैं तब भी पुलिस की नजरें हमारे ऊपर ही रहती हैं." सैय्यद आरिफ ने कहा.

"क्या करते थे आप?"

"लारी पर केले बेचता था. हुल्लड़ में मेरी लारी और घर दोनों जला दिए. अब मैं कहां जाऊंऔर क्या करूं?"

उसने सवालिया निगाहों से पोथीवाला की ओर देखते हुए कहा.

"कई दिनों से यहां पड़े हैं. बाहर कहीं जा नहीं सकते." कैंप में रह रही एक महिला ने कहा.

"क्यों, क्यों नहीं जा सकते?" विपुल ने उस महिला से पूछा.

"पुलिस हमें रोकती है."

"क्यों रोकती है?"

"कहती है बाहर अभी हम लोगों के लिए खतरा है. आप बताइए बाहर नहीं जाएंगे तो कमाएंगे कैसे. खाएंगे क्या."

उसके स्वर में बेचारगी थी.

"हम बच्चों को कैसे समझाएं कि बाहर न खेलें." एक महिला ने सुबकते हुए कहा था.

विपुल ने उसकी तरफ देखा, काला बुरक़ा ओढ़े एक महिला थी.

"बच्चों ने तो आज तक कर्फ्यू देखा तक नहीं. वे तो इसका मतलब भी नहीं जानते. ऐसे माहौल में रहेंगे तो बड़े होकर क्या बनेंगे." उसने आशंका से कहा.

उसके स्वर में दर्द था.

"रोज सैकड़ों लोग आ रहे हैं इस कैंप में. शहर में दंगों की वारदातें खत्म होने का नाम ही नहीं ले रही हैं. ऐसे में हम लोग कब तक यहां रह सकते हैं." कैंप के संचालक ने पोथीवाला को बताया.

सबकी फिक्र की परछाइयां उनकी उम्र के दरख्तों से भी लंबी थीं.

कैंप में एक वृद्ध मिला उन लोगों को. गुलजार मोहम्मद दीन मोहम्मद. सत्तर साल के आसपास उनकी उम्र रही होगी. वह अपनी याद्दाश्त को ताजा करते हुए पोथीवाला को बता रहा था कि, "सन् उन्नीस सौ चौबीस की बात है जब उसके पिता ने इस्लाम कबूल किया था. वह भूल गया था इस बात को. पिछले सत्तर साल से उसने इस्लाम के हर कायदे-कानून को माना. गांव वालों के साथ उसकी बातचीत में उसके व्यवहार में कभी इस्लाम नहीं आया. हम लोग मिलजुल कर रहते थे. एक-दूसरे के त्यौहारों में आते-जाते थे. एक-दूसरे के घरों में खाते-पीते थे. एक-दूसरे की शादी-ब्याह में आते-जाते थे. एक-दूसरे की श्मशान यात्राओं में जाते थे. पर आखिर ऐसा भी दिन आएगा. इसका अंदाजा तक नहीं था."

"किन लोगों ने आपका घर जलाया." विपुल ने पूछा.

"किस-किस का नाम लें. सभी लोग मेरे अपने थे."

"मुझे लोगों ने धमकाया कि मैं यह गांव छोड़कर मध्यप्रदेश चला जाऊं. लेकिन मैं नहीं गया."

"क्यों नहीं गए?"

"मुझे विश्वास था कि लंबे समय से हम लोग शांति से रह रहे हैं. इस गांव में कुछ नहीं होगा." कहते-कहते वे चुप हो गए.

"फिर?" पोथीवाला ने पूछा.

"उन्होंने मुझे हिंदू धर्म अपनाने को कहा. गांव में केवल पांच घर मुसलमानों के थे."

"आप लोगों ने क्या कहा?"

"हम लोग अपना धर्म कैसे बदलते. इतने सालों से इस्लाम को माना. हमारे बच्चे बड़े हो गए हैं, अब कैसे इस्लाम को छोड़ सकते हैं. और फिर क्या फर्क है इस्लाम और हिंदू में. अल्लाह की इबादत ही तो करनी है. मंदिर में न सही,

मस्जिद में सही."

"फिर क्या हुआ?"

"फ़िर सब कुछ खत्म हो गया. हमारे सब घर तोड़ दिए. गांव वालों ने कुछ लिहाज किया और हम पांच परिवारों को यहां छोड़ गए."

"आप लोग अपने घर वापस नहीं गए?" विपुल ने पूछा.

"गए थे. पर हमारे घरों और दुकानों में हिंदुओं ने अपने घर और दुकानें बना लीं." उसके स्वर में असहायता थी.

"आपने कुछ किया नहीं?"

"हम क्या करते और हम कर ही क्या सकते हैं. राशन कार्ड हमारे पास है. वोटर लिस्ट में हमारा नाम है. ग्राम पंचायत में हमारा नाम है. पर गांव वाले कहते हैं कि अब इस गांव में हमारा कुछ नहीं है. अब हम इस उम्र में कहां जाएं." उसने लगभग सुबकते हुए कहा था, "उन्होंने हमारी दुकानों को हमसे छीन लिया. हमारे घरों पर कब्जा कर लिया. वहां मंदिर बना दिया. हमने गांव वालों से कहा कि हम सत्तर साल से इसी गांव में और इसी घर में रह रहे हैं तो वे कहने लगे कि सब गांव वालों ने मिलकर यह फैसला किया है कि अब इस गांव में कोई मुसलमान नहीं रहेगा."

"क्यों? गांव में मुसलमान क्यों नहीं रहेगा?"

"क्योंकि गांव वालों का मानना है कि मुसलमान दंगे करते हैं. पर मैंने उन्हें बताया कि मैं पिछले कई सालों से गांव में तुम लोगों के साथ रह रहा हूं. कभी दंगा किया है हम लोगों ने आज तक और तुम लोगों ने तो मुझे सरपंच बनाया था. पर वे नहीं माने."

"तो अब आप कहां जाएंगे?"

"कहां जाएं, यही समझ में नहीं आ रहा."

उस बूढ़े व्यक्ति की आंखों में सूनापन था.

"अब आप करेंगे क्या?"

"देखें अल्लाह क्या करवाता है. हमने इतनी तकलीफें उठाईं. इतना दुख उठाया है कि रोने के लिए आंसू ही नहीं बचे. ऐसे-ऐसे मंजर देखे हैं कि मैं बयान नहीं कर सकता. दौलत हमारी सारी लुट गई."

कैंप में एक महिला मिल गई थी. साबिया नाम था उसका. वह दुबई से आई थी. उसका बेटा लापता हो गया था. वह बताने लगी कि जब हुल्लड़ हुआ तो उनकी गाड़ी को रोक लिया. उसने भीड़ को समझाने की कोशिश की कि वह हिंदुस्तान

की नहीं है. लेकिन किसी ने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया और उनकी गाड़ी को आग लगा दी. भीड़ में उसका पंद्रह साल का बेटा न जाने कहां चला गया.

वह अपने बेटे को इस कैंप में ढूंढ रही थी. वह हर कैंप में जाकर आई थी. दाहोद, अहमदाबाद, गोधरा, पंचमहल; सब जगह लेकिन कहीं उसके बेटे का पता नहीं चल पा रहा था. वह परेशान और त्रस्त थी.

सब लोग आशा भरी निगाहों से उन्हें देख रहे थे. उन्हें दिलासा देते हुए विपुल ने कहा, "धीरे-धीरे सब ठीक हो जाएगा. आप लोग अपने घर वापस जाएंगे, जरूर जाएंगे." कहते-कहते उसकी स्मृति में यह पंक्तियां गूंज गईं :

दोस्तो
दर्द का ये दिन भी गुजरने के लिए आया है
शाम तक ये भी गुजर जाएगा
अपनी आंखों को संभाले रखना
हिज्र की रात में कुछ ख्वाब उगाने के लिए
इन्हीं आंखों की जरूरत होगी.

कैंप के चलाने वालों ने पोथीवाला को बताया था कि कैंप में रहने वाले लोग और खासकर बच्चे इतने डरे हुए हैं कि रात भर लाइट नहीं बंद करते. डरते हैं कि फिर कहीं से इनके साथ वैसा ही हादसा न हो जाए. फिर कहीं कोई उन्हें मारने न आ जाए. बार-बार उन्हें पुलिस के सामने लाया जाता है. टी.वी. वाले आते हैं. उन्हें देखकर इनमें एक डर-सा समा जाता है. यदि इनके डर को दूर नहीं किया गया तो यह खतरनाक हो सकता है और यह काम राहत कैंपों में नहीं हो सकता.

कैंप में हरेक की यही कहानी थी. यही जुबानी थी. लोग डरे सहमे और उदास थे. प्रार्थना करते लोग थे. उनकी आंखों में एक डर था. सब कुछ लुट जाने का भाव उनके चेहरे से झलक रहा था.

वहां का दृश्य देखकर विपुल के मन में हताशा और निराशा गहरे समा गई. क्या इसलिए धर्म का इतना ढोंग पीटा गया, क्या इसलिए रथयात्रा निकाली गई. क्या इसलिए इतने सारे आयोग बिठाए गए. क्या इसलिए साधु-संतों की मंडली ने अपनी उदारता का परिचय दिया. कब इतना बड़ा समाज सांप्रदायिक हो उठा. कब से यह ज्वालामुखी धधकता रहा. आम आदमी के मन में इतनी घृणा कैसे हो गई. कब सारे नियम कायदे कानून सांप्रदायिक ताकतों की कठपुतली बन गए.

"जो कुछ हुआ उसका हमें बहुत दुख है." पोथीवाला ने कैंप के संचालक को बताया था.

"ये लोग अब क्या करेंगे?" विपुल ने कैंप के संचालक से पूछा.

"ये लोग अब कर ही क्या सकते हैं. गरीब लोग हैं. भीख मांगने के सिवा क्या चारा है इनके पास. केवल जकात का ही आसरा है इन लोगों को." उसने बताया.

"जकात..." विपुल ने हैरानी से पूछा.

"हां जकात. मुसलमानों के पास जकात के सिवा चारा ही क्या है. इनके पास जहालत और गरीबी है. पहले से ही ये लोग जहालत और गरीबी से बाहर नहीं निकल पा रहे हैं और ऊपर से यह मुसीबत और आन पड़ी है."

कैंप से लौटते हुए पोथीवाला ने कहा, "ऐसी मुसीबत इससे पहले मुसलमानों के सामने कभी नहीं आई."

शाम हो चुकी सूरज की लालिमा धीरे-धीरे खत्म हो चुकी थी. सड़क पर अंधेरा धीरे-धीरे फैल रहा था. पोथीवाला चुपचाप कार की पिछली सीट पर आकर बैठ गए थे. उस अंधेरे को पार करती हुई उनकी कार शहर की ओर बढ़ने लगी थी.

16

अगले दिन सुबह जब विपुल उनसे मिलने गया तो वह अख़बार पढ़ रहे थे. घर में कोई नहीं था. न साजिद, न अफरोज. विपुल ने कॉलबैल बजाई तो दरवाजा पोथीवाला ने ही खोला. विपुल को देखकर वे खुश हुए. कहने लगे, "आओ मैं तुम्हारे बारे में ही सोच रहा था."

विपुल ड्राइंग रूम में सोफे की एक कुर्सी पर जाकर बैठ गया. घर में चहल-पहल न होते देखकर उसने पूछा, "घर में कोई नहीं है क्या?"

"नहीं कोई नहीं है. अफरोज और साजिद मुंबई गए हैं. अमेरिकन एम्बैसी वालों ने अफरोज को बुलाया है. वीसा के लिए कुछ कागज जमा कराने हैं. साजिद भी उसके साथ गया है."

विपुल को लगा कि आखिर पोथीवाला अपने बच्चों को अमेरिका ही क्यों भेजना चाहते हैं? क्यों नहीं उन्हें पास रखते. या शायद उन्होंने यहां रहने के लिए उनसे कहा भी हो पर जो हश्र उनका यहां हुआ, उसे देखकर साजिद और अफरोज यहां रहने के लिए तैयार न हुए हों. या कुछ और भी कारण हो सकते हैं. एक कारण तो साफ था कि अफरोज एक हिंदू लड़के से शादी कर रही है और उन्हें अपनी सुरक्षा का ज्यादा ख्याल है. और साजिद यहां के हालातों से तंग आकर यहां से जाना चाहता था.

वह उनसे इस पर बात करने ही वाला था कि पोथीवाला ने कहा, "आज छोटा उदयपुर के बारे में अख़बारों में बहुत कुछ छपा है. वहां एक स्कूल है– आदर्श पाठशाला. वह स्कूल हम लोगों ने बनवाया था. एक लंबी लड़ाई लड़ी थी वहां स्कूल खुलवाने में. उस स्कूल के बारे में तरह-तरह की खबरें अख़बारों में छप रही हैं. सोचता हूं जाके खुद देख आऊं."

"अविनाश भी अभी आ रहा है. उसने कहा था कि एकाध घंटे में यहां आ जाएगा." विपुल ने कहा.

"तो ठीक है. उसे भी साथ ले चलेंगे."

छोटा उदयपुर जाने से पहले अविनाश ने कहा, "गाड़ी में कुछ रिपेयर करवानी है. करवा लेते हैं कहीं रास्ते में खराब न हो जाए."

उसने अपनी गाड़ी पटेल मोटर्स की ओर मोड़ दी थी.

पटेल मोटर्स. शहर का मशहूर कारों का शोरूम. उसके बाहर लोगों की भीड़ थी.

"आज यह भीड़ कैसी?" उस भीड़ को देखकर अविनाश ने गाड़ी से उतरते हुए कहा.

विपुल और पोथीवाला भी गाड़ी से बाहर उतर आए.

"क्या बात है आज इतनी भीड़ क्यों है?" अविनाश ने वहां खड़े एक आदमी से पूछा.

"सेठ ने हम लोगों को नौकरी से निकाल दिया है." भीड़ में से एक आदमी ने बताया.

"क्यों. निकाल क्यों दिया." अविनाश ने जानना चाहा.

"सेठ का कहना है कि हम लोग दस दिन तक नौकरी में नहीं आए. हमारी वजह से उसे बहुत-सा नुकसान हुआ." उस आदमी ने बताया.

"तो तुम लोग नौकरी पर क्यों नहीं आए?"

"कैसे आते साहब पूरे शहर में कर्फ्यू था. चारों तरफ पुलिस थी. अपनी जान जोखिम में डाल कर कैसे आते साहब?"

उसके स्वर में दयनीयता थी.

"यह आपने अपने मालिक को बताया."

"हां बताया."

"तो फिर क्या कहा उन्होंने?"

"वे कहते हैं इस हुल्लड़ में उनका काफी नुकसान हो गया. महीने भर तो शोरूम बंद रहा. एक भी गाड़ी नहीं बिकी. एक भी गाड़ी रिपेयर होने के लिए नहीं आई. वे हम लोगों को नौकरी पर नहीं रख सकते."

"कब से काम करते थे आप यहां?"

"पिछले चालीस सालों से काम करते थे यहां. अब उन्होंने किसी और को रख लिया है." कहते-कहते वह रूआंसा-सा हो गया.

"क्यों आपको क्यों नहीं रखा. किसी और को क्यों रखा है?" अविनाश ने फिर पूछा.

"हम मियां लोग जो हैं."

"जिसको काम पर रखा है वह मियां नहीं है."

"नहीं. वह हिंदू है."

"उन्होंने हिंदुओं को क्यों काम पर रखा."

"यह तो मालूम नहीं पर सेठ का कहना है कि वे लोग देर रात में कहीं पर भी आसानी से आ-जा सकते हैं. हम लोग नहीं आ-जा सकते. हमें देर रात तक शहर में आने-जाने में खतरा रहता है. उनका घर शहर में नहीं है जबकि हमारा घर एकदम शहर में है. जहां अक्सर कर्फ्यू रहता है. सेठ यह भी कहता है कि यहां आने-जाने से हम लोगों को दिक्कत होती है. दंगा होने में हम लोग फंस जाते हैं. वे लोग नहीं फंसते."

पोथीवाला ने दुकान के अंदर जाकर उसके मालिक जयंत पटेल से बात की तो उन्होंने बताया कि "पिछले एक महीने से कारखाना खुला ही नहीं था. काम के जो आर्डर मिले थे, वे पूरे हो चुके थे. नया कोई आर्डर ही नहीं मिला था. हम कारीगरों को रखकर भी क्या करेंगे."

"इसमें इनका क्या कसूर है?" पोथीवाला ने पूछा.

"इनका कोई कसूर नहीं पर मैं अपना नुकसान कब तक करूं. और कल फिर हुल्लड़ होगा तो ये लोग अपना काम छोड़कर चले जाएंगे. तब भी नुकसान तो हमारा ही होगा. इसलिए अब हमने सोचा है कि मियां लोगों को काम पर रखना ही नहीं है."

पोथीवाला चुपचाप उनकी बातें सुनते रहे.

वहां कुछ देर रुककर अविनाश ने गाड़ी को ठीक कराया.

रास्ते में पोथीवाला ने कहा, "इन दंगों के दौरान शहर में सैकड़ों लोगों का रोजगार चला गया. बहुत सारे कारीगर बेरोजगार हो गए."

"कारीगर ही नहीं, वरन इंजीनियर्स, कम्पयूटर का काम करने वाले लोग, मैकेनिक, टैक्निशियन, और छोटा-मोटा काम करने वाले कई लोग बेकार हो गए." अविनाश ने कहा.

छोटा उदयपुर का रास्ता बेहद बीहड़ था. संकरी-सी सड़कें. सड़क के दोनों तरफ पेड़ उन पेड़ों के बीच-बीच में आदिवासियों के घर. दूर-दूर तक फैले आदिवासी.

हाइवे के एक माइल स्टोन पर लिखा था : छोटा उदयपुर बीस किलोमीटर.

माइल स्टोन को देखकर अविनाश ने विपुल से कहा, "पता है तुम्हें कि छोटा उदयपुर में हथियार बनते हैं."

"अच्छा...." विपुल ने हैरानी व्यक्त की.

"कौन बनाते हैं हथियार?"

"यहां के लोग."

"क्या करते हैं उन हथियारों का?" विपुल ने पूछा.

पोथीवाला कार की पीछे की सीट पर चुपचाप बैठे हुए थे.

"यहां से हथियार पूरे गुजरात में सप्लाई होते हैं." अविनाश ने बताया.

"अच्छा..." विपुल ने हैरानी व्यक्त की.

कुछ ही देर बाद उनकी गाड़ी छोटा उदयपुर में प्रवेश कर गई थी.

तपता हुआ रेगिस्तान था वहां. छोटा उदयपुर का पचास डिग्री तापमान आग पैदा कर रहा था. सहमी सड़कें और दहशतजदा गर्म हवा थी. ऐसी ही गर्मी में पेड़ों के झुरमुटों के बीच छोटा-सा स्कूल था– आदर्श पाठशाला. स्कूल क्या आंठ-दस टैंट थे जिनमें कुछ बच्चे थे.

स्कूल के बाहर टैंट पर गेरू से कुछ इबारतें लिखी हुई थीं :

'मियां भाई यदि वापस इस गांव आए तो तुम्हारी बीबी और बेटी की खैर नहीं.'

'मियां भाई वापस आए तो तुम्हें कीमत चुकानी पड़ेगी.'

'जो था तुम्हारा सब खत्म हो गया.'

'वापस चले जाओ वरना तुम्हारी खैर नहीं.'

स्कूल के एक टैंट के बाहर बड़ी सी देग पर कुछ पक रहा था. शायद स्कूल के बच्चों के लिए भात हो.

अविनाश ने उस स्कूल के सामने अपनी कार रोक दी. इस स्कूल से ही गड़बड़ी की शुरुआत हुई थी. एक मुस्लिम लड़के ने एक हिंदू लड़के को मारा था जिसके कारण शहर में तनाव हो गया था. सारी दुकानें बंद हो गई थीं. पूरे शहर में मुस्लिम लड़के द्वारा एक हिंदु लड़के को पीटने की खबर थी.

पोथीवाला को देखकर स्कूल का मास्टर एक टैंट से बाहर आ गया. माजिद अली नाम था उसका. दुबला-पतला चेहरा. भूरी-भूरी आंखें. काले बाल. उन बालों से सफेदी चमक रही थी. करीब चालीस साल उम्र रही होगी उसकी.

दुआ सलाम के बाद वे लोग एक टैंट में जाकर नीचे बिछी दरी पर बैठ गए. वह शायद कोई क्लॉस रूम था जिसमें आज बच्चे नहीं आए थे.

"कैसे हुआ यह सब?" पोथीवाला ने उस मास्टर से पूछा.

"एक लड़के ने खेल-खेल में सरपंच के लड़के को कुछ कह दिया था. बस

उसी से पूरे शहर में बवाल मच गया था.'' उस मास्टर ने बताया.

''क्या कहा था उसने?'' विपुल ने पूछा.

''लड़कों का क्या है. एक मिनट में झगड़ा और दूसरे मिनट में दोस्ती. मैं उस लड़के को बुला देता हूं. आप खुद ही पूछ लीजिए.'' मास्टर ने कहा और उठकर टैंट के बाहर चला गया.

उन लोगों ने गौर से देखा स्कूल का यह टैंट जगह-जगह फटा हुआ था. नीचे गर्म जमीन थी. उस जमीन पर बैठने के लिए टाट के टुकड़े थे जो जर्जर हो चुके थे. कोई ब्लैकबोर्ड नहीं था. स्कूल में मुश्किल से पंद्रह बीस बच्चे रहे होंगे. सुबह के दस बजे थे. दस बजे की धूप प्रखर थी. सूरज अपने पूरे ताप में था.

''क्या हुआ था तुम्हारे स्कूल में?'' पोथीवाला ने पूछा.

''स्कूल में सरपंच के लड़के ने सत्तार की किताब फाड़ दी और सत्तार ने उसे उठाकर पटक दिया. बस इतनी सी ही बात पर दोनों तरफ के लोगों ने तलवारें खींच लीं.'' स्कूल मास्टर ने बताया.

''कुछ और भी रहा होगा.''विपुल ने पूछा.

''कुछ ही दिन पहले इस गांव में कई लोगों के घरों पर सामूहिक हमला हुआ था. ज्यादातर लोग ये गांव छोड़कर जा चुके थे. कैंपों से जब वे लोग वापस आने लगे तो उनके सामने शर्तें रख दी थीं.''

''कैसी शर्तें.... '' अविनाश ने पूछा.

''यही कि वे हमारे खिलाफ़ सारी शिकायतें वापस ले लें. अपने स्कूल हमको दे दें. अपना सारा शराब का कारोबार हमारे हाथों दे दें, हम उन्हें चलाएंगे. उनका यह भी कहना है कि हम लोग इस गांव में वोहराओं को तो आने देंगे लेकिन पठानों और मकरानियों को नहीं.'' उसने बताया.

''क्यों, पठानों और मकरानियों को क्यों नहीं.'' विपुल की जिज्ञासा बढ़ गई थी.

''क्योंकि मकरानी और पठान गुंडों से मिले होते हैं.'' मास्टर ने विपुल की ओर देखते हुए कहा.

''और वोहरा लोग नहीं मिले होते.'' अविनाश ने पूछा.

''नहीं वोहरा नहीं मिले होते.'' उसने बताया कि ''वोहरा लोग धंधा करते हैं और इनके धंधे से हमें कोई वांदा नहीं है.'' ?

उसने यह भी बताया कि ''छोटा उदयपुर के आदिवासियों ने वोहराओं से पैसे भी उधार लिए हुए हैं. इसलिए यहां के लोग वोहराओं से थोड़ा दबकर रहते हैं.''

कुछ देर बाद उस स्कूल मास्टर ने विपुल से पूछा. "आप लोग बड़ौदा से आए हैं."

विपुल को हैरानी हुई कि माजिद अली यह सवाल क्यों पूछ रहे हैं.

"हां, बड़ौदा से आए हैं. क्यों. आप यह क्यों पूछ रहे हैं. पोथीवाला जी तो बड़ौदा ही रहते हैं." विपुल ने बताया.

"यूं ही पूछा. आपको पता होगा कि बड़ौदा के पास का एक गांव है रूस्तमपुरा."

"रूस्तमपुरा...." अविनाश ने हैरानी से कहा.

"हां, रूस्तमपुरा.... उस गांव में कुछ नहीं हुआ. न कोई हिंसा, न आगजनी, न लूटपाट और न ही कोई अन्य वारदात." कहते-कहते मास्टर माजिद अली के चेहरे पर मुस्कान-सी आ गई थी.

"क्यों.... न होने की कुछ खास वजह." विपुल की जिज्ञासा बढ़ गई.

"हां, वजह है." उसने दृढ़ता से कहा.

"क्या वजह है?"

"उस गांव में सब लोग मिलजुल कर रहते हैं और पूरे गांव में घूमते हैं. बाहर से किसी भी व्यक्ति को गांव में नहीं आने देते." माजिद अली ने बताया.

"तभी वे शांति से रह सके." अविनाश ने कहा.

"रह ही नहीं सके बल्कि गांव में कोई दंगा-फसाद भी नहीं होने दिया." माजिद अली ने जोर देकर कहा.

"पर यहां इतनी दूर आदिवासियों के बीच में बाहर के लोग कैसे आ गए." विपुल ने पूछा.

"बस किसी तरह घुस गए. यहां का सरपंच शराब के धंधे को अपने हाथ में करना चाहता था और ये काम वही करवा सकते थे." माजिद अली ने बताया.

"पर लूटने वाले तो पास के गांव के ही थे" अविनाश ने पूछा

" पास के गांव के तो थे पर उन्हें तो शराब पिलाई गई. पैसे दिए गए और उनसे कहा कि मियां लोग हम लोगों को कत्ल करने आ रहे हैं. हमें उनसे अपनी हिफाजत करनी है. हिफाजत के नाम से वे लोग इस गांव में घुस गए." उसने बताया.

"कौन थे जिन्होंने ऐसा कहा." पोथीवाला ने पूछा.

"कोई बाहर के मानस ही थे. पहले कभी वे गांव में दिखे नहीं." माजिद अली ने बताया

"पुलिस को बताया था आप लोगों ने." पोथीवाला ने पूछा.

"हां बताया था. पर उस समय पुलिस नहीं आई."

"तो कब आई."

"बाद में आई."

"बाद में कब."

"जब सब कुछ खत्म हो गया. जब लोगों को यहां से खेदड़ दिया गया. और बाद में जब पुलिस आई तो गांव का सरपंच ही उन्हें गांव का रास्ता दिखा रहा था और उन्हें बता रहा था कि उन्हें क्या करना है."

"शहर में दुकानें किन लोगों की हैं?" अविनाश ने जानना चाहा.

"ज्यादातर दुकानें पटेलों की हैं."

"किस चीज की दुकानें हैं?" विपुल ने पूछा.

"वीडियो गेम और वीडियो शो की हैं. ये पटेल लोग आदिवासियों से अपनी दुकानों पर काम कराते हैं पर मजदूरी के एवज में बीयर या फिर सस्ती शराब देते हैं." माजिद अली ने बताया.

"खुश हैं ये लोग पटेलों से?" विपुल ने पूछा.

"नहीं बिल्कुल खुश नहीं हैं. अपनी गरीबी और बदहाली को लेकर इनमें एक भयानक असंतोष है. और आज दुख तो इस बात का है कि जो असंतोष पटेलों और शाहों के खिलाफ़ होना चाहिए, वह असंतोष मुसलमानों के खिलाफ़ निकल कर बाहर आया." माजिद अली ने बताया.

लौटते समय विपुल ने कहा, "इन सीधे आदिवासियों का पूरा फायदा पटेल उठा रहे हैं."

"ये आदिवासी इतने सीधे नहीं हैं जितने कि दिखाई देते हैं. मालूम है तुमको इस हुल्लड़ के दौरान इन आदिवासियों ने पुलिस की रायफल छीनकर उन्हीं पर गोलियां चलाईं और पुलिसवैन को आग लगा दी थी." अविनाश ने कहा.

"पर इन लोगों को अपनी संस्कृति पर बहुत गर्व है." विपुल ने कहा.

"संस्कृति और उत्सवधर्मिता– यही इन लोगों की खासियत है. हर अवसर पर ये लोग उत्सव मनाने लगते हैं. अपनी संस्कृति और उत्सव के प्रति लगाव के कारण ये लोग विकास का रास्ता नहीं अपना पा रहे हैं. उत्सव मनाने के लिए कर्ज लेंगे और उस पैसे से दारू पीएंगे. इससे आगे ये लोग कुछ सोचना नहीं चाहते. यही इनकी सबसे बड़ी कमजोरी है." अविनाश ने गाड़ी चलाते हुए बताया.

"और हैरानी की बात तो यह है कि आए-दिन इस इलाके में स्थानीय स्तर के धर्मगुरु आते हैं जो न तो इन्हें शिक्षा के बारे में बताते हैं और न ही कर्ज और दारू से बचने के लिए. ये धर्मगुरु भी इन्हें जैसे ये हैं, वैसे ही रखना चाहते हैं. हम

लोग कोशिश कर रहे हैं इन लोगों में चेतना पैदा हो लेकिन हमारी कोशिशें ही काफी नहीं हैं." पोथीवाला ने बताया.

"सदियों से उपेक्षित रहे हैं ये लोग. सरकार ने जो सुविधाएं दीं इन्हें, उसका उपयोग इन लोगों ने नहीं उठाया. उन सुविधाओं का फायदा दूसरे लोग उठा ले गए. पटेल उठा ले गए. उनके सहारे इन लोगों ने अपने समाज को नहीं बदला." विपुल ने कहा.

"बदल सकते थे अपने आप को. लेकिन नहीं बदला." अविनाश ने कहा.

"इनका एक लंबा इतिहास था. सिद्धू, कानू, चोटी मुंडा, बिरसा मुंडा, अल्बर्ट एक्का, इनके इतिहास के गौरवशाली अध्याय हैं. उस गौरवशाली अध्याय से ये लोग कुछ सीख सकते थे. अपने आप को बदल सकते थे." उसने कहा.

"बदलाव को गतिशील करने वाली ताकतें जो समाज में होनी चाहिए. वे तो हैं नहीं, बदलाव कैसे होगा?" पोथीवाला ने कहा.

"बड़ी हैरानी की बात है कैसे यह समाज अपने इस गौरवशाली इतिहास को भूलकर ताड़ी और कर्जखोरी में लिप्त हो गया." अविनाश ने कहा.

पोथीवाला ने अविनाश की बात का कोई जवाब नहीं दिया. अपने स्कूल का यह अंजाम देखकर वे बेहद दुखी थे. दुख इतना था कि उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि स्कूल में अपनी संस्था का काम किस सिरे से शुरू करें और कैसे करें.

17

पोथीवाला को रह-रह कर उमर अंसारी की याद आ रही थी. वे 'विमर्श' के पुराने साथियों में से थे. उनके साथ मिलकर उन्होंने न जाने कितनी बार मुस्लिम लड़कियों की शिक्षा के लिए अभियान चलाए थे. चाहे कहीं धरना देना हो या किसी जुलूस में जाना हो, उमर अंसारी हमेशा उनके साथ रहते थे. वे उनके उन दोस्तों में से थे जिन्होंने हमेशा उनका साथ निभाया. जब-जब उनके घर पर हमला हुआ, उमर अंसारी हर वक्त सबसे पहले मदद के लिए आए. सबसे पहले उन्होंने ही उन्हें किसी महफूज जगह पर पहुंचाया. इस बार जब से ये वारदात हुई थी तब से उनसे कोई संपर्क नहीं हो पाया था. उन्हें पता जरूर चला था कि इस हुल्लड़ में उनकी दुकान पूरी तरह तबाह हो गई है.

शहर का माहौल जब शांत हो गया तो पोथीवाला ने उमर अंसारी से मिलने की इच्छा जाहिर करते हुए साजिद से कहा, "एक अर्से से उमर अंसारी से कोई मुलाकात नहीं हुई है. उनकी दुकान का क्या हाल है. बीमा का पैसा उन्हें मिला कि नहीं."

"बीमा का पैसा तो उन्हें मिल गया. कुछ दिन पहले उनका बेटा अनवर मिला था. बता रहा था कि वे लोग अपनी दुकान वहीं बना रहे हैं." साजिद ने बताया.

"वहां नहीं बनाएंगे तो कहां जाएंगे." पोथीवाला के स्वर में थोड़ा पश्चाताप-सा था.

"पर इस बार दुकान बड़ी बना रहे हैं. एक दुकान में से तीन दुकानें निकाल रहे हैं." साजिद ने उन्हें बताया.

"तीन दुकानें....." पोथीवाला ने हैरानी व्यक्त की.

"हां, तीन दुकानें, एक दुकान गली के दूसरी तरफ निकालेंगे और अपनी दुकान को छोटी करके एक की जगह दो दुकानें बनाएंगे." उन्हें इंश्योरेंस का बहुत पैसा भी मिल गया है. बैंक से कर्ज भी ले लिया है. अब उनकी दुकान न सिर्फ

बड़ी हो जाएगी, बल्कि पहले से बेहतर भी हो जाएगी."

"आज शाम को चलते हैं उनके पास. अविनाश और विपुल को कह देना यदि वे खाली हों तो चलें मेरे साथ." पोथीवाला ने कहा.

उसी दिन शाम को विपुल, अविनाश और पोथीवाला शहर की ओर जा रहे थे. उमर अंसारी की दुकान पर. उनकी दुकान शहर के रावपुरा इलाके में थी. शहर का एकदम तंग इलाका. हालांकि शहर धीरे धीरे नार्मल हो रहा था. सड़कों पर आवाजाही थी. पर लोग कम थे. अभी भी लोग घर से निकलते तो थे पर बहुत सावधानी से. सतर्कता का भाव उनके चेहरे पर रहता था. यह इस शहर में पहली बार हुआ था. इससे पहले जब भी तनाव होता था तो शहर का एक भाग शांत और सुनसान रहता और दूसरे भाग में चहल-पहल रहती. उस इलाके की सड़कों में गाड़ियां दौड़ती रहती थीं और वहां के बाजारों में भीड़ रहती. लोग बेखबर इधर से उधर घूमते लेकिन इस बार ऐसा नहीं हुआ था. इस बार दहशत के बादल पूरे शहर पर छा गए थे. इस बार कई लोगों की जिंदगी में पहली बार कर्फ्यू लगा था.

रास्ते में आराधना सिनेमा को देखकर पोथीवाला ने कहा, "इसके पीछे उस्ताद फैयाज खां साहब की मजार थी. अख़बारों में छपा था कि वह मजार भी तोड़ दी गई. शायद तुम लोगों को पता हो कि हर साल उस मजार पर उनकी याद में संगीतकारों के जलसे हुआ करते हैं."

"आज वह मजार क्षत-विक्षत हो चुकी है." अविनाश ने कहा.

"देखें तो सही कि इन लोगों ने मजारों के साथ कैसा सलूक किया है." पोथीवाला ने बहुत दुख से कहा.

अविनाश ने गाड़ी आराधना सिनेमा के पहले वाली सड़क पर मोड़ दी. मुश्किल से सौ गज की दूरी पर थी वह मजार. एक वीरान और सुनसान सी जगह मैदाननुमा. मैदान से पहले मोटर मैकेनिक की दो-चार दुकानें थीं. चारों तरफ घास थी. उन लोगों को वहां आता देखकर आसपास के दो-चार लोग वहां आ गए थे और इन लोगों के पीछे-पीछे मजार तक चले आए.

आगे थोड़ी दूर जाकर मैदान के एक कोने में छोटा-सा कमरा था. उस कमरे के अंदर उस्ताद फैयाज खां की मजार थी. मजार की छत तोड़ दी गई थी. जले हुए दरवाजे वहीं गिरे हुए थे. मजार को कुदालीनुमा किसी नुकीली चीज से खोद दिया गया था गोया वहां पर खनन कार्य किया गया हो. जगह-जगह ईंटों और पत्थरों के ढेर थे. उन ईंटों और पत्थरों के ढेर पर जले हुए टायर पड़े थे. जगह-जगह से मजार के पुराने पत्थर और सीमेंट बाहर बिखरे हुए थे. उस छोटे-से कमरे

में एक खिड़की और एक छोटा सा दरवाजा था. खिड़की और दरवाज़ा पूरी तरह जल चुके थे. दीवारों पर जगह-जगह धुएं के काले निशान थे. हनुमान की छोटी-सी मिट्टी की मूर्ति रखी थी और उसके नीचे गेरू से लिखा था– हुल्लड़िया हनुमान.

पोथीवाला इस मंजर को देखकर भीतर ही भीतर हिल गए.

"कैसे हुआ यह सब?" अविनाश ने साथ आए एक आदमी से पूछा.

"हमको पता नहीं." उसने बताया.

"आप लोग नहीं थे जब यह हुआ?" विपुल ने जानना चाहा.

"नहीं साहब, हम लोग तो नहीं थे. हम लोग अपनी दुकानें बंद करके चले गए थे." उसके साथ खड़े एक दूसरे आदमी ने बताया.

"किस समय हुआ होगा यह सब?"

"यह तो मालूम नहीं पर इतना मालूम है कि सुबह का वक्त रहा होगा क्योंकि शाम को जब हम लोग वापस अपनी दुकानों पर आए तब यहां धुआं उठ रहा था."

पोथीवाल गुमसुम थे.

वे लोग थोड़ी देर तक रहे उस मजार के आसपास. कोई किसी से नहीं बोल रहा था. सब गुमसुम थे. सबका मन न जाने किन वीरानियों में भटक रहा था. मंजर ऐसा था कि उसे देखकर किसी के मुंह से कुछ नहीं निकल रहा था. सब मौन और सकते में थे.

वहां से चलते हुए बहुत दुखी होकर पोथीवाला ने कहा, "मजारों को तोड़कर हमारी मिलीजुली विरासत को नष्ट कर रहे हैं. हमारी साझी परंपराओं को नष्ट करे रहे हैं. हमारे साझे मूल्यों को नष्ट कर रहे हैं. जिनकी भरपाई होना मुश्किल है."

"हर जगह ये लोग यही कर रहे हैं. पूरे गुजरात में. हर कहीं मजारों और मस्जिदों को तोड़ दिया. और इस तरह पहले कभी नहीं हुआ." अविनाश ने कहा.

"इन्हीं लोगों ने बाबरी मस्जिद तोड़ी. इन्हीं लोगों ने अफगानिस्तान में बुद्ध की प्रतिमाएं तोड़ीं और यही लोग यहां मजारें तोड़ रहे हैं." विपुल ने कहा.

"और मजे की बात तो यह कि मजारों को तोड़कर कह रहे हैं कि हमने अपनी धार्मिक जिम्मेदारियों को निभाया ही है." अविनाश ने गाड़ी स्टार्ट करते हुए कहा.

"तालिबानों ने भी यही तर्क दिया था जब उन्होंने बामियान में बुद्ध प्रतिमाओं को डायनामाइट से उड़ाया था." पोथीवाला ने कहा.

"कोई फर्क नहीं है इनमें और तालिबानों में." विपुल ने कहा.

"हां कोई फर्क नहीं है. उन्होंने वहां बुद्ध की मूर्तियों को तोड़ा. इन्होंने यहां हमारे मजारों मस्जिदों को तोड़ा." पोथीवाला ने कहा.

"तोड़ना ही इनका काम है. ये लोग इमारतों और इबादतखानों को ही नहीं

तोड़ते; इंसानों की जिदगियों को भी तोड़ते हैं." अविनाश ने कहा.

"वे नहीं जानते ऐसा करने से दुनिया का एक महान धर्म बदनाम होता है." पोथीवाला ने बहुत पीड़ा से कहा था और फैयाज खां की मजार में एक उदास-सी निगाह डालकर वापस मुड़ गए थे.

रास्ते में ही आराधना सिनेमा के सामने एस.एस.जी. अस्पताल था. अस्पताल के सामने चार-पांच मजारें थीं. पोथीवाला की नजर जब उन पर पड़ी तो वे दंग रह गए.

उन्होंने अविनाश को वहीं थोड़ी देर के लिए गाड़ी खड़ी करने के लिए कहा.

गाड़ी के रुकते ही वे एक खास जगह पर आकर खड़े हो गए. उनके पीछे-पीछे विपुल और अविनाश भी आ गए. वे गुमसुम उस जगह को देखते रहे. वहां कुछ मजारें थीं. उन्हें देखकर बेहद अचंभा हुआ कि वहां मजारों का नामोनिशान नहीं था और मजारों की जगह सड़क बन चुकी थी. वे थोड़ी देर के लिए उस मुकाम पर आकर खड़े रहे.

"पता है तुम्हें अविनाश, यहां कुछ दरगाहें थीं." उन्होंने अविनाश की ओर देखते हुए कहा.

"हां पता है. एक साथ पांच-सात दरगाहें थीं. पर अब... अब तो यहां सड़क है. और यह सड़क भी देखते ही देखते बन गई."

"यह सड़क रातोंरात बना दी गई. यह देखिए नया-नया कोलतार.... ऐसा लगता है कि यह सड़क अभी कुछ ही दिन पहले बनी है. यह भी उन्होंने हुल्लड़ के दौरान ही किया है."

"किसकी दरगाह थी यहां." विपुल ने जानना चाहा.

"पीर गिब्बन, राशिद बाबा की दरगाह थी. चार सौ साल से यहां थी." पोथीवाला ने बताया.

"इन लोगों ने अहमदाबाद में वली गुजराती की मजार को गिराकर वहां सड़क बना दी."

"वली गुजराती...."

"हां, वली गुजराती. उर्दू के मशहूर कवि और ग़ज़लकार थे." अविनाश ने बताया.

"वली की कब्र को नष्ट करके इन लोगों ने अपने आप को ही नष्ट कर दिया है. वली ने पूरे विश्व में गुजरात का नाम रौशन किया था." पोथीवाला ने बताया.

"कब के कवि थे वली गुजराती." विपुल ने पूछा.

"सत्तरहवीं या अठाहरवीं शती के कवि रहे होंगे." अविनाश ने बताया.

वे लोग कुछ देर उस सड़क पर खड़े रहे और फिर उदास मन से वापस अपनी

कार में आकर बैठ गए.

उनकी कार धीरे-धीरे उमर अंसारी की दुकान की ओर बढ़ने लगी. शहर का भीड़-भाड़ वाला इलाका था लेकिन धीरे-धीरे आवाजाही शुरू हो रही थी. लोग धीरे-धीरे घरों से बाहर निकल रहे थे.

उमर अंसारी दुकान पर ही मिल गए थे. उनकी दुकान फिर से बनकर तैयार हो गई थी. बस थोड़ा-सा काम बाकी था.

पोथीवाला को अपनी दुकान पर देखकर बेहद खुश हुए गोया कोई लुटा हुआ खजाना उन्हें मिल गया हो. दुकान में हो रहे काम को देखकर उनके मन में खुशी कम थी, दुख ज्यादा था. पोथीवाला उमर अंसारी को देखकर खुश हुए थे. दुकान को उन्होंने ऊपर से नीचे तक बड़े गौर से देखा था. दुकान पहले से काफी बेहतर हो गई थी. दुकान पर शीशे के शोकेस बनाए जा रहे थे. एक तरफ बिजली की फिटिंग का काम चल रहा था और दूसरी तरफ मिस्त्री लकड़ियों को तराशने में मशगूल थे. विपुल और अविनाश भी उनके साथ दुकान के अंदर आ गए थे.

उमर अंसारी ने सबको बैठने के लिए स्टूलों का इंतजाम किया और पास में खड़े दुकान के एक लड़के को शर्बत लाने का आदेश देते हुए पोथीवाला से कहा, “क्या हमने अपना पूरा जीवन इसलिए खपा दिया कि हम लोग बार-बार उजड़ें और बार-बार बसें.”

दुकान में पोथीवाला, विपुल, अविनाश को देखकर अनवर भी उनके पास आ गया. उसके चेहरे पर खुशी थी. शायद यह खुशी दुकान नयी होने के कारण थी. पर एक खौफ भी उसके चेहरे पर था. अपने पिता की बात सुनकर उसने भी पोथीवाला से कहा, “मेरा भी यही मानना है हम यहां दुकान बनाएं ही क्यूं. फिर से उजड़ने और फिर से बसने के लिए.”

उनकी बात सुनकर उमर अंसारी कुछ नहीं बोले लेकिन पोथीवाला ने कहा, “नहीं बेटा ऐसा सोचना भी गलत है. हमें यहीं रहना है और हालातों को बदलना है.”

“पर कैसे? कैसे बदलेंगे हालात. पचास सालों से तो बदले नहीं अब क्या बदलेंगे?” अनवर ने थोड़ा गुस्से से कहा.

“लोगों को इन ताकतों के खिलाफ़ लड़ने के लिए तैयार करके. उन्हें शिक्षित करके. उनमें चेतना फैलाकर.” पोथीवाला ने उसे समझाने की कोशिश की.

“आप और अब्बा पिछले पचास सालों से यही कर रहे हैं. क्या परिणाम आया? यही हमारी तबाही.”

उसके स्वर में गुस्सा और आक्रोश था.

उसकी बात सुनकर उन्हें अमीना की बात याद हो आई. उसने भी एक बार

ऐसा ही सवाल किया था कि आपके कामों का क्या नतीजा रहा. क्या समाज में कोई बदलाव आया. क्या मुसलमानों की सोच में कोई बदलाव आया. क्या मुसलमानों की शिक्षा में कोई फर्क पड़ा. तब उन्होंने यही कहा था कि समाज में बदलाव को नापने वाला कोई पैमाना नहीं है. हमारा काम बदलाव की शक्तियों को तेज करना है. समाज में बदलाव बहुत सारे कारणों से आता है.

यही बात वे अनवर से कहना ही चाह रहे थे कि उमर अंसारी ने कहा, "सामने वाले ने अपनी दुकान को साठ लाख में बेच दिया."

"अच्छा....." पोथीवाला ने हैरानी व्यक्त की.

"किसने खरीदी?" अविनाश ने जानना चाहा.

"कोई नगीन पटेल है. जुआघर और शराब का स्टोर बनाना है उसने इस दुकान में." उमर अंसारी ने बताया.

"यह बहुत बुरा हो रहा है. और देखिए सामने पुलिस की चौकी है. पुलिस की नाक के नीचे जुआघर चलेगा. शराब बिकेगी." उन्होंने धीरे-से कहा.

पोथीवाला थोड़ी देर तक वहां रुके. अनवर ने इश्योरेंस के पैसे से आंख टेस्ट कराने की एक नई मशीन खरीदी थी. उस मशीन को लेकर वह उत्साहित था. कह रहा था, "इस मशीन से आंखों की जांच कुछ सैकेंडों में ही की जा सकती है और यह मशीन पूरे गुजरात में दूसरी या तीसरी है."

उसने पोथीवाला की आंखों की भी जांच अपनी इस मशीन से की.

पोथीवाला कुछ समय तक उस दुकान पर रहे. उमर अंसारी और उनके घर परिवार की कुशलक्षेम पूछी और लौट आए वापस अपने घर.

रास्ते में बड़े दुख के साथ उन्होंने कहा, "इन दंगों ने गुजरात को पीछे कर दिया है. गुजरात दूसरे प्रांतों से कई मामलों में पिछड़ जाएगा."

उनकी बात सुनकर कोई कुछ नहीं बोला. न अविनाश न विपुल.

रास्ते में उन लोगों ने देखा कि कई दुकानों में हिंदू नाम के बोर्ड लगे हुए थे. उन दुकानों में लोगों ने गणपति और हनुमान के स्टीकर लगाए हुए थे. कुछ दुकानों के दरवाज़ों पर आम के पेड़ों की पत्तियों की माला लगी हुई थी. कहीं सरस्वती और हिंदू देवताओं के पोस्टर भी लगे हुए थे. सरस्वती और गणेश के चिन्ह दुकानों के शटर के ऊपर सहजता से देखे जा सकते थे. एक दुकान पर लिखा हुआ था कि यह दुकान हिंदू की है. लोगों ने अपनी पहचान को स्पष्ट रूप से बताने के लिए अपनी दुकान और घरों के सामने कलश भी रख दिए थे.

ये दृश्य पहले नहीं दिखाई देते थे. इस घटना के बाद लोगों को अपनी पहचान बताना जरूरी-सा लग रहा था.

पोथीवाला इन दृश्यों को देखकर बहुत आहत हो गए थे. गुमसुम-से घर लौट आए.

घर में कोई नहीं था. न साज़िद और न ही अफरोज. वे चुपचाप अपनी बड़ी-सी कुर्सी पर अधलेटे-से पसर गए थे. फैयाज खां की मजार को देखकर और उमर अंसारी व उनके बेटे अनवर से जो कुछ सुना, उससे वे बहुत खिन्न और उदास हो गए थे. कोई सोच नहीं सकता था कि हमेशा मुसलमानों का भला चाहने वाले, मुसलमानों की भलाई को अपना मिशन बनाने वाले, हमेशा स्थितियों से टकराने वाले, अपने अंदर हमेशा खून की गर्मी महसूस करने वाले आज अपने आप को पराजित, हताश और असहाय भी महसूस कर सकते हैं. उनके मन में एक ही सवाल उठता था कि आखिर ऐसा कब तक चलेगा. आखिर कब तक उमर अंसारी जैसे दोस्तों को अपनी दुकान बार-बार बनवानी पड़ेगी, इतने अर्से बाद क्यों नहीं हालात मुसलमानों के लिए अनुकूल हो सके. उन्हें अपने ही सपने परास्त होते नजर आ रहे थे. उनकी सारी आशाओं पर पानी फिर गया था. क्या वे अमेरिका से वापस अपने देश में इसलिए आए थे कि बार-बार उजड़ें, बार-बार उन्हें अपमानित और प्रताड़ित किया जाए. ढेर सारे सवाल उनके जेहन में उमड़ रहे थे. एक विरक्ति-सी महसूस कर रहे थे. भीतर तक आहत हो चुके थे. उन्होंने अपने मूल्यों और विश्वासों की रक्षा अपना जीवन और अमीना के प्यार और अपने पिता की महत्त्वाकांक्षाओं की आहूति देकर की थी. इस समय वे सारे विश्वास और मूल्य खंडित हो चुके थे. वे आरामकुर्सी पर पसरे दीवार पर लगी खिड़की से सामने के आकाश को देखने लगे. नजरें उनकी खिड़की के बाहर थीं पर मन कहीं और भटक रहा था. शायद विमर्श के अपने साथियों के पास. अपने बेटे के पास. या अपनी पत्नी अमीना के पास. शायद अपनी बेटी अफरोज के पास या शायद अपने अब्बा के पास या शायद अपनी अम्मी के पास.

उनकी आंखों से आंसुओं की अविरल धारा बह रही थी.

18

लेकिन पोथीवाला निराश नहीं थे. अगले कुछ ही दिनों में अपनी संस्था विमर्श में फिर से सक्रिय हो गए थे. कैंपों में जाकर अपने साथियों के साथ उन्हें राहत पहुंचाने का काम शुरू कर दिया था. सुबह वे घर से निकल जाते और दिन भर उन्हें अपनी ओर से एकत्रित की हुई दवाइयां बांटते. उन्हें खाने-पीने का सामान पहुंचाते. उनके लिए कपड़े इकट्ठे करते. जहां मुस्लिम इलाकों की ज्यादा तबाही हुई वहां उनके साथी जाते और विमर्श के बैनर के तले उनका घर बनवाने में उनकी मदद करते. वे ये काम अकेले नहीं करते. सरकार और दंगों की जांच करने आए तमाम दलों, आयोगों की भरपूर मदद करते. रोज हिंदुवादी शक्तियों के खिलाफ़ अखबारों में पत्र और लेख लिखते. अपने बैनर के तले सेमिनारों को आयोजन करते और लोगों को इस देश में बढ़ते फ़ासीवाद के खिलाफ़ सचेत करने की कोशिश करते. वे नयी तैयारी से फ़ासीवाद के खिलाफ़ एक मुहिम चलाने में लग गए थे लेकिन यह काम आसान नहीं था.

एक दिन विपुल ने उनसे पूछा, "अब क्या योजना है आपकी?"

उसके सवाल से मुस्कुरा दिए. फिर कुछ रुककर कहने लगे, "अब उन शक्तियों के खिलाफ़ एक समानांतर मुहिम चलानी है."

"कहां से शुरू करेंगे यह मुहिम?"

" जहां हम पचपन साल पहले थे, वहां से हमें अपनी तैयारी शुरू करनी है. इन लोगों ने जनता को अपने साथ जोड़ा था. हर गांव से मंदिर के लिए ईंट मंगवाकर. उन्होंने जनता को अपने आंदोलन का एक हिस्सा बनाया था. हम लोगों को वैसा ही कुछ करना होगा."

"वैसा क्या....." विपुल ने एक बड़ा-सा सवाल उनके सामने रख दिया.

"कुछ ठोस करने की जरूरत है जिससे एक आम आदमी को अपने साथ जोड़ा जा सके. अभी तक हम लोग तो केवल भाषण और सेमिनार ही करते रहे,

किया कुछ नहीं." विपुल के बड़े-से सवाल का जवाब उन्होंने दिया.

"उनका भी एक महत्त्व है. लेकिन वह महत्त्व सीमित है. पढ़े-लिखे तबके में इन सेमिनारों के माध्यम से एक चेतना जरूर जगाई जा सकती है लेकिन आम जनता को अपने साथ नहीं लिया जा सकता. जरूरत व्यापक लोगों तक पहुंचने की है और इसके लिए हमें अपने कार्य करने के तरीकों को बदलना होगा." पोथीवाला ने आशा और विश्वास से कहा.

"कैसे होगा यह सब?" विपुल ने जानना चाहा.

"सबसे पहले तो इन फ़ासीवादी ताकतों के खिलाफ़ लोगों को बताना होगा. हमें अपनी लड़ाई के केंद्र बदलने होंगे." उन्होंने पूरे विश्वास से कहा.

"पर कैसे?" विपुल ने अपने सवाल को लगभग दोहरा-सा दिया था.

"लोगों को अपने साथ लेकर यह किया जा सकेगा. उन्होंने विपुल के सवाल का संक्षिप्त-सा उत्तर दिया.

"पर लोग हमारे साथ कैसे आएंगे. आजकल तो लोग हम लोगों के साथ आने से भी कतराते हैं. पूरा का पूरा जत्था उन्हीं लोगों के साथ है." विपुल ने कहा.

"पर हमें लोगों के बीच फिर से जाना होगा. उन्हें धर्म का पाठ पढ़ाने नहीं, उन्हें हिंदू-मुसलमान के आपसी रिश्ते समझाने के लिए नहीं, उन्हें देश की राजनीति का चरित्र समझाने नहीं बल्कि उनसे आत्मीय रिश्ता कायम करने के लिए. उनकी समस्याओं को जानने के लिए. लोकल लेवल पर उनके सामने आ रही कठिनाइयों को देखने के लिए और उनका हल निकालने के लिए. हमें महिलाओं के स्वास्थ्य पर ध्यान देना होगा. उनके बच्चों की शिक्षा पर ध्यान देना होगा. वहां पीने के पानी की समस्याओं पर ध्यान देना होगा. उन्हें अपने साथ जोड़ना होगा. हमें गांधी के सिद्धांतों को फिर से अपनाना होगा. सादगी, सरलता, सच्चाई और ईमानदारी का पाठ फिर से पढ़ाना होगा."

उन्होंने अपनी भावी योजनाओं का खाका-सा उन लोगों के सामने रखा.

"पर क्या लगता है आपको इससे लोग हमारे साथ आएंगे." विपुल ने पूछा.

"हां आएंगे. हमें लोगों को समझाना होगा. उनके साथ बातचीत करनी होगी. उनकी अपनी समस्याओं पर. उनके अपने दुख-दर्दों को जानना होगा. उनके दुखों को बांटना होगा. जरूरी नहीं है कि हम हर बार उनसे राजनैतिक मुद्दों पर ही बातचीत करें. जरूरी नहीं है कि हम हर बार उनसे सांप्रदायिकता पर ही बात करें. हम उनसे उनकी ही बात करें. वही बात करें जिससे उनका भला हो सकता हो. उन्हें अपनी जीवन की विसंगतियों को कम करने के रास्ते सुझाएं. एक बात हमें समझ लेनी चाहिए कि इस देश का आम आदमी फिरकापरस्त नहीं है. वे हिंदू हैं लेकिन फिरकापरस्त नहीं हैं; इस चीज को हमें समझना चाहिए. हमने हिंदू और

फिरकापरस्त को एक साथ जोड़ दिया और आम आदमी को अपने से दूर कर दिया. हमने लोगों के आस्था वाले ग्रंथ महाभारत, रामायण, गीता, कुरान सब उनके हवाले कर दिए और हम इन्हें खारिज करने लगे. सबसे पहले तो हमें इन ग्रंथों के बारे में अपना स्टैंड बदलना होगा. हमें कुरान, गीता, रामायण, महाभारत को अपने हाथ में लेना होगा और बताना होगा कि एक आम हिंदू फिरकापरस्त नहीं है. एक आम मुसलमान फिरकापरस्त नहीं है. वह धार्मिक है लेकिन फिरकापरस्त नहीं है. हम लोग धार्मिकता और फिरकापरस्त में फर्क नहीं कर सके और वहीं हम चूक गए थे और हमारी इसी चूक ने हमें अपने लोगों से दूर कर दिया."

वे पूरे उत्साह से अपने भविष्य की योजना बता रहे थे.

"तो क्या लोगों को उनकी समस्याएं समझाने से लड़ाई लड़ी जा सकती है?" विपुल ने फिर पूछा.

"नहीं, यह काफी नहीं होगा. इसके लिए तो व्यापक स्तर पर मोर्चा बनाने की जरूरत है. हमारा मकसद यह होना चाहिए कि एक ही प्रकार से सोचने वाले सारे लोग एक साथ आएं. वे एकजुट हों. एक बड़ी ताकत का उदय हो क्योंकि बड़े राक्षस को मारने के लिए ताकत भी बड़ी ही चाहिए और छोटे-छोटे लोग ही मिलकर बड़ी ताकत बनेंगे. हमें मिलजुल कर एक बड़ी ताकत बनानी होगी और उस ताकत में वैचारिक आधार पैदा करना होगा जो सही समझ पैदा करे. उनकी सोच को मजबूत करे."

"क्या सांप्रदायिकता के खिलाफ़ इस प्रकार लड़ाई लड़ी जा सकती है?" विपुल ने पूछा.

"हां लड़ी जा सकती है. दरअसल हम लोग सांप्रदायिकता को समझने में भूल कर बैठे." उन्होंने जोर देकर कहा.

"पर सर, ऐसे में भी सफलता की कोई गारंटी नहीं है. हमारे सामने वाली ताकत बहुत मजबूत और व्यापक है. केवल जनता के बीच जाकर हम लोग उसका मुकाबला कैसे करेंगे. और नाकामयाब होने पर हमारे मन में निराशाएं जन्म लेंगी. उससे हमारे मिशन को ठेस पहुंच सकती है." विपुल ने अपनी आशंका जाहिर की.

"हो सकता है कि हमारा मिशन नाकामयाब हो लेकिन हमें हर हालत में अपने भीतर की निराशाओं से बचना होगा. अपने मन में आशा के दीपों को जलाए रखना होगा. अपने आप को टूटने से बचाना होगा. तभी हम लोग अपने मकसद में कामयाब हो पाएंगे. आज नहीं तो न सही पर कभी न कभी कामयाबी हमको जरूर मिलेगी."

उन्होंने विपुल के मन में छा रही निराशा को दूर करने की कोशिश की.

"लेकिन सर यह इतना आसान नहीं है. चारों तरफ जब निराशा का माहौल हो तो उस निराशा से कैसे अपने आप को दूर रखा जा सकता है. जबकि अभी तक के अनुभव अच्छे नहीं हुए." विपुल ने अपनी आशंका फिर उनके सामने रखी.

"तुम्हारी बात सच है लेकिन फिर भी हमें सायास प्रयास करने होंगे निराशाओं से बचने के लिए. हालांकि यह इतना आसान तो नहीं है जितना लगता है. बहुत कठिन है. इसके लिए लगातार अपने में हिम्मत जुटाए रखनी होगी. अपने आप को लगातार किसी न किसी काम से जोड़ना होगा और यह मानना होगा कि हमारा काम बदलाव के लिए एक महत्त्वपूर्ण कदम है. हमारा यह मानना ही हमें निराशाओं और हताशाओं से दूर रखेगा."

"इस पूरे प्रकरण में गुजरात की प्रतिष्ठा बहुत आहत हुई है." विपुल ने कहा.

"हां, पर हमें उस प्रतिष्ठा को फिर से प्राप्त करना होगा. तुम्हें याद होगा जब आज से चालीस साल पहले अमेरिका के नागरिक अधिकारों के नेता मार्टिन लूथर किंग हिंदुस्तान आए थे तो उन्होंने कहा था कि मैं भारत की यात्रा एक टूरिस्ट की हैसियत से कर रहा हूं. लेकिन मैं गुजरात की यात्रा एक तीर्थयात्री की तरह करूंगा. हमें गुजरात की इस प्रतिष्ठा को फिर से प्राप्त करना है."

"क्या लगता है आपको इतने सालों बाद मुस्लिम समाज परिवार नियोजन की तरफ बढ़ा है." विपुल ने पूछा.

"हां, मुस्लिम समाज परिवार नियोजन की ओर बढ़ा है. मुस्लिम समाज जाग्रत हुआ है. सच्चाई तो यह है कि मुस्लिम मध्यवर्गीय परिवारों ने पहले से ही दो बच्चों के परिवार की धारणा को स्वीकार कर लिया है."

"यह अच्छी बात है. मुझे लगता है कि मुस्लिम समुदाय की प्रगति की ओर पहला कदम है." विपुल ने कहा.

"तुम्हें शायद मालूम होगा कि शमा में हमारे पड़ोस में नसीम रहती थी. मुझे एक दिन अमीना ने बताया था कि उसने आपरेशन करवा लिया लेकिन इस बारे में किसी को नहीं बताया. नसीम दो से ज्यादा बच्चे नहीं चाहती थी. हालांकि वह छोटा परिवार सुखी परिवार के नारे में विश्वास करती है लेकिन इसका प्रचार करने से डरती है. नसीम हर ऐसे सवाल से तौबा कर लेती है जिसमें जरा भी धर्म की खिलाफ़ियत की बू आती हो. जबकि वह एक मल्टीनेशनल कंपनी में काम करती है और अच्छी-खासी तनख्वाह पाती है. बेहतर भविष्य के अपने सपनों को पूरा करने की जी-तोड़ कोशिश करती है. नसीम जैसी कई महिलाएं हैं जो अपने पैरों पर खड़ी हैं और जड़ एवं घातक मान्यताओं और मूल्यों को जिन्होंने नहीं अपनाया है लेकिन धर्म के खिलाफ़ ये औरतें नहीं जा सकती हैं और अपनी खिलाफियत का प्रचार भी नहीं करती हैं. अपने धर्म के खिलाफ़ अपने विरोध को

जगजाहिर करने की हिम्मत इन महिलाओं में नहीं है. और यदि ये अपनी खिलाफ़ियत का प्रचार करेंगी तो मुस्लिम समाज में इन्हें समर्थन हासिल नहीं होगा और शायद यही कारण है कि मुस्लिम समाज में परिवर्तन बहुत धीरे-धीरे आ रहे हैं. मुस्लिम समाज में यदि कोई बदलाव आ भी रहा है तो उन औरतों के कारण जो पढ़ी-लिखी हैं और आर्थिक रूप से स्वतंत्र हैं. और अपनी इस स्वतंत्रता के कारण वे अपने और अपने बच्चों के भविष्य के बारे में फैसले ले सकती हैं." उन्होंने गर्व से कहा.

"कितने प्रतिशत नसीम जैसी महिलाएं होंगी?" अविनाश ने पूछा.

"इस बारे में कुछ यकीनी तौर पर तो नहीं कहा जा सकता. पर ऐसी महिलाओं की संख्या बहुत कम है. वे समाज को समग्रता की दिशा नहीं दे पा रही हैं. ऐसे में पुरुषों का, मौलानाओं का, उलेमाओं का रोल अहम हो जाता है. जो मौलाना अपनी जिंदगी में परिवार नियोजन का रास्ता अपनाते हैं वे जुम्मे की नमाज में तकरीर नहीं कर पाते. यही ड्राबैक है इस समाज का, जो उन्हें आबादी के नियंत्रण के कार्यक्रमों से सीधा नहीं जुड़ने देता और जहां भी औरतों को आर्थिक आजादी हासिल है वे बर्थ कंट्रोल के रास्ते अपना रही हैं और महिलाओं के कारण ही इस समाज में बदलाव आ रहा है. सारी समस्याओं का सामना तो उन्हें ही करना पड़ता है. आज भी ज्यादातर मुस्लिम परिवारों में बच्चे पैदा करने का फैसला परिवार के मर्द ही करते हैं."

"इस मामले में अभी मुस्लिम समाज को बदलने में काफी वक्त लगेगा." विपुल ने कहा.

"हां वक्त तो लगेगा. आज भी पढ़े-लिखे मुस्लिम परिवार हैं जो बच्चों को खुदा की देन समझते हैं. खुदा की देन पर वे कोई पाबंदी नहीं लगाना चाहते. वे मानते हैं कि खुदा ही बच्चों की देखभाल भी करेगा. वे कुरान शरीफ की आयतों को याद करते हैं कि हमने ही उनको पैदा किया है और उनका इंतजाम भी हम खुद करने वाले हैं और कि मुफलिसी के डर से औलाद को खत्म मत करो." उन्होंने निराशा से कहा.

"तो क्या परिवार का ताल्लुक कुरान शरीफ से है." विपुल ने पूछा.

"नहीं, परिवार का ताल्लुक किसी कुरान शरीफ या धर्म से नहीं है. इसका सीधा ताल्लुक आर्थिक पिछड़ेपन से है. आर्थिक रूप से पिछड़े सभी वर्गों में बच्चे अधिक होते हैं. चाहे वे हिंदु हों या मुसलमान हों. इस सवाल को पूरे मुस्लिम समाज से जोड़ना इस समुदाय का अपमान करने जैसा है. आज से बीस साल पहले भी यही नारा दिया गया था कि बीस साल बाद मुसलमान दुगने हो जाएंगे. हुए दुगने? आज भी वह 15 प्रतिशत हैं जितने पहले थे. सबसे बड़ी विडम्बना यह

कि मुसलमानों के इर्द-गिर्द एक भय का वातावरण बनाया गया है. यह बात उनके दिमागों में बिठाने की कोशिश की गई है कि अगर आप संख्या में मजबूत रहेंगे तभी सर्वाइव कर पाएंगे. दूसरे समुदायों के मामले में मुसलमानों में जहालत और मुफलिसी बहुत ज्यादा है. शिक्षा के मामले में मुसलमान सर्वाधिक पिछड़े वर्ग के हैं. पर आज की नई पीढ़ी की सोच में बदलाव आया है. वे ज्यादा बच्चे पैदा करने के पक्ष में नहीं हैं.'' कहते-कहते उनकी आंखों में एक चमक-सी आ गई थी.

''यह तो अच्छे लक्षण हैं.''

''हां अच्छे तो हैं और दूसरी बात यह हुई कि मुसलमान व्यवसाय में भी आगे आ रहे हैं. उन्हें लगने लगा है कि व्यवसाय से ही उनकी प्रगति हो सकती है. आज शहर में देखो मुसलमानों के कई बड़े-बड़े शोरूम है. यह स्थिति आज से बीस साल पहले नहीं थी. और साथ ही मुस्लिम समाज ने छोटे परिवार की महत्ता को भी समझा है.'' उन्होंने बताया.

''आज मुसलमानों की नौजवान पीढ़ी पाकिस्तान के बारे में क्या सोचती है. क्या आपको लगता है उनके लिए पाकिस्तान एक आकर्षण है.'' विपुल ने जानना चाहा.

''नहीं पाकिस्तान उनके लिए कत्तई आकर्षण नहीं है. पाकिस्तान में गन है, पाकिस्तान में ड्रग्स हैं. पाकिस्तान में मस्जिदें हैं. वहां गन संस्कृति बहुत है. वहां आपसी लड़ाइयां हैं. शिया-सुन्नी के झगड़े हैं, चोरियां हैं, डाके हैं, हिंसक अपराध हैं, उकता देने वाली एकरसता है, कत्लों की वारदातें हैं. लोग वहां नहीं जाना चाहते. वे यहीं रहना चाहते हैं. उल्टे जब पाकिस्तान से किसी के रिश्तेदार यहां आते हैं तो वे लोग यहां का माहौल देखकर बहुत खुश होते हैं. उन्हें लगता है कि जितनी आजादी और सुविधाएं यहां के मुसलमानों को नसीब हैं, वहां नहीं हैं. जितनी खुशहाली यहां के मुसलमानों में है, उतनी वहां नहीं है. हिंदुस्तान का मुस्लिम समाज पाकिस्तान से दूर रहना चाहता है.'' उन्होंने खुश होकर कहा.

पाव

''आप के ऊपर पहले भी दो बार हमला हो चुका है. तीसरी बार तो आपका घर ही तबाह हो गया: आगे भी ऐसा हो सकता है.'' विपुल ने आशंका जाहिर की.

''हां, ऐसा ही होगा. और मुझे पूरी उम्मीद है कि ऐसा ही होगा. मुझे मारना उनके लिए बहुत आसान है. मैं उनकी नजरों में आ चुका हूं. जिस दिन वे चाहेंगे मुझे मार देंगे. तुमने मेरे इस घर की लोकेशन देखी है न. एकदम सुनसान जगह पर है यह घर. सामने एकदम नाला है. पेड़ों का झुरमुट है. यूनिवर्सिटी के क्वार्टर्स के गेट से यहां तक आने में सौ मीटर तक का रास्ता है. वह रास्ता एकदम सुनसान रहता है. यूनिवर्सिटी के क्वार्टर्स आधे खाली पड़े हैं. एकदम सुनसान जगह है यह. शोर मचाओ तो अपनी ही आवाज टकराकर वापस आ जाती है.

मुश्किल से दो पड़ोसी हैं, वे भी यहां नहीं रहते. शामा में तो पड़ोसी शोर सुनकर आ गए थे, पर यहां ऐसा कुछ नहीं है. वे जब चाहेंगे मुझे मार देंगे. पर मेरा काम नहीं रुकेगा."

"डर नहीं लगता आपको." विपुल ने पूछा.

विपुल की बात सुनकर वे मुस्कुरा दिए.

"डर, अब कैसा डर. सब कुछ मेरा खत्म हो गया. मेरे परिवार वालों में से कोई बचा नहीं है. अफरोज को वीसा मिल गया है वह जल्दी ही अमेरिका चली जाएगी. अमीना रही नहीं. दुख तो इतना कि मैं उसे बचा नहीं सकता. मेरे लिए उसने बहुत सहा था. साजिद भी जल्दी ही अपने भाई के पास अमेरिका चला जाएगा. वह भी कोशिश में है. एक बेटा मेरा पहले से ही बाहर है. समाज वालों ने मुझे पहले से ही नातबार किया हुआ है. घर था, वह खत्म हो गया. तो अब रहा क्या सिवाय मेरे मिशन के. मुझे मरने से कोई डर नहीं."

कहते-कहते उनकी आंखों में चमक सी आ गई.

"आप तीस साल पहले अमेरिका छोड़कर आए थे. यहां आने पर आपको बेइंतहा परेशानियों का सामना करना पड़ा. तीन बार आपके घर पर हमला हुआ. आप अपनी पत्नी को नहीं बचा सके. अमेरिका में होते तो उनका बेहतर इलाज हो सकता था. एक बेटा आपका पहले से ही अमेरिका में है. अफरोज और साजिद भी इस देश में नहीं रहना चाहते. अफरोज तो चली ही जाएगी और शायद साजिद भी चला जाए. क्या इस मुकाम पर पहुंचकर आज आपको लगता है कि आपने अमेरिका छोड़कर गलत किया?" विपुल ने पूछा.

विपुल का यह सवाल और इस सवाल की भूमिका को सुनकर वे मुस्कुरा दिए. कुछ कहने से पहले एक लंबी सांस ली और फिर बोले, "नहीं ऐसा नहीं लगता. अमेरिका छोड़ने का मेरा फैसला आज भी ठीक लगता है. आज सोचता हूं कि उस समय अमेरिका छोड़ते समय मेरा ग्रीन कार्ड फाड़ देने का फैसला एकदम ठीक था. यदि ग्रीन कार्ड मेरे पास होता तो मेरे मन में एक लालच हमेशा बना रहता. वह मेरे जीवन का एक बड़ा फैसला था. आर्मी में जिस तरह कठिन परिस्थितियों में सेना आगे चलती है तो पीछे से जनरल उस पुल को ही तोड़ देता है जिससे गुजरकर सेना आगे बढ़ी, ताकि कोई वापस ही न आ सके. मैंने उस समय अपने देश के लिए कुछ करने के लिए अपना ग्रीन कार्ड नष्ट कर दिया था. मेरे पास आज भी मल्टीपल वीज़ा है लेकिन मैं यह शहर और यह जगह छोड़कर जाना नहीं चाहता." कहकर वे चुप हो गए.

उनकी आंखों में एक चमक थी.

"मेरे लिए प्रमुख सवाल यह है कि मुस्लिम समाज में परिवर्तन कैसे आए. वे

लोग अपनी बदहाली से बाहर कैसे निकलें. मेरे लिए यह सबसे बड़ा चैलेंज है.''

''किस तरह करेंगे इस चैलेंज का सामना.'' विपुल ने पूछा.

''मुस्लिम समाज को अपनी बदहाली से बाहर निकलना होगा. उन्हें शिक्षा को अपनाना होगा. छोटे परिवार को अपनाना होगा.''

''आप यह सब कैसे करेंगे?''

''इस काम में मैं अकेला ही नहीं हूं. मेरे साथ बहुत सारे लोग हैं. हमारी संस्था विमर्श के बहुत सारे के लोग हैं.''

''अब इस मुकाम पर पहुंचकर आपको कैसा लगता है?'' विपुल ने पूछा.

''अच्छा लगता है. लेकिन फिर भी अभी बहुत कुछ करना बाकी है.''

उनकी बातों में एक जज्बा था. उन्होंने विपुल और अविनाश को हाबर्ट फास्ट की एक कविता की कुछ पंक्तियां सुनाईं :

आई शैल बी टैलिंग दिस विद ए साइ
समवेयर एजेस एंड एजेस एगो
टू रोडस डायवर्ज इन ए वुड
एंड आई टुक द वन लैस ट्रवैल्ड
एंड दैट हैज मेड आल द डिफरैंस

''और आज भी मुझे जो ठीक लगेगा मैं वही करूंगा चाहे उसके परिणाम कुछ भी क्यों न हों. मैं अपना शेष जीवन अपने हिसाब से जीऊंगा चाहे जैसी स्थितियां आएं.''

कहते-कहते उनकी आंखों में चमक आ गई थी.

बातें बहुत हो गई थीं. उन लोगों ने चलने की इजाजत मांगी तो उन्होंने कहा, ''अब जाओ बहुत देर हो गई है.''

''मैं कल जा रहा हूं वापस दिल्ली.'' विपुल ने उनसे विदा लेते हुए कहा.

''कल ही...''

''हां, कल ही. शाम की गाड़ी से.'' विपुल ने कहा.

कहकर वे कुर्सी से उठ गए. विपुल से पूरी गर्मजोशी से हाथ मिलाया और कहा, ''अच्छा किया तुम आ गए. तुमसे मुलाकात हो गई. आते रहना.''

विपुल ने हाथ जोड़कर नमस्कार किया और अविनाश के साथ बाहर आ गया.

बाहर आकर देखा कि पोथीवाला विपुल को विदा करने के लिए अपने फ्लैट की बालकनी में आकर खड़े हो गए थे.

19

उस दिन रेलवे स्टेशन पर काफी चहल-पहल थी. हमेशा की तरह गहमागहमी थी. कुछ दिन पहले हुआ हादसा लोगों की चेतना से दूर हो गया था. लोग अपने रोज़ के कामों में मशगूल हो गए थे. जब विपुल कुछ दिन पहले इसी स्टेशन पर उतरा था तो वीरानगी के साथ-साथ पुलिस का आतंक भी इस स्टेशन पर बिखरा हुआ था लेकिन अब ऐसा कुछ नहीं था. दिल्ली की गाड़ी आने में कुछ समय था.

"कर पाएंगे पोथीवाला जी अपने कुछ साथियों के साथ इतना बड़ा काम." विपुल को छोड़ने आए निलेश ने कहा.

"कोशिश तो वे कर रहे हैं." अविनाश ने उसकी आशंका को दूर करते हुए कहा.

"क्या करें. कोई बड़ा आंदोलन नहीं है जो सांप्रदायिकता जैसे सवालों से टकरा सके. इस तरह छोटे-छोटे कामों के सहारे ही, लोगों के बीच जाकर ही, लोगों को अपने साथ लेकर ही कुछ हो सकता है." विपुल ने कहा.

"हमारे वामपंथी आंदोलन का क्या हश्र हुआ, हम सब जानते हैं. और आज की स्थितियों में कम्युनिस्ट बनकर काम करना मुश्किल है. ह्यूमिनिस्ट बनकर ही कुछ हो तो हो." निलेश ने कहा.

"आदमी आज के परिवेश में और गुजरात की स्थितियों में कहां जाएगा. कोई मूवमैंट नहीं है. वामपंथी पार्टियों की ओर से सांप्रदायिकता जैसे सवालों से लड़ने का कोई जन अभियान नहीं. और है भी तो केवल सेमिनारों, वक्तव्यों, और लेखों में ही है. बहुत हुआ तो प्रैस कांफरेंस के सामने फ़ासीवाद का खंडन करते हुए कोई बयान दे दिया. लेकिन आम लोगों के बीच जाने का कोई अभियान नहीं है. ऐसे में वामपंथ में विश्वास करने वाले लोग जाएं तो कहां जाएं."

"सारी समस्या यही है. आज हमारे कामरेडों की बात का कोई असर नहीं हो रहा है. हम लोगों ने एक झूठा दर्प पाल रखा है. हम अपनी बौद्धिकता से जनता को आतंकित करना चाहते हैं. उनके बीच नहीं जाना चाहते. सारी समस्या यही है. व्यक्ति स्वतंत्रता की बात करने वाले भी इस पूरे प्रकरण में मौन रहे. हालांकि

हस्ताक्षर अभियान चलाकर वे कम से कम इस नरसंहार का विरोध तो कर सकते थे." विपुल ने कहा.

"ऐसे में पोथीवाला के सामने क्या रास्ता बचता है. यही कि अपने साथियों की मदद से वे मुस्लिम समाज के लिए कुछ करें और मुझे लगता है कि जो कुछ वे कर रहे हैं, ठीक कर रहे हैं. चाहते तो अफरोज के साथ अमेरिका जा सकते थे लेकिन नहीं गए. यहां रहकर उन्होंने मुसलमानों के लिए कुछ करना बेहतर समझा." अविनाश ने कहा.

"तुम्हें पता है उनके शमा वाले घर का क्या हुआ?" निलेश ने अविनाश से पूछा.

"वह घर तो जला दिया गया था." अविनाश ने कहा.

"जला तो दिया गया था. पर उसके बाद क्या हुआ?"

"क्या हुआ....?" अविनाश ने हैरानी से पूछा.

"वह घर उन्होंने बेच दिया."

"अरे.... मुझे नहीं पता." अविनाश ने हैरानी व्यक्त करते हुए कहा.

"पर वह घर तो बहुत बड़ा था." विपुल ने कहा.

"किसे बेचा... " अविनाश ने पूछा.

"किसी बिल्डर को बेच दिया."

"अच्छा...." अविनाश ने हैरानी ने व्यक्त की.

"कितने में बेचा?" विपुल ने पूछा.

"ठीक से तो पता नहीं पर तीस पैंतीस लाख के आसपास बेचा है."

"और फिर करते भी क्या. वहां रहना उनके लिए अब असम्भव था. अफरोज अमेरिका जा रही है. साजिद भी चला जाएगा. पत्नी रहीं नहीं. बस केवल वे हैं और उनका मिशन है."

थोड़ी देर में गाड़ी प्लेटफार्म पर आकर खड़ी हो गई थी. विपुल ने अपना सामान गाड़ी में रखा और निलेश और अविनाश को कहा, "एक अर्से बाद तुम लोगों से मुलाकात हुई. मुझे लगता है पोथीवाला अपने मिशन में कुछ हद तक जरूर सफल होंगे."

"हम लोग भी यही चाहते हैं कि वे अपने मिशन में सफल हों." अविनाश ने खुश होकर कहा.

उसके चेहरे पर आशा की किरणें थीं.

गाड़ी दिल्ली की ओर वापस भागी जा रही थी और विपुल के मन में तरह-तरह के ख्याल आ रहे थे. दस दिन वह बड़ौदा में रहा है. इन दस दिनों की अनेक स्मृतियां वह अपने साथ ले जा रहा था. रह-रह कर उसके मन में पोथीवाला और उनके साथ हुए हादसे ही कौंध उठते थे. वह बार-बार यही सोच रहा था कि क्या पोथीवाला अपनी विमर्श के साथियों के साथ सांप्रदायिकता को खत्म करने के अपने मिशन में सफल हो पाएंगे. शोषण के सवालों को बिना हल किए. व्यापक जनता को अपने साथ लिए, लोगों की सोच में बिना बदलाव किए. अपनी विमर्श के कुछ साथियों के सहारे वे कैसे इस बड़े काम को अंजाम दे पाएंगे. पूरा सिस्टम जिम्मेदार है इसके लिए. बिना उस सिस्टम से टकराए कैसे इस काम को कर पाएंगे. कैसे वे मुस्लिम समाज को जागरूक कर पाएंगे. उनकी बदहाली को कैसे दूर करेंगे. केवल मुस्लिम समाज की बदहाली दूर करने से ही बात नहीं बनेगी. इसके लिए पूरे समाज की बदहाली को दूर करना जरूरी है. क्या यह काम बिना किसी जनक्रांति के हो सकता है. क्या शोषण पर आधारित व्यंवस्था को बदले बिना हो सकता है. बिना किसी व्यापक जन आधार के किया जा सकता है. पोथीवाला जो भी करेंगे, छोटे से दायरे में ही सीमित होकर रह जाएंगे. सांप्रदायिक ताकतें यूं ही नहीं पनप गईं, इनकी जड़ें बहुत गहरी हैं. क्या उन जड़ों को उखाड़े बिना सांप्रदायिकता को दूर किया जा सकता है. ऐसे ही ढेर सारे सवाल उसके जेहन में गूंज रहे थे कि किसी ने कहा, गोधरा स्टेशन आने वाला है. गाड़ी की रफ्तार धीमी हो रही थी. पोथीवाला के संघर्ष, उनकी स्थितियों को देखकर उसके मन में पंक्तियां गूंज रही थीं :

नागफनी के इक जंगल में
जैसे हरसिंगार की कोंपल

वे नागफनी के इस भयानक जंगल को कैसे कम कर पाएंगे?

उसने बाहर झांककर देखा. सिग्नल फालिया निकल चुका था. अगले ही मिनट में गाड़ी गोधरा स्टेशन पर खड़ी थी. गोधरा स्टेशन में हमेशा की तरह चहल-पहल थी. लोगों का आना-जाना बदस्तूर जारी थी. दो हफ्ते पहले जो हादसा यहां हुआ, उसकी कोई शिकन नहीं थी. हां, रेलवे स्टेशन पर पुलिस जरूर ज्यादा थी. पुलिस के जवान इधर-उधर चक्कर लगा रहे थे. कुछ ही देर में गाड़ी गोधरा से चल दी. गाड़ी जब प्लेटफार्म से बाहर निकल रही थी तो विपुल ने देखा कि गोधरा स्टेशन पर पुलिस की चौकी खुल चुकी थी. पुलिस की कई सारी जीपें उस चौकी के सामने खड़ी थीं.

□□□

19/9/2014



हरियश राय

जन्म : अप्रैल, 1954

प्रकाशन :

बबुआ की क्रान्ति (व्यंग्य संग्रह)
भारत विभाजन और हिंदी उपन्यास (आलोचना)
बर्फ होती नदी (कहानी संग्रह)
उधर भी सहरा (कहानी संग्रह)
पहाड़ पर धूप (कहानी संग्रह)
नागफनी के जंगल में (उपन्यास)
सूचना तकनीक बाज़ार एवं बैंकिंग

सम्प्रति :

एक वित्तीय संस्थान से सम्बद्ध

सम्पर्क :

73, मनोचा एपार्टमेंट,
एफ ब्लॉक, विकासपुरी
नई दिल्ली – 110 018

Design by View Point Graphics - (01411) 2502522

आधार प्रकाशन प्रा. लि.
एस.सी.एफ. 267, सेक्टर–16
पंचकूला–134 113 (हरियाणा)